ISSN 2278-1633ANTIM JAN

गांधी दर्शन
अंतिम जन

वर्ष-6, अंक: 7, संख्या-45 दिसम्बर 2023 मूल्य: ₹20

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति संग्रहालय

समिति के दो परिसर हैं- गांधी स्मृति और गांधी दर्शन।

गांधी स्मृति, 5, तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली पर स्थित है। इस भवन में उनके जीवन के अंतिम 144 दिनों से जुड़े दुर्लभ चित्र, जानकारियाँ और मल्टीमीडिया संग्रहालय (Museum) है। जिसमें प्रवेश निःशुल्क है।

दूसरा परिसर गांधी दर्शन राजघाट पर स्थित है। यहाँ 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश' प्रदर्शनी, डोम थियेटर और राष्ट्रीय स्वच्छता केंद्र संग्रहालय (Museum) है।

दोनों परिसर के संग्रहालय प्रतिदिन प्रातः 10 से शाम 6:30 तक खुलते हैं।
(सोमवार एवं राजपत्रित अवकाश को छोड़ कर)

ISSN 2278A 1633ANTIM JAN

गांधी दर्शन
अंतिम जन

वर्ष-6, अंक: 7, संख्या-45
दिसम्बर 2023

संरक्षक
विजय गोयल
उपाध्यक्ष, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

प्रधान सम्पादक
डॉ. ज्वाला प्रसाद

सम्पादक
प्रवीण दत्त शर्मा
पंकज चौबे

परामर्श
वेदाभ्यास कुंडू

प्रबन्ध सहयोग
शुभांगी गिरधर

आवरण
गांधी स्मृति

रेखांकन
संजीव शाश्वती,
मूल्य : ₹ 20
वार्षिक सदस्यता : ₹ 200
दो साल : ₹ 400
पांच साल : ₹ 500

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति
गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23392796
ई-मेल : antimjangsds@gmail.com
2010gsds@gmail.com
गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट,
नई दिल्ली-110002, की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेखकों द्वारा उनकी रचनाओं में प्रस्तुत विचार एवं दृष्टिकोण उनके अपने हैं, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, राजघाट, नई दिल्ली के नहीं।
समस्त मामले दिल्ली न्यायालय में ही विचाराधीन।

मुद्रक
पोहोजा प्रिंट सोल्यूशंस प्रा. लि., दिल्ली - 110092

इस अंक में

उपाध्यक्ष की कलम से... 2
सम्पादकीय 3
आपके खत 4
धरोहर
मदन मोहन मालवीय *-मोहनदास करमचंद गांधी* 5
भाषण
विकासशील भारत संकल्प यात्रा *-श्री नरेंद्र मोदी* 9
व्याख्यान
सरदार पटेल की राष्ट्रनिष्ठा सदा प्रेरणा स्रोत रहेगी
- श्री रामनाथ कोविंद 15
विशेष
गांधी की संवादशैली - *राधावल्लभ त्रिपाठी* 19
विमर्श
नार्गाजुन के काव्य में गांधी - *प्रोफेसर सुरेश चन्द्र* 27
गांधी का चिंतन ही लोकतंत्र का सही पथ - *गिरीश पंकज* 31
संघर्ष की नई इबारत - *अखिलेश आर्येन्दु* 34
स्मरण
ठक्कर बापा: गुमनामी और लोकप्रियता के मध्य
- विवेक कुमार राय 36
बातचीत
निशिकांत कोलगे से मनोज मोहन की बातचीत 40
कविता
जयशंकर प्रसाद की कविताएं 44
फिराक गोरखपुरी 47
डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा 'गुणशेखर' 48
फोटो में गांधी 49
चित्रकारी 50
बचपन
मैं हूँ आज का गांधी 51
रघु की विश 56
एहसास जिम्मेदारी का 57
भूमि बैंक 59
गतिविधियाँ 61

नई उचाइयों पर पहुंचा भारत

देखते ही देखते हम साल के अंतिम पायदान पर आ गए। वर्ष 2023 हमें अनेक सुनहरी यादें दे गया। इस वर्ष देश ने अनेक ऊचाईयों को छुआ। खासकर विश्व पटल पर भारत ने अपनी पहचान एक मजबूत देश के तौर पर बनाई। आज पूरा विश्व भारत को ग्लोबल लीडर के तौर पर देख रहा है, यह हमारे लिए गर्व की बात है।

प्रतिष्ठित जी 20 देशों की सफल बैठक का आयोजन कर हमने पूरी दुनिया में अपनी धाक जमाई। माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में अमेरिका सहित विश्व के प्रमुख देशों के राष्ट्राध्यक्षों को हमने अपनी सांस्कृतिकि वरासतअ ौरग ौरवमयीप रंपराओंस`अ वगतक रवाया।इ नअ ंतरराष्ट्रीयन`ताओंन`भ ारतक ी ताकत को देखा और हमारे विकास को सराहा।

दरअसल प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में अनेक नवाचारों के जरिए भारत ने अपनी अलग पहचान बनाई है। नए प्रयोग के माध्यम से दुनिया भर में भारत अब विश्वशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। महात्मा गांधी का भी पूरा जीवन प्रयोगशाला की तरह रहा। नित नए प्रयोग करके उन्होंने बंधी-बंधाई लकीरों को खत्म करके देश को नई दिशा दी। उनके सत्याग्रह के प्रयोग, आहार के प्रयोग, जीवन जीने के प्रयोग, अहिंसा और सत्य के प्रयोग ने देश ही नहीं दुनिया को एक अलग राह दिखाई।

महात्मा गांधी की राह पर चलते हुए प्रधानमंत्री भी नए-नए प्रयोगों के जरिए भारत को आगे बढ़ा रहे हैं। गांधीजी की प्रेरणा से ही गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति भी नए-नए कार्यक्रमों को कर रही है। वर्ष 2023 में हमने लीक से हटकर अनेक कार्यक्रम किए। हमने जी 20 की अध्यक्षता भारत को मिलने पर जी 20 रन, जी 20 मार्च जैसे कार्यक्रमों के जरिए इस अध्यक्षता का जश्न मनाया। झुग्गी-झोपड़ियों के बच्चों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए स्लम दौड़ और स्लम के बच्चों को गांधी दर्शन दौरे के कार्यक्रम हमने किए।

गांधीजी ने अपनी अंतिम जन की अवधारणा के जरिए समाज के वंचित वर्ग के विकास की कामना की थी, जिसे प्रधानमंत्रीजी ने भी बखूबी बढ़ाया। गांधी दर्शन ने भी दलित भाइयों का सम्मान समारोह आयोजित कर, गांधीजी के सपने को साकार किया। इसके अलावा गांधी वाटिका का निर्माण, गांधी दर्शन में गांधीजी की मूर्ति के अनावरण जैसे अनेक नए काम हमने किए।

आने वाले वर्षों में भी हम नए प्रयोगों और कार्यक्रमों का सिलसिला जारी रखेंगे। 'अंतिम जन' का नया अंक आपके समक्ष है, आप इसमें संकलित सामग्री का अवलोकन करें। साथ ही अपनी प्रतिक्रियाओं से भी अवगत करवाएं।

विजय गोयल

गांधी और आत्मनिर्भर भारत

महात्मा गांधी एक दूरदृष्टी व्यक्ति थे। उनका लक्ष्य भारत को आजादी दिलाना तो था ही, लेकिन वे सोचते थे कि आजाद भारत खुशहाल कैसे होगा? गरीब भारतीय कैसे अपना जीवन-यापन करेंगे। गुलामी की जंजीरों से मुक्ति के बाद भी यदि भारत विकास के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहा तो यह आजादी अधूरी होगी। इसलिए उन्होंने भारत को आत्मनिर्भरता का मंत्र दिया। 1909 में गांधीजी लंदन से दक्षिण अफ्रीका लौट रहे थे। अपने लंदन प्रवास में स्वराज्य प्रेमी कई युवकों से उनकी जो बातचीत हुई, उसी को लेकर उन्होंने एक किताब लिखी-हिंद स्वराज। छोटी सी इस किताब में गांधीजी ने स्वराज्य को लेकर बड़ी-बड़ी बातें लिखी हैं। इस किताब में वे बेबाकी से पश्चिम की सभ्यता को नकारने, मशीनों पर निर्भरता कम करने, सच्चा स्वराज प्राप्त करने संबंधी बातें करते हैं। तमाम विरोधों के बावजूद यह पुस्तक अनेक लोगों की प्रेरणा का स्रोत बनी। गांधीजी कृषि, कुटीर धंधो अपनाने, श्रमिको बढावा देने का आहवान करते रहे, ताकि गांव-शहर आत्मनिर्भर बनें।

वास्तव में आत्मनिर्भरता समाज और देश के विकास के लिए अति आवश्यक है। यह संतोषजनक है कि आज सरकारी प्रयासों से आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा फिर से चर्चा में है। मेक इन इंडिया जैसे अभियानों के तहत आत्मनिर्भर भारत की गांधीवादी कल्पना को साकार किया जा रहा है।

अंतिम जन का दिसंबर अंक आपके हाथों में है। इस अंक में सभी स्थायी स्तंभों के अतिरिक्त महत्वपूर्ण और विचारोत्तेजक आलेख शामिल हैं। महामना मदनमोहन मालवीय के बारे में गांधीजी के विचार भी इस अंक में शामिल किए गए हैं, जो विशेष पठनीय हैं। गांधी पंडित जी का बहुत सम्मान करते थे। वे लिखते हैं, ''पंडित मदन मोहन मालवीय का नाम तो जनता पर जादू कर देता है। देश की सेवा में जितना आत्म-त्याग तथा परिश्रम पंडितजी ने किया है वह सब जानते हैं। उनका आंतरिक जीवन विशुद्ध था। वह दया के भंडार थे- उनका शास्त्रीय ज्ञान बड़ा था। भागवत उनकी प्रिय पुस्तक थी। वह सजग कथाकार थे। उनका जीवन शुद्ध था, सादा था।'' साथ ही इस अंक में प्रतिष्ठित सरदार पटेल व्याख्यान का अंश प्रस्तुत है। यह व्याख्यान पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी ने वल्लभ भाई की जयंती पर दिया गया था। मातृ भूमि के प्रति सरदार पटेल का प्रेम, उनका नेतृत्व, सादगी, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, व्यवहारिक स्वभाव, जटिल समस्याओं का हल निकालने की कला, व्यवहारिक दृष्टिकोण, सांसारिक ज्ञान, अनुशासन और संगठन कौशल हमेशा हर भारतीय के लिए प्रेरणा बने रहेंगे।

आशा है यह अंक आपको पसंद आएगा। पत्रिका के बारे में आपके सुझाव आमंत्रित हैं।

डॉ. ज्वाला प्रसाद
निदेशक

आपके ख़त

समाज की चिंता

'अंतिम जन' का अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में दी गयी सामग्री पठनीय है। राधावल्लभ त्रिपाठी जी का आलेख अत्यंत ज्ञानवर्धक है। वे लिखते हैं, बुद्ध और उनके धम्म में विद्रोह के लिए स्थान नहीं है। विद्रोह शब्द द्रोह में वि उपसर्ग लगा कर बना है। बुद्ध कलह, विवाद का विरोध करते हैं। क्योंकि उनमें व्यक्तिगत मात्सर्स, द्वेष और छल किसी भी वादी को दुरिवनियोजन के लिय प्रेरित करते हैं। अंतिम जन के सभी आलेखों में नई-नई जानकारी दी गयी है। बच्चों की कहानी और कविताओं के लिए नियमित स्थान देने से पत्रिका और रोचक बन गयी है।

गांधी हमेशा अंतिम आदमी की बात करते थे। और अंतिम० यक्तिक ेि लएल ड़तेर हे।स वतंत्रद ेशम ेंअ ंतिम आदमी के लिए सम्मान हो, उनके लिए प्रेम हो, रोजगार हो, बच्चों को शिक्षा मिले इस बात की चिंता वे हमेशा करते थे। गांधी का जीवन हम सबके लिए प्रेरणादायक है। वे दुनिया के सर्वमान्य नेता हैं। जिनकी शिक्षा को दुनिया स्वीकारती है। गांधी अहिंसा के पैगम्बर हैं। अहिंसा द्वारा विश्व को नयी सीख दी। आज चारो तरफ हिंसा का माहौल है। हिंसा के बीच अहिंसा को सवौपरि मानना आज हमारी सबसे बड़ी जरूरत है। गांधी सर्व स्वीकार्य है और व्यापक है। 'अंतिम जन' के सभी अंक बेहतर होते हैं। इसमें दी गयी सामग्री सहेजने लायक होती हैं। गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति को बहुत-बहुत साधुवाद।

आदर्श कुमार
पांडव नगर, दिल्ली

बहार आएगी...

दिन गुजर रही है
मुसाफिर गुजर रहे हैं
कुछ अजीज गुजर जाते हैं...

सपने जल रही है
इच्छा और ख्वाहिशें मर रही है...

फिर भी...,
फूलों को
खिलता हुआ देखता हूँ
और सोचता हूँ...

पत्ते झड़ने के बाद ही तो
बसंत आती है...

झर जाना...
टूट जाना...
जल जाना...
स्वाभाविक है...

जिंदगी में भी
बसंत आने के लिए
कुछ को टूटना ही पड़ेगा
किसी को छूटना ही पड़ेगा...

तभी तो...,
जिंदगी में बहार आएगी!

संपर्कः मनोज शाह मानस
डब्ल्यू. जेड. 548 बी. नारायणा गांव
नई दिल्ली 110028 मो. 7982510985

मदनमोहन मालवीय

मोहनदास करमचंद गांधी

पंडित मदनमोहन मालवीय का नाम तो जनता पर जादू कर देता है। देश-सेवा में जितना आत्म-त्याग तथा परिश्रम पंडितजी ने किया है वह सब जानते हैं। (1920 की विशेष कांग्रेस के एक भाषण का अंश, 15.9.20)

मुझे बनारस की घटना का स्मरण आ गया है। पंडित मदनमोहन मालवीय पर जो कटाक्ष किया जा रहा है उससे जनता की अवस्था का पता चलता है। यदि इस देश में किसी का स्वप्न में भी अनादर नहीं होना चाहिए तो वह पंडितजी हैं। पंजाब की जो सेवाएँ उन्होंने की हैं वे अभी ताजी हैं। यह केवल उन्हीं के परिश्रम का फल है कि काशी विश्वविद्यालय की स्थापनाह ुईह ै।उ नकीद ेश-भक्तिभ ीि कसीस ेक मन हींह ै।व हइ तने सज्जन हैं कि उनसे भूल हो ही नहीं सकती। यदि उनकी समझ में हम लोगों की बातें नहीं आ रही हैं और वह अपने आदर्श को छोड़कर हम लोगों के दल में शामिल नहीं हो रहे हैं तो हम देश का दुर्भाग्य कहेंगे, इसमें उनका कोई दोष नहीं है। उनका जिस तरह, अपमान किया जा रहा है उसे पढ़कर हार्दिक दुख होता है। यदि संस्कृत के विद्यार्थी अथवा संन्यासी छात्रों ने धरना देकर मार्ग में बाधा डालना उचित समझा था तो पंडितजी का भी यह कर्तव्य था कि वह उस मामले में हस्तक्षेप करते और सहयोगी विद्यार्थियों के लिए मार्ग दिलवाते। यदि पुलिस ने प्रधान कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार कर लिया तो उसने कोई बुराई नहीं की। उसकी कार्रवाई सर्वथा उचित थी। (यं. ई., 16.3.21)

यह असहयोग-संग्राम अपने ढंग का निराला ही है। कितने ही परिवारों में इसके बदौलत मतभेद और कृति-भेद उत्पन्न हो गया है। यह इसका सबसे अद्‌भुत प्रभाव है। और उसमें भी मालवीय-परिवार में इसने जो द्विविधा-भाव उत्पन्न कर दिया है वह तो विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मेरी राय में तो यह भारतवासियों के लिए सहिष्णुता और सविनय कानून-भंग का खासा वस्तु-पाठ ही है। श्री मालवीयजी की सहिष्णुता तो वास्तव में अनुपम है। मैं इस बात को जानता हूँ कि वह जेल को निमंत्रण देने के खिलाफ है। मैं यह भी जानता हूँ कि यदि वह उसके कायल होते तो वह ऐसे आदमी नहीं हैं जो उससे दुम-दबाते । और जब उनके दुख की मात्र हद दर्जे तक पहुँच जाएगी और जबकि मेरी तरह उनका भी विश्वास ब्रिटिश न्याय से पूरा-पूरा उठ जाएगा तब यदि वह जेल को निमंत्रण देने में सबसे

यह असहयोग-संग्राम अपने ढंग का निराला ही है। कितने ही परिवारों में इसके बदौलत मतभेद और कृति-भेद उत्पन्न हो गया है। यह इसका सबसे अद्‌भुत प्रभाव है। और उसमें भी मालवीय-परिवार में इसने जो द्विविधा-भाव उत्पन्न कर दियाह ैव हत ोि वशेषरू पस ेउल्लेखनीय है। मेरी राय में तो यह भारतवासियों के लिए सहिष्णुता और सविनय कानून-भंग का खासा वस्तु-पाठ ही है।

आगे बढ़ जाएँ तो मुझे तनिक भी आश्चर्य न होगा। परंतु यद्यपि वह आज स्वयं सविनय कानून-भंग के विरुद्ध है तथापि उन्होंने कभी उन लोगों के भी संकल्पों में हस्तक्षेप नहीं किया जो उनके आत्मीय हैं और जिन पर अपने प्रेम अथवा बड़े-बूढ़े होने के कारण उनकी अदम्य सत्ता है। बल्कि इसके विपरीत उन्होंने अपने पुत्रों को अपनी- अपनी इच्छा के अनुसार बरतने की पूरी आजादी दे दी है। गोविंद के सविनय कानून भंग का उदाहरण मेरी दृष्टि में एक संग्रहणीय रत्न के सदृश है। पंडितजी ने अपने मृदुल-मधुर ढंग से अपने उस वीर पुत्र को इस मार्ग से हटाने का बहुत-कुछ प्रयत्न किया। गोविंद ने भी अंत तक अपने पूज्य पिता की इच्छा के अनुसार चलने का भरसक प्रयत्न किया। उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि मुझे मार्ग बता। वह परस्पर विरुद्ध कर्तव्यों की कैंची में फँस गया। नेहरू-परिवार की गिरफ्तारी का गोविंद पर बड़ा असर पड़ा और अपने विशाल हृदय पिताजी का आशीष प्राप्त करके उसने इस रणक्षेत्र में कूद पड़ने का निश्चय किया। जेलों ने भी गोविंद से बढ़कर हर्षपूर्ण हृदय शायद किसी का न देखा होगा। यह साहस के साथ कहा जा सकता है कि अपनी इस सविनय कानून-भंग की कृति के द्वारा गोविंद ने अपने देश की तरह अपने पूज्य पिताजी के प्रति भी अपनी कर्तव्य-परायणता सिद्ध की है। बालकों के कर्तव्य-परायण सविनय कानून-भंग में गोविंद की यह कृति हमारे समय के लिए एक नमूना है। मुझे यकीन है कि इससे पिता-पुत्र के बीच किसी तरह की अनबन नहीं है। बल्कि शायद मालवीयजी, गोविंद के जेल को स्वीकार करने के पहले की अपेक्षा, अब उसके विषय में अधिक अभिमान रखते होंगे। ऐसे ही सत्ययुक्त कार्यों के द्वारा मुझे इस युद्ध की धार्मिक प्रकृति का प्रमाण मिलता है। (हि.न., 15.1.22)

मुझे पंडित मालवीय के बारे में चेतावनी दी गई है। उन पर यह इल्जाम है कि उनकी बातें बड़ी गहरी छुपी हुई होती हैं। कहा जाता है कि वह मुसलमानों के शुभचिंतक नहीं हैं, यहाँ तक कि वह मेरे पद से ईर्ष्या करनेवाले बताए जाते हैं। जब से 1915 में हिंदुस्तान आया तब से मेरा उनके साथ बहुत समागम है और मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ। मेरा उनके साथ गहरा परिचय रहता है। उन्हें मैं हिंदू संसार के श्रेष्ठ व्यक्तियों में मानता हूँ। कटर और पुराने खयालात के होते हुए भी बड़े उदार विचार रखते हैं। वह मुसलमानों के दुश्मन नहीं हैं। उनका किसी से ईर्ष्या रखना असंभव है। उनकी उदारता ऐसी है कि उसमें उनके दुश्मनों के लिए भी जगह है। उन्हें कभी शासन की चाह न रही और जो शासन आज उनके पास है वह उनकी मातृभूमि की आज तक की लंबी और अखंड सेवा का फल है। ऐसी सेवा का दावा हम में से बहुत कम लोग कर सकते हैं। उनकी और मेरी विशेषता अलग-अलग है, लेकिन हम दोनों एक दूसरे को सगे भाई-सा प्यार करते है। मेरे और उनके बीच कभी जरा बिगाड़ न हुआ। हमारे रास्ते जुदे-जुदे हैं। इसलिए हमारे बीच स्पर्धा और डाह का सवाल पैदा ही नहीं हो सकता। (हि.न., 1.6.24)

एक पाठक पूछते है-

''आपने कराँची में विषय-समिति को दक्षिण भारत के सदस्यों को कार्य-समिति में न रखने का कारण तो समझाया, पर यह नहीं बताया कि मालवीयजी को क्यों अलग रखा।''

बात इतनी स्पष्ट थी कि किसी ने कुछ पूछा ही नहीं। मालवीयजी का अपमान करने का तो इसमें कोई सवाल हो नहीं सकता। वह अपमान से परे हैं। कोई भी संस्था उन्हें अपना सदस्य बनाकर उनकी स्थिति या उनके महत्व को बढ़ा नहीं सकती। हाँ, उनकी सदस्यता से संस्था की प्रतिष्ठा बढ़ सकती है। कार्य-समिति ने जानबूझकर उन्हें अलग रखा, जिससे समय पड़ने पर उनकी स्वतंत्रता और काम करने की आजादी कायम या सुरक्षित रहे। सदस्य न होते हुए भी, जब से नेता लोग छूटे हैं, वह बराबर कार्य समिति की बैठकों में उपस्थित रहे हैं। चूँकि कार्य- समिति में उनका काम मूल्यवान रहा है, सदस्यों ने यह सोचा कि उन्हें समिति ने अनुशासन में ले लेना कहीं उनके लिए कष्टप्रदन ि सद्धह ोाड ॉक्टरअ ंसारीत ोम ालवीयजीक ो समिति में रखने के लिए इतने उत्सुक थे कि उनके लिए स्वयं हट जाना उन्हें पसंद था। पर जिस विचार का मैं ऊपर जिक्र कर आया हूँ, जमनालालजी ने उसे ऐसे प्रभावशाली ढंग से समिति के सामने रखा था कि डक्कक्टर अंसारी को भी इस बात के लिए राजी होना पड़ा कि मालवीयजी अलग रखे जाएँ। इस व्यवस्था से समिति अपनी बैठकों में मालवीयजीक ोस लाहस ेल ाभभ ाेउ ठास कतीह ैअ ौर

साथ ही उनकी कार्य-स्वतंत्रता में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ती। गोलमेज- परिषद् में उन्हें अलग से निमंत्रित

उनकी पवित्रता और उनके प्रेम से मैं भलीभाँति परिचित हूँ। उनके इस गुणों में से आप जितना कुछ ले सकें, जरूर लें। विद्यार्थियों के लिए तो उनके जीवन की बहुतेरी बातें सीखने लायक हैं। मगर मुझे डर है कि उन्होंने जितना सीखना चाहिए, सीखा नहीं है। यह आपका और हमारा दुर्भाग्य है। इसमें उनका कोई कसूर नहीं। धूप में रहकर भी सूरज का तेज न पा सके तो उसमें सूरज बेचारे का क्या दोष ? वह तो अपनी तरफ से सबको गर्मी पहुँचाता रहता है; पर अगर कोई उसे लेना ही न चाहे और ठंड में रहकर ठिठुरता फिर तो सूरज भी उसके लिए क्या करे ? मालवीयजी महाराज के इतने निकट रहकर भी अगर आप उनके जीवन से सादगी, त्याग, देशभक्ति, उदारता और विश्वव्यापी प्रेम आदि सद्गुणों का अपने जीवन में अनुकरण न कर सके तो कहिए, आपसे बढ़कर अभागा और कौन होगा ? (ह.से., 21.1.42)

अंग्रेजी में एक कहावत है- ''राजा गया, राजा हमेशा जियो !'' ठीक यही भारत-भूषण मालवीयजी महाराज के लिए कहा जा सकता है- '' मालवीय जी गए, मालवीय जी अमर हों।'' मालवीय जी हिंदुस्तान के लिए पैदा हुए और हिंदुस्तान के लिए किए गए अपने कामों में जीते हैं। उनके काम बहुत हैं। बहुत बड़े हैं। उनमें सबसे बड़ा हिंदू विश्वविद्यालय है। गलती से उसे हम बनारस हिंदू युनिवर्सिटी के नाम से पहचानते हैं। उस नाम के लिए दोष मालवीयजी महाराज का नहीं, उनके पैरोकारों का रहा है। मालवीयजी महाराज दासानुदास थे। दास लोग जैसा करते थे, वैसा वह करने देते थे। मुझे पता है कि यह अनुकूलता उनके स्वभाव में भरी थी। यहाँ तक कि बाज दा वह दोष का रूप ले लेती थीं, लेकिन 'समरथ को नहि दोष गुसाईं' वाली बात मालवीयजी के बारे में भी कही जा सकती है।

उनका प्रिय नाम तो 'हिंदू विश्वविद्यालय' ही था। और यह सुधार तो अब भी करने योग्य है। इस विद्यालय का हरेक

विकासशील भारत संकल्प यात्रा

श्री नरेंद्र मोदी

इस कार्यक्रम में जुड़े अलग-अलग राज्यों के माननीय राज्यपाल श्री, सभी मुख्यमंत्रीगण, केंद्र और राज्य सरकारों के मंत्रीगण, सांसद और विधायकगण, और गांव-गांव से जुड़े हुए सभी मेरे प्यारे भाइयो-बहनो, माताओ, मेरे किसान भाई-बहनो, और सबसे ज्यादा मेरे नौजवान साथियो-

आज देश के गाँव-गाँव में, मैं देख रहा हूँ कि गाँव-गाँव से इतनी बड़ी संख्या में लाखों देशवासी, और मेरे लिए तो पूरा हिन्दुस्तान मेरा परिवार है, तो आप सब मेरे परिवारजन हैं। आप सब मेरे परिवारजनों के दर्शन करने का मुझे अवसर मिला है। दूर से सही, लेकिन आपके दर्शन से मुझे शक्ति मिलती है। आपने समय निकाला, आप आए। मैं आप सभी का अभिनंदन करता हूँ।

आज विकसित भारत संकल्प यात्रा के 15 दिन पूरे हो रहे हैं। शुरू की तैयारी में शायद कैसे करना है, क्या करना है, उसमें कुछ उलझनें रही लेकिन पिछले दो-तीन दिन से जो खबरें मेरे पास आ रही हैं और मैं स्क्रीन पर देख रहा हूँ, हजारों लोग एक-एक करके यात्रा के साथ जुड़ते हुए दिखते हैं। यानी इन 15 दिनों में ही, लोग यात्रा में चल रहे विकास रथ को और जैसे-जैसे आगे बढ़ता गया, मुझे कई लोगों ने कहा कि अब तो लोगों ने इसका नाम ही बदल दिया है। सरकार ने जब निकाला तब तो यह कहा था कि विकास रथ है; लेकिन अब लोग कहने लगे हैं रथ-वथ नहीं है ये तो मोदीक ाग ारंटीव ालीग ाड़ीह ै।म ुझेब हुतअ च्छाल गाय हस ुनक रके, आपका इतना भरोसा है, आपने इसको मोदी की गारंटी वाली गाड़ी बना दिया है। तो मैं भी आपको कहता हूँ जिसको आपने मोदी की गारंटी वाली गाड़ी कहा है वो काम मोदी हमेशा पूरा करके रहता है।

और थोड़ी देर पहले मुझे कई लाभार्थियों से बातचीत करने का मौका मिला। मैं खुश था कि मेरे देश की माताएं-बहनें, नौजवान कितने उत्साह और उमंग से भरे हुए हैं, कितना आत्मविश्वास से भरे हुए हैं, कितना संकल्प है उनके अंदर। और अब तक 12 हजार से ज्यादा पंचायतों तक ये मोदी की गारंटी वाली गाड़ी पहुँची चुकी है। करीब-करीब 30 लाख लोग उसका फायदा उठा चुके हैं, उसके साथ जुड़े हैं, बातचीत की है, सवाल पूछे हैं, अपने नाम लिखवाए हैं, जिन चीजों की उनको जरूरत है उसका फॉर्म भर दिया है। और सबसे बड़ी बात कि माताएं-बहनें बड़ी संख्या में मोदी की गारंटी वाली गाड़ी तक पहुंच रही हैं। और जैसा अभी बलबीर जी

और हर जगह विकसित भारत संकल्प यात्रा में शामिल होने के लिए, शामिल तो होते नहीं, उसका स्वागत करते हैं, शानदार तैयारियां करते हैं, गाँव-गाँव सूचनाएँ देते हैं, और लोग उमड़ रहे हैं। देशवासी इसे एक जनांदोलन का रूप देकर इस पूरे अभियान को आगे बढ़ा रहे हैं। जिस तरह से लोग विकसित भारतर थोंक ास् वागतक रर हे हैं, जिस तरह से रथ के साथ चल रहे हैं।

बता रहे थे कुछ जगह पर खेती का काम चल रहा है। उसके बावजूद भी खेत से छोड़-छोड़ करके लोग हर कार्यक्रम में जुड़ना, ये अपने-आप में विकास के प्रति लोगों का कितना विश्वास है, विकास का महात्मय क्या है, ये आज देश का गाँव-गाँव का व्यक्ति समझने लगा है।

और हर जगह विकसित भारत संकल्प यात्रा में शामिल होने के लिए, शामिल तो होते नहीं, उसका स्वागत करते हैं, शानदार तैयारियां करते हैं, गाँव-गाँव सूचनाएँ देते हैं, और लोग उमड़ रहे हैं। देशवासी इसे एक जनांदोलन का रूप देकर इस पूरे अभियान को आगे बढ़ा रहे हैं। जिस तरह से लोग विकसित भारत रथों का स्वागत कर रहे हैं, जिस तरह से रथ के साथ चल रहे हैं। जो हमारे सरकार के काम करने वाले मेरे कर्मयोगी साथी हैं, कर्मचारी भाई-बहन हैं, उनका भी भगवान की तरह लोग स्वागत कर रहे हैं। जिस तरह युवा और समाज के हर वर्ग के लोग विकसित भारत यात्रा से जुड़ रहे हैं, जहाँ-जहाँ के वीडियो मैंने देखे हैं, वो इतने प्रभावित करने वाले हैं, इतने प्रेरित करने वाले हैं। और मैंद ेखर हाह ूंस बल ोगअ पनेग ँवक ोक हानीस ोशल मीडिया पर अपलोड कर रहे हैं। और मैं चाहूँगा कि नमो एप पर आप जरूर अपलोड करिए क्योंकि मैं नमो एप पर ये सारी गतिविधि को डेली देखता हूँ। जब भी यात्रा में होता हूं तो लगातार उसको देखता रहता हूँ किस गाँव में, किस राज्य में, कहां-कैसा हुआ, कैसे कर रहे हैं और युवा तो विकसित भारत के एक प्रकार से एंबेसेडर बन चुके हैं। उनका जबरदस्त उत्साह है।

युवा लगातार, इस पर वीडियो अपलोड कर रहे हैं, अपने काम का प्रसार कर रहे हैं। और मैंने तो देखा कुछ गांवों ने ये मोदी की गारंटी वाली गाड़ी आने वाली थी तो दो-दिनत कग ांवम ेंस फाईक ाब ड़ाअ भियानच लाया। क्योंकि, कि ये तो भई गारंटी वाली मोदी की गाड़ी आ रही है। ये जो उत्साह, ये जो कमिटमेंट है, ये बहुत बड़ी प्रेरणा है।

और मैंने देखा गाजे-बाजे बजाने वाले, वेशभूषा नई पहनने वाले, ये भी घर में जैसे दिवाली है गाँव में, इसी रूप में लोग काम कर रहे हैं। आज जो कोई भी विकसित भारत संकल्प यात्रा को देख रहा है, वो कह रहा है, कि अब भारत रुकने वाला नहीं है, अब भारत चल पड़ा है। अब लक्ष्य को पार करके ही आगे बढ़ने वाला है। भारत ना अब रुकने वाला है और ना ही भारत कभी थकने वाला है। अब तो विकसित भारत बनाना 140 करोड़ देशवासियों ने ठान लिया है। और जब देशवासियों ने संकल्प कर लिया है तो फिर ये देश विकसित होकर रहने ही वाला है। मैंने अभी देखा देशवासियों ने दिवाली के समय वोकल फॉर लोकल; स्थानीय चीजें खरीदने का अभियान चलाया। लाखों करोड़ रुपये की खरीदारी हुई देखिए। कितना बड़ा काम हुआ है।

मेरे परिवारजनों,

देश के कोने-कोने में विकसित भारत संकल्प यात्रा को लेकर इतना उत्साह अनायास नहीं है। इसका कारण है कि पिछले दस साल उन्होंने मोदी को देखा है, मोदी के कामक ेद ेखाह ै,अ ैरइ सकाक ारणभ ारतस रकारप र अपार विश्वास है। भारत सरकार के प्रयासों पर विश्वास है। देश के लोगों ने वो दौर भी देखा है जब पहले की सरकारें खुद को जनता का माई-बाप समझती थीं। और इस वजह से आजादी के अनेक दशकों बाद तक, देश की बहुत बड़ी आबादी, मूल सुविधाओं से वंचित रही। जब तक कोई बिचौलिया नहीं मिलता है दफ्तर तक नहीं पहुँच पाते, जब तक बिचौलिए जी की जेब नहीं भरते तब तक एक कागज भी नहीं मिलता है। ना घर मिले, ना शौचालय मिले, ना बिजली का कनेक्शन मिले, ना गैस का कनेक्शन मिले, ना बीमा उतरे, ना पेंशन मिले, ना बैंक का खाता खुले, ये हाल था देश का। आज आपको जान करके पीड़ा होगी, भारत की आधे से अधिक आबादी, सरकारों से निराश हो चुकी थी, बैंक में खाता तक नहीं खुलता था। उसकी तो उम्मीदें ही खत्म हो गई थीं। जो लोग हिम्मत जुटाकर, कुछ सिफारिश लगाकर स्थानीय सरकारी कार्यालयों तक पहुँच जाते थे, और थोड़ी-बहुत आरती-प्रसाद भी कर लेते थे, तब जा करके वो रिश्वत देने के बाद कुछ काम उनका हो पाता था। उन्हें छोटी-छोटी चीजों के लिए बड़ी रिश्वत देनी होती थी।

और सरकारें भी हर काम में अपनी राजनीति देखती थीं। चुनाव नजर आता था, वोट बैंक नजर आता था। और वोट बैंक के ही खेल खेलते थे। गाँव में जाएंगे तो उस गाँव में जाएँगे जहाँ से वोट मिलने वाले हैं। किसी मोहल्ले में जाएंगे तो उसी मोहल्ले में जाएँगे जो मोहल्ला वोट देता है,

दूसरे मोहल्ले को छोड़ देंगे। ये ऐसा भेदभाव, ऐसा अन्याय, ये जैसे स्वभाव बन गया था। जिस क्षेत्र में उनको वोट मिलते दिखते थे, उन्हीं पर थोड़ा बहुत ध्यान दिया जाता था। और इसलिए देशवासियों को ऐसी माई-बाप सरकारों की घोषणाओं पर भरोसा कम ही होता था।

निराशा की इस स्थिति को हमारी सरकार ने बदला है। आज देश में जो सरकार है, वो जनता को जनार्दन मानने वाली, ईश्वर का रूप मानने वाली सरकार है, और हम सत्ता भाव से नहीं, सेवा भावना से काम करने वाले हैं लोग। और आज भी आपके साथ इसी सेवा भाव से गाँव-गाँव जाने की मैंने ठान ली है। आज देश कुशासन की पहले वाली पराकाष्ठा को भी पीछे छोड़कर सुशासन, और सुशासन का मतलब है शत-प्रतिशत लाभ मिलना चाहिए, सैचुरेशन होना चाहिए। कोई भी पीछे छूटना नहीं चाहिए, जो भी हकदार है उसको मिलना चाहिए।

सरकार नागरिक की जरूरतों की पहचान करे और उन्हें उसका हक दे। और यही तो स्वाभाविक न्याय है, और सच्चा सामाजिक न्याय भी यही है। हमारी सरकार की इसी अप्रोच की वजह से करोड़ों देशवासियों में जो पहले उपेक्षा की भावना भरी पड़ी थी, अपने आप को नेगलेक्टेड मानते थे, कौन पूछेगा, कौन सुनेगा, कौन मिलेगा, ऐसी जो मानसिकता थी, वो भावना समाप्त हुई है। इतना ही नहीं, अब उसको लगता है इस देश पर मेरा भी हक है, मैं भी इसके लिए हकदार हूँ। और मेरे हक का कुछ छिनना नहीं चाहिए, मेरे हक का रुकना नहीं चाहिए, मेरे हक का मिलना चाहिए और वो जहाँ है वहाँ से आगे बढ़ना चाहता है। अभी जैसे में पूर्णा से बात कर रहा था, वो कहता था मैं अपने बेटे को इंजीनियर बनाना चाहता हूँ। ये जो आकांक्षा है ना, वही मेरे देश को विकसित बनाने वाली है। लेकिन आकांक्षा तब सफल होती है जब दस साल में सफलता की बातें सुनते हैं।

और ये जो मोदी की गारंटी वाली गाड़ी आपके यहाँ आई है ना, वो आपको वो ही बताती है कि देखो यहाँ तक हम किए हैं। इतना बड़ा देश है, अभी तो दो-चार लोग गाँव में रह गए होंगे। और मोदी ढूंढने आया है कि कौन रह गया है। ताकि आने वाले पाँच साल में वो भी काम पूरा कर दूँ। इसलिए आज देश में कहीं भी जाने पर एक बात जरूर सुनाई देती है और मैं मानता हूँ कि देशवासियों के दिल की आवाज है, वो दिल से कह रहे हैं, अनुभव के आधार पर कह रहे हैं कि जहाँ पर दूसरों से उम्मीद खत्म हो जाती है, वहीं से मोदी की गारंटी शुरू हो जाती है! और इसलिए ही मोदी की गारंटी वाली गाड़ी की भी धूम मची हुई है।

साथियो,

विकसित भारत का संकल्प सिर्फ मोदी का, या सिर्फ किसी सरकार का नहीं है। ये सबका साथ लेकर, सबके सपनों को साकार करने का संकल्प है। ये आपके संकल्प भी पूरे करना चाहता है। ये आपकी इच्छाएं पूरी हो, ऐसा वातावरण बनाना चाहता है। विकसित भारत संकल्प यात्रा, उन लोगों तक सरकार की योजनाएं और सुविधाएं लेकर जा रही है, जो अब तक इनसे बेचारे छूटे हुए हैं, उनको जानकारियाँ भी नहीं है। जानकारी है तो कैसे पाना है। उनको रास्ता मालूम नहीं है। आज जगह-जगह से नमो ऐप पर जो तस्वीरें लोग भेज रहे हैं, मैं उन्हें भी देखता हूँ। कहीं ड्रोन का डेमोस्ट्रेशन हो रहा है, कहीं हेल्थ चेक अप हो रहे हैं। आदिवासी क्षेत्रों में सिकल सेल अनीमिया की जांच हो रही है। जिन-जिन पंचायतों में यात्रा पहुंची है, उन्होंने तो दिवाली मनाई है। औरउ नमेंस ेअ नेकए ेसीप ंचायतेंह ैंज हांस ैचुरेशनअ ा चुका है, कोई भेदभाव नहीं, सबको मिला है। जहां जो लाभार्थी छूटे हुए हैं, वहां उन्हें भी अभी जानकारी दी जा रही है और बाद में योजना का लाभ भी मिलेगा।

निराशा की इस स्थिति को हमारी सरकार ने बदला है। आज देश में जो सरकार है, वो जनता को जनार्दन मानने वाली, ईश्वर का रूप मानने वाली सरकार है, और हम सत्ता भाव से नहीं, सेवा भावना से काम करने वाले हैं लोग। और आज भी आपके साथ इसी सेवा भाव से गाँव-गाँव जाने की मैंने ठान ली है। आज देश कुशासन की पहले वाली पराकाष्ठाक ेभ ीप ीछेछ ोड़कर सुशासन, और सुशासन का मतलब है शत-प्रतिशत लाभ मिलना चाहिए, सैचुरेशन होना चाहिए। कोई भी पीछे छूटना नहीं चाहिए, जो भी हकदार है उसको मिलना चाहिए।

उज्ज्वला और आयुष्मान कार्ड जैसी अनेक योजनाओं से तो उन्हें तत्काल जोड़ा जा रहा है। जैसे पहले

चरण में 40 हजार से ज्यादा बहनों-बेटियों को उज्ज्वला का गैस कनेक्शन दे दिया गया है। यात्रा के दौरान बड़ी संख्या में माई भारत वोलेंटियर भी रजिस्टर हो रहे हैं। आपको मालूम है हमने कुछ दिन पहले एक देशव्यापी नौजवानों का एक संगठन खड़ा किया है, सरकार की तरफ से शुरू किया है। उसका नाम है माई भारत मेरा आग्रह है की हर पंचायत में ज्यादा से ज्यादा नौजवान ये माई भारत अभियान से जरुर जुड़ें। उसमें अपनी जानकारियाँ दें और बीच-बीच में मैं आपसे बात करता रहूंगा। और आपकी शक्ति विकसित भारत बनाने की शक्ति बन जाए, हम मिल करके काम करेंगे।

इसद`शक ाक ोईभ ी गरीब, चाहे वो जन्म से कुछ भी हो, मुझे उसका जीवन स्तर सुधारना है, उसे गरीबी से बाहर निकालना है। इस देश का कोई भी युवा, चाहे उसकी जाति कुछ भी हो, मुझे उसके लिए रोजगार के, स्वरोजगार के नए अवसर देने हैं। इस देश की कोई भी महिला, चाहे उसकी जाति कुछ भी हो, मुझे उसे सशक्त करना है, उसके जीवन से मुश्किलें कम करनी हैं। उसकेस पनेज ेद बेप ड़ेह ैं ना, उन सपनों को पंख देने हैं, संकल्प से भरना है और सिद्धि तक उसके साथ रह करके मैं उसके सपने पूरे करना चाहता हूं।

मेरे परिवारजनों,

15 नवंबर को जब ये यात्रा शुरू हुई थी, और आपको याद होगा भगवान बिरसा मुंडा की जयन्ती पर शुरू हुआ था। जनजातीयग ौरव दिवस था उस दिन और मैंने झारखंड के दूर-सुदूर जंगलों में छोटी सी जगह से इस काम का आरंभ किया था, वरना मैं यहां बड़े भवन में या विज्ञान मंडपम में यशोभूमि में बड़े ठाट बाट से कर सकता था, लेकिन ऐसा नहीं किया। चुनाव का मैदान छोड़ करके मैं खूंटी गया, झारखंड गया, आदिवासियों के बीच गया, और इस काम को आगे बढ़ाया।

और जिस दिन यात्रा शुरू हुई थी, तब मैंने एक और बात कही थी। मैंने कहा था कि विकसित भारत का संकल्प 4 अमृत स्तंभों पर मजबूती के साथ टिका है। ये अमृत स्तंभ कौन से हैं इसी पर हमें ध्यान केंद्रित करना है। ये एक अमृत स्तंभ है हमारी नारी शक्ति, दूसरा अमृत स्तंभ है हमारी युवा शक्ति, तीसरा अमृत स्तंभ है हमारे किसान भाई-बहन, चौथी अमृत शक्ति है हमारे गरीब परिवार। मेरे लिए देश की सबसे बड़ी चार जातियां हैं। मेरे लिए सबसे बड़ी जाति है- गरीब। मेरे लिए सबसे बड़ी जाति है- युवा। मेरे लिए सबसे बड़ी जाति है- महिलाएं, मेरे लिए सबसे बड़ी जाति है- किसान। इन चार जातियों का उत्थान ही भारत को विकसित बनाएगा। और अगर चार का हो जाएगा ना, इसका मतलब सबका हो जाएगा।

इस देश का कोई भी गरीब, चाहे वो जन्म से कुछ भी हो, मुझे उसका जीवन स्तर सुधारना है, उसे गरीबी से बाहर निकालना है। इस देश का कोई भी युवा, चाहे उसकी जाति कुछ भी हो, मुझे उसके लिए रोजगार के, स्वरोजगार के नए अवसर देने हैं। इस देश की कोई भी महिला, चाहे उसकी जाति कुछ भी हो, मुझे उसे सशक्त करना है, उसके जीवन से मुश्किलें कम करनी हैं। उसके सपने जो दबे पड़े हैं ना, उन सपनों को पंख देने हैं, संकल्प से भरना है और सिद्धि तक उसके साथ रह करके मैं उसके सपने पूरे करना चाहता हूं। इस देश का कोई भी किसान, चाहे उसकी जाति कुछ भी हो, मुझे उसकी आय बढ़ानी है, मुझे उसका सामर्थ्य बढ़ाना है। मुझे उसकी खेती को आधुनिक बनाना है। मुझे उसकी खेती में जो चीजें उत्पादित होती हैं उसकी मूल्यवृद्धि करनी है। गरीब हो, युवा हो, महिलाएं हो और किसान, ये चार जातियों को मैं जब तक मुश्किलों से उबार लेता नहीं हूं, मैं चैन से बैठने वाला नहीं हूं। बस आप मुझे आशीर्वाद दीजिए ताकि मैं उतनी शक्ति से काम करूं, इन चारों जातियों को सारी समस्याओं से मुक्त कर दूं। और ये चारों जाति जब सशक्त होंगी तो स्वाभाविक रूप से तो देश की हर जाति सशक्त होगी। जब ये सशक्त होंगे, तो पूरा देश सशक्त होगा।

साथियो,

इसी सोच पर चलते हुए आज विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान यानी जब ये मोदी की गारंटी वाली गाड़ी आई है तब, दो बड़े कार्यक्रम देश ने किए हैं। एक कार्य नारीशक्ति और टेक्नॉलॉजी से खेती-किसानी को

आधुनिक बनाना, वैज्ञानिक बनाना, उसे सशक्त करने का काम है, और दूसरा इस देश के हर नागरिक का चाहे वो गरीब हो, चाहे निम्न मध्यम वर्ग का हो, चाहे मध्यम वर्ग का हो, चाहे अमीर हो। हर गरीब को दवाएं सस्ती से सस्ती मिलें, उसको बीमारी में जिंदगी गुजारनी न पड़े, ये बहुत बड़ा सेवा का काम, पुण्य का काम उससे भी जुड़ा हुआ अभियान है।

मैंने लाल किले से देश की ग्रामीण बहनों को ड्रोन दीदी बनाने की घोषणा की थी। और मैंने देखा कि इतने कम समय में ये हमारी बहनों ने, गांव की बहनों ने 10वीं कक्षा पास है कोई 11वीं कक्षा पास है, कोई 12वीं कक्षा पास है, और हजारों बहनों ने ड्रोन चलाना सीख लिया। खेती में कैसे इसका उपयोग करना, दवाइयां कैसे छिड़कना, फर्टिलाइजर कैसे छिड़कना, सीख लिया। तो ये जो ड्रोन दीदी हैं ना, उनको नमन करने का मन करे, इतना जल्दी वो सीख रही हैं। और मेरे लिए तो ये ड्रोन दीदी को नमन का कार्यक्रम है और इसलिए मैं तो इस कार्यक्रम का नाम देता हूं नमो ड्रोन दीदी, नमो ड्रोन दीदी। ये हमारी नमो ड्रोन दीदी जो है ये आज लॉन्च हो रही है। ताकि हर गांव ड्रोन दीदी को नमस्ते करता रहे, हर गांव ड्रोन दीदी को नमन करता रहे ऐसा वातावरण मुझे बनाना है। इसलिए योजना का नाम भी मुझे कुछ लोगों ने मुझे सुझाया है- नमो ड्रोन दीदी। अगर गाँव जैसे कहेगा नमो ड्रोन दीदी तब तो हमारी हर दीदी का मान-सम्मान बढ़ जाएगा।

आने वाले समय में 15 हजार स्व-सहायता समूहों को ये नमो ड्रोन दीदी कार्यक्रम से जोड़ा जाएगा, वहां ड्रोन दिया जाएगा, और गांव में वो हमारी दीदी सबके प्रणाम का नमन की अधिकारी बन जाएगी और नमो ड्रोन दीदी हमारा आगे बढ़ेगा। हमारी बहनों को ड्रोन पायलट की ट्रेनिंग दी जाएगी। सेल्फ हेल्प ग्रुप्स के माध्यम से बहनों को आत्मनिर्भर बनाने का जो अभियान चल रहा है, वो भी ड्रोन योजना से सशक्त होगा। इससे बहनों-बेटियों को कमाई का अतिरिक्तस ाधनर् मलेगा।अ ैरम ेराज ोस पनाह ैन ।,द ो करोड़ दीदी को मुझे लखपति बनाना है। गांव में रहने वाली, वूमेन सेल्फ ग्रुप में काम करने वाली दो करोड़ दीदी को लखपति बनाना है। देखिए, मोदी छोटा सोचता ही नहीं है और जो सोचता है उसको पूरा करने के लिए संकल्प लेकर निकल पड़ता है। और मुझे पक्का विश्वास है इससे देश के किसानों को बहुत कम कीमत में ड्रोन जैसी आधुनिकट ेक्नॉलॉजी मलप ाएगी।इ ससेउ नकेस् वास्थ्य को भी लाभ होने वाला है, इससे समय भी बचेगा, दवा और खाद की भी बचत होगी, जो वेस्टेज जाता है वो नहीं जाएगा।

साथियो,

आज देश के 10 हजारवें जन औषधि केंद्र का भी उद्घाटन किया गया है, और मेरे लिए खुशी है कि बाबा की भूमि से मुझे 10 हजारवें केंद्र के लोगों से बात करने का मौका मिला। अब आज से ये काम आगे बढ़ने वाला है। देशभरम ेंप ैलेय ेज नअ ौषधिक ेंद्र,अ ाजग रीबह ोय ा मिडिल क्लास, हर किसी को सस्ती दवाइयां उपलब्ध कराने के बहुत बड़े सेंटर बन चुके हैं। और देशवासी तो स्नेह से इन्हें, मैंने देखा है गांव वालों को ये नाम-वाम कोई याद नहीं रहता। दुकान वालों को कहते हैं भाई ये तो मोदी कीद वाईक ीद ुकानह ै।म ोदीक ीद वाईक ीद ुकानप र जाएंगे। भले ही आपको जो मर्जी नाम दीजिए, लेकिन मेरी इच्छा यही है कि आपके पैसे बचने चाहिए यानी आपका बीमारी से भी बचना है और जेब में पैसा भी बचना है, दोनों काम मुझे करने हैं। आपको बीमारी से बचाना और आपकी जेब से पैसे बचना, इसका मतलब है मोदी की दवाई की दुकान।

इन जन औषधि केंद्रों पर, लगभग 2000 किस्म की दवाएं 80 से 90 परसेंट तक डिस्काउंट पर उपलब्ध हैं। अब बताइए, एक रुपये की चीज 10, 15, 20 पैसे में मिल जाए तो कितना फायदा होगा। और जो पैसे बचेगा ना तो आपके बच्चों के काम आएंगे। 15 अगस्त को ही मैंने देशभर में जन औषधि केंद्र, जिसको लोग मोदी की दवाई दुकान कहते हैं वो 25 हजार खोलने का तय किया है। 25 हजार तक पहुंचाना है इसको। अब इस दिशा में और तेजी से काम शुरू हुआ है। इन दोनों योजनाओं के लिए मैं पूरे देश को, विशेष रूप से मेरी माताओं-बहनों को, किसानों को, परिवारों को, सबको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

मुझे आपको ये जानकारी देते हुए भी खुशी है कि गरीब कल्याण अन्न योजना, आप जानते हैं कोविड में शुरू की थी, और गरीबों को उनकी थाली, उनका चूल्हा,

उसकी चिन्ता, गरीब के घर का चूल्हा बुझना नहीं चाहिए, गरीब का बच्चा भूखा सोना नहीं चाहिए। इतनी बड़ी कोविड की महामारी आई थी, हमने सेवा का काम शुरू किया। और उसके कारण मैंने देखा है परिवारों के काफी पैसे बच रहे हैं। अच्छे काम में खर्च हो रहे हैं। ये देखते हुए कल ही हमारी कैबिनेट ने निर्णय कर लिया है कि अब ये तो जो मुफ्त राशन देने वाली योजना है, उसको 5 साल के लिए आगे बढ़ाया जाएगा। ताकि आने वाले 5 सालों तक आपको भोजन की थाली के लिए खर्च न करना पड़े और आपका जो पैसा बचेगा ना वो जनधन एकाउंट में जमा कीजिए। और उससे भी बच्चों के भविष्य के लिए उसका उपयोग कीजिए। प्लानिंग कीजिए, पैसे बर्बाद नहीं होने चाहिए। मोदी मुफ्त में भेजता है लेकिन इसलिए भेजता है ताकि आपकी ताकत बढ़े। 80 करोड़ से ज्यादा देशवासियों को अब 5 साल तक मुफ्त राशन मिलता रहेगा। इससे गरीबों की जो बचत होगी, उस पैसे को वे अपने बच्चों की बेहतर देखभाल में लगा पाएंगे। और ये भी मोदी की गारंटी है, जिसे हमने पूरा किया है। इसीलिए मैं कहता हूं, मोदी की गारटी यानि गारंटी पूरा होने की गारंटी।

साथियो,

इस पूरे अभियान में पूरी सरकारी मशीनरी, सरकार के कर्मचारियों की बड़ी भूमिका है। मुझे याद है, कुछ वर्ष पहले ग्राम स्वराज अभियान के तौर पर इस तरह की बहुत सफल कोशिश हुई थी। वो अभियान दो चरणों में देश के लगभग6 0ह जारग ांवोंत कह मनेच लायाथ ाा।स रकार, अपनी सात योजनाएं लेकर गांव-गांव गई थी, लाभार्थियों तक पहुंची थी। इसमें आकांक्षी जिलों के भी हजारों गांव शामिल थे। अब उस सफलता को सरकार ने, विकसित भारत संकल्प यात्रा का आधार बनाया है। इस अभियान से जुड़े सरकार के सभी प्रतिनिधि देश सेवा का, समाज सेवा का बहुत बड़ा कार्य कर रहे हैं। पूरी ईमानदारी से डटे हुए हैं, गांव-गांव तक पहुंचते रहिए। सबके प्रयास से विकसित भारत संकल्प यात्रा पूरी होगी। और मुझे विश्वास है कि जब विकसित भारत की बात करते हैं तो मेरा गांव आने वाले वर्षों में कितना बदलेगा, ये भी आपको तय करना है। हमारे गांव में भी इतनी प्रगति होनी चाहिए, तय करना है। हम सब मिल करके करेंगे ना, हिन्दुस्तान विकसित होकर रहेगा, दुनिया में हमारा देश काफी ऊंचा होगा। फिर एक बार मुझे आप सबसे मिलने का अवसर मिला, बीच में कभी मौका मिला तो मैं फिर से आपसे जुड़ने का प्रयास करूंगा।

आप सबको मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं। बहुत बहुत धन्यवाद !

सरदार पटेल की राष्ट्रनिष्ठा सदा प्रेरणा स्रोत रहेगी

श्री रामनाथ कोविंद
(पूर्व राष्ट्रपति)

31 अक्टूबर भारत माता के महान सपूत लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती है, इस अवसर पर आकाशवाणी को सरदार पटेल स्मारक व्याख्यान आयोजित करने लिए मेरा साधुवाद। जिस व्याख्यान का नाम ही देश की एकता के सूत्रधार के नाम से जुड़ा हो, वह स्वयं ही विशेष हो जाता है। देश की आवाज आकाशवाणी के इस प्रतिष्ठित व्याख्यानमाला के तहत अतीत में डॉक्टर जाकिर हुसैन, डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम, मोरारजी देसाई जैसी हस्तियां अपने विचार जाहिर कर चुकी हैं, ऐसे सरदार पटेल की याद में होने वाले इस व्याख्यान का हिस्सा बनना मेरे लिए गौरव की बात है।

देश के विभाजन को रोकने में सरदार पटेल की दूरदर्शिता, चातुर्य, कूटनीति और व्यावहारिक दृष्टिकोण का भारत सदैव ऋणी रहेगा। उन्होंने देश के विभाजन के बाद 560 से अधिक रियासतों के भारत संघ में विलय प्रक्रिया में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जो बात, इस उपलब्धि को और भी उल्लेखनीय बनाती है, वह कि इसे बिना किसी रक्त-पात के हासिल किया गया।

हालातक`अ नुसारअ लग-अलगद ृष्टिकोणअ पनातेह ुए,प टेलन` कुछ मामलों में मैत्रीपूर्ण सलाह दी, कुछ मामलों में रजवाड़ों को तर्कपूर्वक राजी किया और यहां तक कि हैदराबाद के मामले में बल का प्रयोग भी किया। यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने ऐसे समय में एक एकीकृत देश का निर्माण किया जब रियासतों के शासकों को भारत या पाकिस्तान में शामिल होने या स्वतंत्र रहने का विकल्प दिया गया था। हैदराबाद के निजाम ने भारत से स्वतंत्र रहने की महत्वाकांक्षा पाल रखी थी और इस बाबत एक फरमान जारी किया। साथ ही, उन्होंने रजाकारों को खुला छोड़ दिया और यहां तक कि हैदराबाद को पाकिस्तान में विलय करने का विचार भी किया, जबकि दोनों के बीच कोई भौगोलिक निरंतरता भी नहीं थी।

त्रावणकोर ने भी घोषणा कर दी थी कि वह स्वतंत्र रहेगा और जूनागढ़ के नवाब ने तो पाकिस्तान में शामिल होने की घोषणा कर दी थी। सरदार पटेल ने जूनागढ़ का भारत में विलय सुनिश्चित किया। इसी तरह ''ऑपरेशन पोलो'' के तहत केवल चार दिनों में हैदराबाद को शेष भारत के साथ एकीकृत कर दिया गया। इस विशेष अवसर की स्मृति में प्रत्येक वर्ष 17 सितंबर को तेलंगाना, महाराष्ट्र और कर्नाटक के कुछ क्षेत्रों में ''हैदराबाद मुक्ति दिवस'' के रूप में मनाया जाता है।

हालात के अनुसार अलग-अलग दृष्टिकोण अपनाते हुए, पटेल ने कुछम ामलोंम `ंम ैत्रीपूर्णस लाह दी, कुछ मामलों में रजवाड़ों को तर्कपूर्वक राजी किया और यहां तक कि हैदराबाद के मामले में बल का प्रयोग भी किया। यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने ऐसे समय में एक एकीकृत देश का निर्माण किया जब रियासतों के शासकों को भारत या पाकिस्तान मेंश ामिलह ोनेय ास् वतंत्रर हने का विकल्प दिया गया था।

आधुनिक इतिहास में शायद इस उपलब्धि की कोई सानी नहीं है। सरदार पटेल ने बेहद जटिल पहेली जैसे टुकड़ों में बंटे देश को एक समग्र भारत में एकीकृत करके ऐसी विरासत छोड़ी, जिसे आज हम वर्तमान भारत के रूप में जानते हैं। वह वास्तव में राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं। राष्ट्र निर्माण में पटेल के महान योगदान को स्वीकार करते हुए, उन्हें अक्सर भारत के बिस्मार्क की उपाधि से भी अलंकृत किया जाता है।

सरदारप टेलज बइ ंग्लैंडस ेक ानूनक ीप ढ़ाईप ूरी करके भारत लौटे, तो ब्रिटिश शासन के खिलाफ महात्मा गांधी के अहिंसक अभियान की ओर आकर्षित हुए। 1924 में, पटेल को अहमदाबाद नगर बोर्ड का अध्यक्ष चुना गया। कार्यभार संभालते हुए, उन्होंने अहमदाबाद की जल निकासी, स्वच्छता, सफाई और जल वितरण प्रणालियों में सुधार किया। अहमदाबाद शहर के लोग अचंभित रह गए, जब उन्होंने बोर्ड के अध्यक्ष को स्वयं झाड़ू और धूल की गाड़ी उठाते हुए, शहर की सफाई करते हुए देखा। उनके रूप में अहमदाबाद शहर को एक नया नायक मिला। वल्लभभाई पटेल बहुत जल्दी स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गए। 1928 के बारडोली सत्याग्रह में उनकी भूमिका ने उन्हें राष्ट्रीय गौरव के एक नए शिखर पर पहुंचा दिया। पूरे देश में जबरदस्त चर्चा का विषय बने किसान आंदोलन ने सरदार पटेल के अथक प्रयास, संगठनात्मक क्षमता और उत्साह को प्रदर्शित किया। यहीं पर उन्हें 'सरदार' की उपाधि मिली, वह उपाधि जिसके द्वारा उन्हें आज भी याद किया जाता है और सम्मान दिया जाता है।

सरदार पटेल द्वारा किया गया एक और शानदार योगदान अखिल भारतीय सिविल सेवाओं का निर्माण था। उन्होंने इन सेवाओं की कल्पना 'भारत के स्टील फेम' के रूप में की थी, जो देश की एकता और अखंडता की रक्षा करेंगी। उन्होंने सिविल सेवाओं के अधिकारियों से निष्ठा औरइ ंमानदारीक ेउ च्चतमम ानकोंक ेब नाएर खनेक ी अपेक्षा की।

सरदार पटेल के महान व्यक्तित्व, उनके अतुलनीय योगदान को याद करते हुए, देश उनकी जयंती 31 अक्टूबर को 2014 से राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मना रहा है। 31 अक्टूबर 2018 को, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा–'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' राष्ट्र को समर्पित की। गुजरात के केवड़िया में सतपुड़ा और विंध्याचल पहाड़ियों की पृष्ठभूमि में 182 मीटर ऊंची सरदार वल्लभभाई पटेल की यह प्रतिमा देश की एकता और अखंडता का प्रतीक है। मेरा देशवासियों, विशेषकर युवाओं से अनुरोध है कि वे केवड़िया स्थित 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' को जरूर देखें।

सरदार पटेल हमेशा चाहते थे कि भारत सशक्त हो, समावेशी हो, संवेदनशील हो, सतर्क हो, विनम्र हो, और विकसित भी हो। उन्होंने देशहित को हमेशा सर्वोपरि रखा। आज उनकी प्रेरणा से भारत, बाहरी और आंतरिक, हर प्रकार की चुनौतियों से निपटने में पूरी तरह से सक्षम हो रहा है। यह सरदार की सोच की बुनियाद ही है, कि आज भारत हर क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है, उसका गौरवबोध पूरी दुनिया में स्थापित हुआ है।

पिछले कुछ वर्षों से मैंने देखा है कि भारत के विकास की गति में अप्रत्याशित बढ़ोतरी हुई है। आज भारत और भारत के लोगों की पहचान विदेशों में बढ़ी है । आज देश का एक बड़ा वर्ग यह कहने लगा है कि हम आगामी एक या दो दशकों में, विश्व की महाशक्ति बन जाएंगे और कोई कहता है कि हम विश्व गुरू बनने की कगार पर खड़े हैं,ल ेकिनज बम ैं िनष्पक्षरू पस े िपछलेक ुछव र्षोंक ा आकलनक रताह ूंत ोम ुझेल गताह ैं िकभ ारतत ोअ ाज विश्व की महाशक्तियों में से एक बन चुका है। करोना महामारी की भयावह स्थिति से हम सभी लोग परिचित हैं। ऐसी महामारी हमने अपने जीवन में कभी नहीं देखा। इस दौरान हम सबने अपने परिवारवालों को, नजदीकी रिश्तेदारों को, मित्रों को ऑक्सीजन के अभाव में तड़पते हुए देखा है और उनमें से बहुत से लोग हमें छोड़ करके भी चले गए। यह स्थिति विश्व के सभी देशों में व्याप्त थी। लेकिन भारत ने अपनी सामर्थ्य और क्षमता को पहचानते हुए, मार्च 2020 में, कोरोना निरोधी वैक्सीन अपने देश में ही निर्माण करने का साहसिक निर्णय लिया। और मात्र दो माह के बाद ही मई 2020 में, देशवासियों को टीका लगवाना प्रारंभ किया। परिणाम स्वरूप हमने लगभग एक से डेढ़ साल के अंदर ही 200 करोड़ से अधिक मुफ्त टीके लगवा दिए। इस प्रकार हमने न केवल देश के लोगों की

जरूरत पूरी की बल्कि उनकी जान भी बचाई और साथ ही 'वसुधैव कुटुंबकम्' के सिद्धांत को फलीभूत करते हुए

एक ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी का लक्ष्य हासिल किया था। तब हमारी अर्थव्यवस्था 1.2 ट्रिलियन डॉलर की थी। इसके बाद भारत ने अपनी आर्थिक नीतियों में व्यापक सुधार किए और 2014 तक हमारी इकोनॉमी 2 ट्रिलियन डॉलर की हो गयी।

अगलेस ातव र्षोंम ेंि फरस े1 ि ट्रलियनड ॉलरस े ज्यादा भारत की अर्थव्यवस्था में जुड़े और भारत की मौजूदा अर्थव्यवस्था करीब 3.27 ट्रिलियन डालर की है।

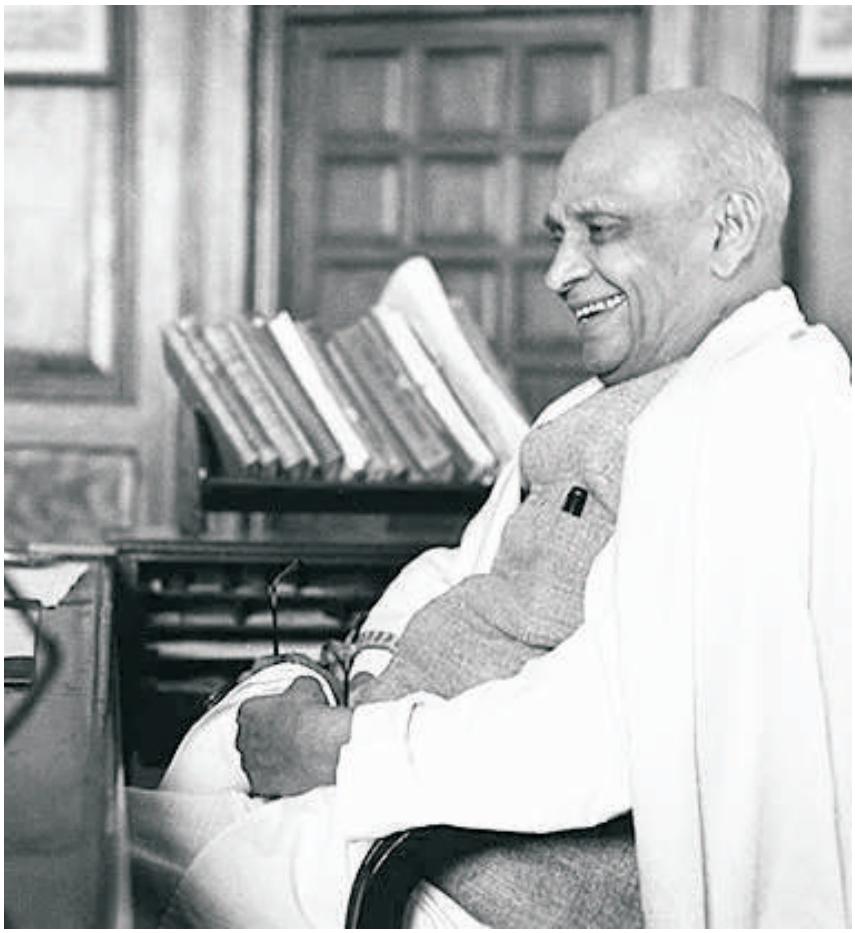

जैसे-जैसे भारत आर्थिक विकास और समानता हासिल करता है, वैसे-वैसे दुनिया हमारी ओर उत्सुकता से आकर्षित हो रही है।

भारत को इस वर्ष विशेष रूप से भारत को शिखर पर जाते हुए देखा गया है। कुछ दिनों पूर्व चंद्रयान-3, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरा और भारत ऐसा करने वाला पहला देश बना। भारत दुनिया के उन देशों के एलीट क्लब में भी शामिल हो गया है, जो चंद्रमा परअ पनाि मशनउ तारनेम ेंक ामयाबर हेह ैं।ए ेसाक रने वाला भारत चौथा देश है। इससे पहले अमेरिका, सोवियत संघ और चीन ने अपने यान चंद्रमा की सतह पर सफलता पूर्वक उतारे हैं। ऐसे में भारत की कामयाबी की पूरी दुनिया में तारीफ हो रही है।

अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के प्रमुख बिल

नेल्सन ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) को बधाई देते हुए कहा कि हमें इस मिशन में आपका भागीदार

गांधी की संवादशैली

राधावल्लभ त्रिपाठी

गांधी में आदमी को पहचानने की अद्‌भुत शक्ति थी। वे आदमी को जैसे उसके मन की इबारत पढ़ते हुए पहचानते थे।

पराधीन भारत में उपनिवेशवाद के शिकंजों से मुक्त स्वाधीन चित्त का विकास करने की दृष्टि से गांधी जी ने गुजरात विद्यापीठ स्थापना की। वे चाहते थे कि इस विद्यापीठ में प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्त्व और प्राचीन साहित्य का एक सम्पन्न विभाग हो, जिसमें उत्कृष्ट अनुसन्धान होता रहे। इसके लिये गुजरात विद्यापीठ में उन्होंने पुरातत्त्व विद्यामन्दिर नाम से विभाग खोला। इस विभाग में काम करने के लिए गांधी ने स्वयं जिन दो लोगों को आमन्त्रित किया वे थे – मुनि पुण्य विजय तथा धर्मानन्द कोसम्बी। दोनों के पास कोई डिग्री नहीं थी, न कोई शैक्षणिक उपाधि। दोनों ने किसी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने की तो बात ही दूर रही, उन्होंने स्कूल में भी माध्यमिक स्तर तक ही अध्ययन किया था। मुनि पुण्य विजय ने गांधी जी के आग्रह पर पुरातत्त्व विद्यामन्दिर में कार्यभार सँभाला और उसके अध्यक्ष के पद पर प्रतिष्ठित हुए।

गांधी अपने अनुयायियों और स्वयंसेवकों की शक्ति को पहचानते हैं, कई बार तो वे लोग स्वयं विश्वास नहीं कर पाते थे कि वे उस अग्निपरीक्षा सेस हीस लामतब ाहरअ ास केंगेज ोग ंधीउ नकील ेर हेह ैं।प रग ंधी उनकी क्षमता को उनसे ज्यादा बेहतर समझते हैं। रैहाना तैयब जी जैसी बहुत सम्पन्न घराने में नाजो नखरों के बीच पली सुकमार लड़की उनके कहने पर अपने आपको सत्याग्रह आन्दोलन में झोंक देती है। सुचेता कृपालानी जैसी कम उम्र की लड़की को गांधी नोआखाली के भीषण दंगों में उन्मादी भीड़ को समझाने का काम सौंप देते हैं और सुचेता अपने को खरा साबित करती हैं। अपने महाप्रयाण के पहले के एक महीने में मनु बेन गांधी जो 15-16 वर्ष की ही हैं, चौबीसों घंटे गांधी जी के साथ हैं। गांधी पर बम फैंका जा रहा है, हमले होने की आशँकाएँ हैं। इस बहुत मुश्किल जटिल समय में गांधी जी को भरोसा है कि मनु उनका साथ निभा सकेगी, मनु बेन को गांधी के भरोसे के कारण भरोसा है। यह भरोसा बना सकना गांधी को एक बड़ा संवाद पुरुष बनाता है।

गांधी अपने अनुयायियों और स्वयंसेवकों की शक्ति को पहचानते हैं, कई बार तो वे लोग स्वयं विश्वास नहीं कर पाते थे कि वे उस अग्निपरीक्षा से सही सलामत बाहर आ सकेंगे जो गांधी उनकी ले रहे हैं। पर गांधी उनकी क्षमता को उनसे ज्यादा बेहतर समझते हैं। रैहाना तैयब जी जैसी बहुत सम्पन्न घराने में नाजो नखरों के बीच पली सुकमार लड़की उनके कहने पर अपने आपको सत्याग्रह आन्दोलन में झोंक देती है।

गांधी को ऐसी रेहानाओं, सुचेताओं या मनु बेनों का खयाल उसी तरह रहता था, जैसे माँ को अपनी बेटियों का रहता है।

गांधी अपने साथियों के मानस को जितना गहराई से जानते समझे हैं, वे इस देश की जनता को भी उतना ही बखूबी समझते हैं। गांधी को जनता

पर भरोसा है, इसीलिये वे अंग्रेजों से 1930 से 1947 के अगस्त के महीने तक बिना बटँवारा किये देश छोड़ देने का आग्रह कर रहे। अपने साथियों को भी यही समझाते रहे कि अंग्रेज बिना देश का बँटवारा किये तुरत देश छोड़ कर चले जायें, यह चिन्ता छोड़ दें कि देश दंगों की आग में झलस जायेगा। 1931 में लंदन के अपने भाषणों में गांधी कह रहे हैं कि अंग्रेजों को देश से चले जाने पर आम लोग नहीं लड़ेगे, जिन्हे कुछ स्वार्थ साधना है वे लोग लड़ेगें।

गांधी की संवादकला का बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है सुनना। रिचर्ड एटनबरो की फिल्म में एक दृश्य है – चम्पारण से आये हुए राजकुमार शुक्ल की बात गांधी सुन रहे हैं। वे राजकुमार शुक्ल के शब्दों को चेतना के गहवर में महसूसते हुए श्रवण कर रहे हैं। वे इसी तरह भारतीय जनता को सुनते हैं।

गांधी दूसरों को सुनते हैं क्यों कि वे हृदय से निर्मल है। वे विभिन्न धर्मग्रन्थों, संस्कृतियों और परम्पराओं के अन्तः स्वर भी इसीलिये सुन पाते हैं। पर अपने विचारों में वे इतने साफ और पारदर्शी हैं कि हर एक की प्रामाणिकता अपनी ही कसौटी पर तय करते हैं। वे कहते हैं – मैं अक्षरचारी नहीं हूँ। इसीलिये मैं दुनिया के विभिन्न धर्मग्रन्थों की भावना को समझने का प्रयास करता हूँ। धर्मग्रन्थों की व्याख्या करते समय मैं स्वयं उन्हीं के द्वारा निर्धारित सत्य और अहिंसा की कसौटी को लागू करता हूँ। इस कसौटी पर जो खरे नहीं उतरते, उन्हें अस्वीकार कर देता हूँ और जो खरे उतरते हैं उनको अपना लेता हूँ। (यंग इंडिया, 27.08. 1925, पृ. 293) बुद्ध के विभज्यवाद का उपयोग इस तरह नये प्रसंगों में गांधी करते हैं।

अत एव गाँधी सदैव अन्धभक्ति और अन्धी आस्था से दूर रहते हैं। ''हिंदू धर्मग्रंथों में मेरे विश्वास का तात्पर्य यह नहीं है कि मैं उनके एक एक शब्द और श्लोक को दैवी प्रेरणा से उद्भूत मानता हूँ। मैं ऐसी किसी भी व्याख्या को मानने से इंकार करता हूँ जो तर्क या नैतिक दृष्टि के प्रतिकूल हो, भले ही यह व्याख्या कितनी ही विद्वत्तापूर्ण क्यों न हो।'' (वही, 6. 10.1921, पृ. 317)

कम लोगों में आत्मसंवाद की ऐसी प्रबल प्रवृत्ति रहती है जो गांधी में थी। बैरिस्टर मोहनदास से महात्मा गांधी बने तक की उनकी जीवन यात्रा में आत्मसंघर्ष और स्वयं से लड़ाई, स्वयं से जद्दोजहद बराबर बनी रही। कुमार प्रशांत ठीक कहते हैं कि शायद ही किसी इंसान ने खुद से ऐसा युद्ध लड़ा होगा, जैसा गांधी ने लड़ा। (मधुमती गांधी अंक, पृ. 74)

उनकी स्वराज की अवधारणा भी आत्मसंवाद से जुड़ी है। दूसरे से पाया राज्य स्वराज नहीं होता – वे कहते हैं, जो अपने से पाया जाये, वह स्वराज होता है।

अपने भीतर झाँक कर देखने और अपने को लगातार सँभालते रहने की प्रवृत्ति बचपन में गांधी में थी। वे अपने भीतर के विमर्श को कर्म में भी रूपान्तरित कर सकते थे। वे कहते हैं –

''सत्य की खोज में मैंने कई विचार त्याग दिये हैं, और कई नई बातें सोची हैं। वृद्ध हो जाने पर भी मुझे ऐसा नहीं लगता कि मेरा आंतरिक विकास रुक गया है, या देह के नाश के बाद मेरा विकास रुक जायेगा। प्रतिक्षण मैं सत्यरूपी नारायण की आज्ञा मानने के लिये ही तैयार रहता हूँ। इसलिये यदि मेरे दो लेखों को किसी को कहीं असंगति लगे,अ ौरउ सकाम ेरीि ववेकशीलताम ेंि वश्वासह ो,त ो इसके लिये एक ही विषय पर लिखे दो लेखों में से बाद वाले लेख को चुनना ही ज्यादा अच्छा रहेगा।''

सत्य के प्रयोग के छठे अध्याय में गांधी अपने बचपन के दुखद प्रसंगों का वर्णन करते हुए बताते हैं कि किस प्रकार वे अपने एक मित्र के बहकावे में आकर अपने मँझले भाई के साथ चोरी छुपे मांस का सेवन करने लग गये थे। उसके पीछे एक मिशनरी भाव था कि अंग्रेजों से जूझने के लिये शक्तिशाली होना होगा, और उसके लिये मांस भी खाना पड़े, वह भी अपने घर के लोगों को बिना बताये, तो वह भी करना ही होगा। मांस भक्षण, सिगरेट पीना, असफल व्यभिचार और फिर मंझले भाई का एक कर्ज चुकाने के लिये सोने के कड़े में से एक टुकड़ा काट कर उसकीच ोरी– इतनेक ुकृत्योंक ाब ोझब ालकम ोहनदास की आत्मा बहुत समय तक न झेल सकी। एक गहरी यन्त्रणा और भीतर के आलोडन विलोडन के बाद पिता के एक पत्र लिख अपने सार अपराध कबूल लेने का निश्चय मोहनदास ने किया।

गांधी के भीतर की करुणा बुद्ध की भाँति महाकरुणा केभ ाावम ेंप र्यवसितह ोतील गतीह ै।इ सीलियेव ेप्र ाय: अपने आप के ऊपर और उन पर जिन्हें वे अपना मानते हैं,

निष्करुण भी प्रतीत होते हैं। यह करुणा दूसरे की करुणा से एकतान बना देती है। वेटिकन सिटी में गाधी ने सूली पर

उनमेंप त्रल ेखनब हुतज बरदस्तस ाधनथ ाा।र ोर्जा कतने कितने पत्र अपने हाथ से लिखना – छोटे से छोटे आदमी से लेकर इंग्लैंड के प्रधानमंत्री तक को पत्र – उनकी दनचर्या में शामिल था। गंगा बहन, प्रेमा बहन, सुशीला नैयर को भी पत्र लिखते हैं , अपनी ओर से लिखते हैं या उनके पत्रों का उत्तर में पत्र भेजते हैं। नराणदास (नारायणदास) गांधी को भी उतना ही ध्यान रख कर वे पत्र भेजते रहते हैं।

अपनी संवादशीलता में वे सर्वस्वीकार्यता पर आग्रह करते रहे। वे विरोधियों को विश्वास में ले सकते थे, विश्वास से विश्वास उपजा सकते थे।

जब अपनी रोटी सेंकने वाले नेता आजादी का जश्न मनाने की तैयारी में थे, गांधी जी नोआखाली में दंगों की भयावह आग बुझा रहे थे। तेरह अगस्त 1947 को गांधी औरस ुहरावर्दीक लकत्ताक ेब ेलियाघाटझ ुग्गीब स्तीम ें एक पुरानी परित्यक्त मुस्लिम कोठरी में रहने चले गये। उस पहली ही रात गुस्साये हुए कुछ हिन्दू नौजवान मकान के दरवाजे और खिड़कियाँ तोड़ कर अंदर घुस आये और उन्होंने गांधी को घेर लिया। उन्होंने कहा कि वे अब अहिंसा का उनका कोई उपदेश सुनना नहीं चाहते। उन्होंने कहा कि आप यहाँ चले जाइये। गांधी ने उनसे कहा कि बात करते हैं। उन्होंने पूछा – मैं जो कि जन्मजात हिन्दू हूँ, धार्मिक तौर पर हिन्दू हूँ, अपनी जीवनशैली में मैं हिन्दुओं का हिन्दू हूँ, मैं भला हिन्दुओं का दुश्मन कैसे हो सकता हूँ? (जेम्स डब्ल्यू डगलस द्वारा पृ. 105 पर Mahatma Gandhi the Last Phase, पृ. 367 से उद्धृत)

गांधी जी उन भावाविष्ट नौजवानों के अन्तस्तल तक पहुँच कर बोल रहे थे। अपने सारे विरोध और आक्रामकता के चलते वे गांधी जी की बात सुनने लगे, सुन कर उसे गुनने लगे, अन्ततः गांधी जी को वे वचन दे कर गये कि वे फिलहाल हिंसा नहीं करेंगे।

सुहरावर्दी ने उद्धत और हमले पर उतारू भीड़ के सामने दंगों के लिये अपनी जिम्मेदारी स्वीकार की। बाद में गाँधी जी ने कहा – यह एक निर्णायक अवसर था। इसने लोगों के हृदय के शुद्धीकरण का काम किया। मैं इसे महसूस कर रहा था।

चौर्थे दनह त्यारोंक ेि गरोहोंक ेन ेताग ांधीज ीस े मिलने पहुँचे। उन्होंने उनसे उपवास तोड़ने की विनती करते

हुए अपने हथियार समर्पित कर दिये। वे गांधी द्वारा मुकर्रर कोई भी सजा भोगने को खुशी-खुशी तैयार थे।

में विफल रहे, तो इसका कारण यह था कि गांधी का जीवनबोध अखण्डित बोध था, वे जीवन का अनुभव एक अखण्ड अविभाज्य सत्ता के रूप में कर रहे थे। खण्डित जीवन और खाँचों में विभक्त समय में रहने वाले लोगों की उनसे संवाद करने में मुश्किलें अवश्य होंगीं।

विनोबा

विनोबा पारंपरिक प्रज्ञा के एक भाष्यकार हैं। धर्मशास्त्रों तथा दर्शन का अध्ययन उन्होंने नारायण शास्त्री (संन्यास लेने पर स्वामी केवलानन्द सरस्वती) से किया। ब्रह्मसूत्र, सांख्यदर्शन, वेदान्त और मीमांसा में उनका अच्छा प्रवेश है। पाण्डित्य, वैदुष्य, नवीन चिन्तन तथा प्रज्ञा और मेधा का अपूर्व संगम उनमें हुआ है।

विनोबा बहु-अधीती और बहुश्रुत हैं, अनेक शास्त्रों और विद्याओं तथा विविध सम्प्रदायों के साहित्य में उनकी गति है। अध्ययन की इस व्यापकता ने उनके उदार सोच और संवादशील मानस को विकसित किया है। उन्होंने जैन धर्म के सिद्धान्तों को लेकर समणसुत्त प्रस्तुत किया, बौद्ध ग्रन्थों का अध्ययन किया, सिख धर्म के जपुजी पर भाष्य किया, गीता पर तो विशद व्याख्यान किया ही। उनके जपुजी के भाष्य को पढ़कर भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री बूटा सिंह बहुत प्रभावित हुए थे और उन्होंने स्वीकार किया कि विनोबा के इस भाष्य को पढ़ने से उनकी जीवन की दिशाबदल गई है (कुसुम देशपाण्डे: 267)।

गांधी की तरह अपनी संवादप्रणाली में विनोबा श्रवण को महत्त्व देते हैं। वे बहुश्रुत होना अच्छा मानते हैं पर अतिश्रुत होना भ्रान्तिजनक है।

भूदान यात्रा के सिलसिले में उड़ीसा के घने जंगलों में यात्रा करते हुए अरण्य के एकान्त में उन्होंने संस्कृत में 540 साम्यसूत्रों तथा उनके भाष्य में बहुसंख्य उपसूत्रों की रचना की, जिनमें वे अपनी प्रज्ञा और मेधा के साथ प्राचीन सूत्रकारों और भाष्यकारों से संवाद करते हुए नवीन स्थापनाएँ भी देते हैं। उनके दर्शन में वेदान्त के ब्रह्माद्वैत का, ज्ञानेश्वर के स्फूर्तिवाद का तथा जैन दर्शन के अहिंसा का सिद्धान्त का तथा गांधी के सत्याग्रह की अवधारणा का परिपाक हुआ। साम्ययोग का सिद्धान्त उन्होंने गीता के आधार पर पल्लवित किया। उनकी संवाद प्रणाली अनुचिन्तन से अनुस्यूत है। साम्यसूत्रणि का एक सूत्र ही

है-महावाक्यम् अनुचिन्तयेत् (साम्यसूत्र, 13.70) । अपनी इस संवाद प्रणाली में वे गांधी की तरह बहुलतावादी दृष्टि

विनोबा ने मनुष्य की मुक्ति को एक बृहत्तर परिप्रेक्ष्य में पुनः परिभाषित किया। उनके अनुसार 'मैं का पूर्णतः लोप हो जाना ही वास्तविक मुक्ति है, और वह तभी सम्भव होगा जब मैं को हम में रूपान्तरित कर दिया जाये।' यह रूपान्तरण परमसाम्य के अनुभव में परिणत होता है। इसको वे सामाजिक समाधि या मानव जाति की मुक्ति भी कहते है। यह अनुभव ही विनोबा के लिये आध्यात्मिक अनुभूति है।

विनोबान ईस माजदृष्टिअ ौरत त्त्वमीमांसाक ेस ाथ सम्पूर्ण भारतीय परम्परा और वेदान्ती दृष्टि से संवाद करते हैं। वे भारतीय तत्त्वमीमांसा को व्यक्तिवाद और स्वार्थपरकता का विखण्डन करते हैं। हमारे अध्यात्म की दृष्टि व्यक्ति की मुक्ति पर केन्द्रित रही है। विनोबा कहते हैं कि मैं मुक्त हो जाऊँ ऐसा सोचना और कहना ही गलत है, क्यों कि मैं से मुक्ति ही सच्ची मुक्ति है। मैं का हम हो जाना ही मुक्ति है। यह कहा जा सकता है कि अहं का लोप तो वेदान्त का ध्येय है ही, क्यों कि अहं ब्रह्म हो जाता है। पर ब्रह्म अव्यक्त है, मैं व्यक्त। व्यक्ति को व्यक्ति के द्वारा मिटाना ही सही मार्ग हो सकता है। इसलिये मैं का लोप हम के द्वारा किया जाना चाहिये। विनोबा मानते हैं हमारी साधनापद्धतियाँ व्यक्ति केन्द्रित रही हैं, समूह की चेतना की अनुपस्थिति हन्दुस्तानक ीस ाधनाम ेंए कब ड़ीभ ूलह ै। सच्चा अध्यात्म निखिल ब्रह्माण्ड को अपने भीतर देखने में है। तत्त्वमीमांसा और अहं ब्रह्मास्मि के महावाक्यों से साधक परम सत्ता का अपने भीतर साक्षात्कार करता है, पर यह साधना तब तक अधूरी रहेगी, जब तक वह बाहर भी इसी सत्ता को सर्वत्र साक्षात्कार नहीं करता। तब अध्यात्म की परिपूर्णता एकान्तवास में नहीं, आम जनता के बीच रह कर साधना करने में और जन-जन में व्याप्त ईश्वर को पहचानने में है। इसके द्वारा समस्त भौतिक का आध्यात्मिकीकरण हो सकेगा। विनोबा इसे सामाजिक समाधि कहते हैं। पदार्थ का रूपान्तर होता जाता है, चेतना का भी रूपान्तर होता है।

सृष्टि का कण-कण एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। एक अणु के प्रभावित होने जगत् प्रभावित होता है। एक व्यक्ति के कर्म का परिणाम केवल उसे ही नहीं सभी को भोगना पड़ता है। सत्कर्म का फल विज्ञानमय कोश का विकास या मनुष्य में अध्यात्मचेतना का विकास होता है,

भौतिक रूप में फल मिल जायेंगे यह आवश्यक नहीं। व्यक्ति चेतना अखण्ड चेतना का अंग है, एक व्यक्ति का अनुशासनपर्व और उसके आगे एक प्रश्नचिह्न लगाया। उनकाअ ाशयव ास्तवम ेंय हीथ ाा कब लात्थ ोपाग या अनुशासन सच्चा अनुशासन नहीं बन सकता है, अनुशासन आचार्यकुल का होना चाहिये। अपने क्षेत्र संन्यास और मौन की अवधि में आपातकाल के विषय में जब तख्ती पर लिख कर कोई चर्चा की तो सदैव अनुशासनपर्व के आगे प्रश्नचिह्न लगा कर ही। पर कांग्रेस के इस दुष्प्रचार के कारण बुद्धिजीवी वर्ग विनोबा का मखौल उड़ाने लगा, उन्हें सरकारी सन्त कहा जाने लगा।

अरविन्द की भाँति विनोबा मानते हैं कि मनुष्य की चेतना की निरन्तर विकास होता आया है। जड से चेतन विकसित होता है और चेतना ऊर्ध्वगामी होती है।

विनोबा मानते हैं हमारी साधनापद्धतियाँ व्यक्ति केन्द्रित रही हैं, सामूहिक चेतना की अनुपस्थिति के कारण संवाद व्यापक नहीं हो सके। वैयक्तिक साधना तब तक अधूरी रहेगी, जब तक व्यक्ति बाहर भी आत्मसत्ता को सर्वत्र साक्षात्कार नहीं करता। तब अधयात्म की परिपूर्णता एकान्तवास में नहीं, आम जनता के बीच रह कर साधना करने में और जन जन में व्याप्त ईश्वर को पहचानने में है। इसके द्वारा समस्त भौतिक का आध्यात्मिकीकरण हो सकेगा। विनोबा इसे सामाजिक समाधि कहते हैं।

सहस्रों वर्षों की भारतीय चिन्तन की परम्परा में अगणितमहनीय मेधावी वादपुरुष तथा संवाद पुरुष हुए। यहाँ स्थालीपुलाकन्याय से उनमें से कतिपय पर चर्चा की गई है। भारत में वाद और संवाद की परम्परा कितनी विलक्षण विपुल और बहु–आयामी है यह इन से जाना जा सकता है। यह इस महादेश की महाचेतना की उद्योतिका है।

वादपुरुष संवाद का जो उपक्रम करते हैं वह उनकी पार्थिव काया के अवसान के साथ कभी समाप्त नहीं हो जाता। वे प्राय: अपनी पार्थिव काया का विसर्जन ही इसलिये करते हैं कि उस विसर्जन के साथ संवाद का वह सिलसिला और प्रभावी और सघन बनता जायेगा, जिसकी शुरूआत उन्होंने की है। हमारे समय में इस तरह के कायोत्सर्ग के सुन्दर उदाहरण गांधी और विनोबा हैं।

(समाप्त)

मो. 9999836088

नागार्जुन के काव्य में गांधी

प्रोफेसर सुरेश चन्द्र

भारत के इतिहास में महात्मा गांधी लोकप्रिय राजनेता हैं। उन्हें बापू और राष्ट्रपिता भी कहा जाता है। भारतीय समाज के राजनैतिक और सामाजिक जीवन-व्यवहार को उन्होंने अपने समय और बाद में प्रभावित किया। उनकी विचारधारा को समग्रता में गांधीवाद के रूप में मान्यता मिलना उनके व्यापक प्रभाव का ही प्रमाण है। बहुभाषी रचनाकार नागार्जुन ने अपने हिन्दी काव्य में देश-देशान्तर के अनेक राजनेताओं को जगह दी है। परन्तु, उन्होंने अपनी रचनाधर्मिता में सर्वाधिक महत्त्व महात्मा गांधी को ही दिया है। उन्होंने महात्मा गांधी को आधार बनाकर आठ कविताएँ लिखी हैं। ये कविताएँ इस प्रकार हैं -

1. बापू (1944 ई.), 2. गांधी (1945 ई.), 3. द्याक्चो खोकोन ओइ जे गांधी महात्ता (1960 ई.), 4. गांधी टोपी : हैट के प्रति (1967 ई), 5. बापू महान (1969 ई.), 6. बतला दो बापू, क्या थे तुम? (1969 ई.), 7. तीनों बन्दर बापू के (1969 ई.) और 8. गांधी गांधी गांधी (1987 ई.)।

स्पष्ट है कि नागार्जुन ने स्वतन्त्रतापूर्व और स्वातंत्र्योत्तर दोनों युगों के अपने काव्य में महात्मा गांधी को भरपूर जगह दी है। आठ में से छः कविताएँ स्वातंत्र्योत्तर युग में महात्मा गांधी की हत्या के बाद लिखी गयीं हैं। ऐसा होना हत्या के बाद भी महात्मा गांधी की जीवन्तता का सुबूत है।

नागार्जुन की ''बापू'' शीर्षक कविता महात्मा गांधी के जीवन-काल में लिखी गयी पहली कविता है। इस कविता को ''कौमी बोली'', जनवरी, 1944 ई. में प्रकाशित किया गया था। यह कविता उस समय लिखी गयी जब भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन अपने चरम पर पहुँच गया था। वह भारत छोड़ो आन्दोलन का समय था। महात्मा गांधी को अंग्रेजों ने पुणे के आगा खां महल में कैद (09 अगस्त, सन् 1942 ई. से 06 मई, सन् 1944 ई. तक) कर रखा था। इस कविता में नागर्जुन ने महात्मा गांधी को ''देव'' के रूप में सम्बोधित करते हुए उन्हें मृत्युंजयी पितामह और अन्य जन सहित स्वयं को पशु-समान लिखा है। कवि ने महात्मा गांधी के स्वतन्त्रता आन्दोलन में दिये गये योगदान और स्वयं सहित अन्य जनों के स्वार्थकेन्द्रित जीवन-व्यवहार का उल्लेख किया है। नागार्जुन ने पूर्ण तटस्थता बरतते हुए स्वार्थ पोषक जीवन जीने वालों के समानान्तर स्वतन्त्रता आन्दोलन में महात्मा गांधी की त्यागपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका को कम शब्दों में स्वर दिया है। यथा -

नागार्जुन की ''बापू'' शीर्षक कविता महात्मा गाँधी के जीवन-काल में लिखी गयी पहली कविता है। इस कविता को ''कौमी बोली'', जनवरी, 1944 ई. में प्रकाशित किया गया था। यह कविता उस समय लिखी गयी जब भारतीय स्वतन्त्रा आन्दोलन अपने चरम पर पहुँच गया था। वह भारत छोड़ो आन्दोलन का समय था।

''दूर इस संसार से
देव! देव तुम उस पार से
झांकते हो हमें कारागार से
हो रहा हमसे नहीं कुछ दूर भी
देव, तव पद-पंक्तियों का अनुसरण
मृत्युविजयी पितामह तुमसे न हम
सीख पाये अभी जीवन या मरण
पशु-सदृश्य हम चर रहे
नहीं कुछ भी कर रहे
तुच्छ स्वार्थों के लिये ही मर रहे
किन्तु िर भी प्यार से
देव, तुम उस पार से
झांकते हो हमें कारागार से।''[1]

महात्मा गांधी के जीवन-काल में उन पर नागार्जुन ने दूसरी कविता ''गांधी'' शीर्षक से लिखी। यह कविता ''हंस'' पत्रिका में सितम्बर, 1945 ई. में प्रकाशित हुई। इस कविता में कवि ने महात्मा गांधी के एक जनसभा में उपस्थितह ोनेअ ौरउ नकेद्व ाराज नसभाम ेंउ पस्थितद स हजार लोगों को सम्बोधित करने के घटना-क्रम को विषय बनायाह ै।न ागार्जुनस्र वयंउ सज नसभाम ेंउ पस्थितह ुए। उन्होंने कविता में महात्मा गांधी को खर्वकाय, कृश शरीर, महापुरुष, महावीर, देव, जननायक, फकीर और महाप्राण के रूप में संज्ञायित किया है। यह कविता महात्मा गांधी के प्रभावकारी लोकनायकत्व का परिचय कराती है। कविता की अग्रांकित पंक्तियां द्रष्टव्य हैं -

''जय रघुपति राघव राम-राम!
बिस्मिल्ला हिर्रहमाने रहीम!
प्रार्थना सुनी, देखी नमाज
फिर भी जनता ज्यों की त्यों थी
उद्वेलित सागर-सी अधीर!
तुम लगे बोलने तब जाकर वह हुई शान्त!
देखा तुमको भर-आंख और भर-कान सुना,
कुछ तृप्ति हुई कुछ शान्ति मिली;
बोले तुम केवल पांच मिनट
चुप रहे आदमी दस हजार, बस पांच मिनट!''

''द्याक्चो खोकोन ओइ जे गांधी महात्ता''[2] स्वातत्र्योत्तर युग में लिखी गयी महात्मा गांधी केन्द्रित पहली कविता है। यह कविता भारत के स्वतन्त्र होने के तेरह वर्ष बाद लिखी गयी। स्वतन्त्र देश में स्वतन्त्रता के नायकों का सम्मान परतन्त्र बनाने वाले विदेशियों से अधिक होना चाहिए। प्रस्तुत कविता इस बात की गवाही देती है कि स्वतन्त्र होने के तेरह वर्ष बीत जाने तक भारत में स्वतन्त्रता के इतिहास पुरुष महात्मा गांधी से अधिक सम्मानित भारत को परतन्त्र बनाने वाले विदेशी अंग्रेजों की प्रतिनिधि विक्टोरिया थी। कविता पढ़ने पर त होता है कि कवि नागार्जुन कोलकाता (तब कलकत्ता) में हैं। वे ट्राम से रासबिहारी एवेन्यू जा रहे हैं। ट्राम में बीठी एक भद्र बंगाली महिला चौरंगी में स्थिति महात्मा गांधी की ब्रोंज प्रतिमा को देखकर बच्चे से प्रश्न करती है, ''द्याक्चो खोकोन ओइ जे गांधी महात्ता?'' इस इस प्रश्न का सीधा मतलब है कि वह महिला महात्मा गांधी को पूर्णत: पहचानती नहीं हैं। महिला के प्रश्न को सुनकर नागार्जुन स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान देने वाले अनेक भारतीय महापुरुषों की प्रतिमा देश के अलग-अलग शहरों और संसद में स्थापित होने के बारे में सोचने लगते हैं। उनके सोचने के क्रम में ट्राम विक्टोरिया मेमोरियल के सामने रुकती है। वे ट्राम से उतर जाते हैं। विक्टोरिया मेमोरियल की भव्यता और विशालता देखकर वे आश्चर्यचकित होते हैं। मूँगफली बेच रहे खोंमचे वाले से वे मूँगफली खरीदते हैं। मूँगफली खरीदने के क्रम में वे अन्तर्मन में भारत-भूमि पर विदेशी विक्टोरिया और भारत की स्वतन्त्रता के इतिहास पुरुष महात्मा गांधी की तुलना करते हैं। भारत-भूमि पर विदेशी विक्टोरिया और भारतीय महात्मा गांधी की तुलना के परिणाम को उन्होंने अग्रांकित पंक्तियों में शब्दबद्ध किया -

''आज भी ब्रिटेन की मलिका ही बड़ी है,
वो हमारी दिल की वेदी पर खड़ी है।
चौरंगी का गांधी?
वो तो बस तमाशा बन के खड़ा है!''[3]

हमारे देश में टोपी प्रतिष्ठा का प्रतीक है। राजनीति में गांधी टोपी की विशिष्ट पहचान है। स्वातत्र्योत्तर युग की भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी के न रहने के बाद भारतीयर ाष्ट्रीयक ांग्रेसक ीर ाजनीतिम ेंउ नकेन ामअ ौर विचारधारा के साथ उनकी टोपी का सकारात्मक प्रभाव रहा है। सन् 1967 ई. में चौथा आम चुनाव हुआ। उस

चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को मिलने वाले जन-समर्थन का ग्राफ कम हो गया था। उस माहौल में नागर्जुन ने ''गांधी टोपी : हैट के प्रति'' शीर्षक कविता लिखी। इस कविता में कवि ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गिरते ग्राफ को गांधी टोपी से जोड़ा है और उसके लिये इन्दिरा गांधी को जिम्मेदार माना है। कविता में कवि ने गांधी टोपी का मानवीकरण किया है। गांधी टोपी हैट से कहती है -

''बनी रही वर्षों बड़प्पन की ढाल
जाने कित्ता फिदा थे मुझ पे जवाहरलाल
शास्त्री के जमाने तक ठीक था हाल
अब लेकिन चिढ़ाती है इन्दिरा की शाल।''[4]

नागार्जुन ने स्पष्ट कर दिया है कि स्वातत्र्योत्तर युग में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने महात्मा गांधी के सिद्धान्तों को लोक कल्याण के सन्दर्भ में जन-अपेक्षाओं के अनुरूप व्यावहारिकस् तरप रन हींब रता,क ेवलउ नकेन ामअ ैर उनकी टोपी का मात्र दिखावे के लिये प्रयोग किया।

नागार्जुन ने 21 नवम्बर, 1969 ई. को ''बापू महान'' शीर्षक से महात्मा गांधी पर पांचवीं कविता लिखी। जैसा कि शीर्षक से ही द्योतित है इस कविता में कवि ने महात्मा गांधी के महात्म्य का वर्णन किया है। कविता में चार चरण हैं, जो कुल इक्कीस पंक्तियों में लिखे गये हैं। प्रत्येक पंक्ति महात्मा गांधी के महात्म्य को सटीक शब्दों में स्वर देने वाली है। महानता-व्यंजक शब्दों का इतना सघन और व्यवस्थित प्रयोग असम्भव नहिं तो दुर्लभ अवश्य है।

महात्मा गांधी ने स्वदेश से लेकर विदेश तक, अध्यात्म से लेकर भौतिक जीवन-व्यवहार तक और महानगरों से लेकर गांवों तक को अपने चिन्तन-मनन और व्यवहार से प्रभावित किया। उनके चिन्तन और आन्दोलनों के केन्द्र में मानव और उसकी मानवता रही। मानवमात्र की सेवा के अनेक आयामों को उन्होंने विश्व-इतिहास के पन्नों पर हमेशा-हमेशा के लिये अंकित कर दिया। उनकी गम्भीर वैश्विक बहुआयामी मानव-सेवा के क्रम में भारत आजाद हुआ। मानवता के संरक्षण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का फल उन्हें स्वयं के जीवन की कुर्वानी के रूप में मिला। नगार्जुन ने प्रस्तुत कविता के पहले चरण में महात्मा गांधी को सुकृति शिरोमणि के रूप में संज्ञायित करते हुए उनकी कुर्बानी के महात्म्य को शब्दबद्ध किया है

''बापू महान, बापू महान!
ओ परम तपस्वी परम वीर
ओ सुकृति शिरोमणि, ओ सुधीर
कुर्बान हुए तुम, सुलभ हुआ
सारी दुनिया को ज्ञान।''[5]

महात्मा गांधी ने आधुनिक काल में राजनीति करते हुए बुद्ध की शिक्षाओं को आधार बनाकर जीवन-मूल्यों के क्षेत्र में सत्य और अहिंसा को अपनाने पर बल दिया। अंग्रेजों की औपनिवेशिक शोषणमूलक नीति के प्रति महात्मा गांधी द्वारा व्यवहृत बुद्ध के मूल्य-दर्शन का परिणाम सुखद हुआ। विश्व-पटल पर उनके अनुयायियों की संख्या बढ़ी और वे युगनिर्माता मान लिये गये।

नागार्जुन ने कविता के दूसरे और तीसरे चरण में महात्मा गांधी के युगनिर्माता रूप को बयान किया है -

''हे सत्य-अहिंसा के प्रतीक
हे प्रश्नों के उत्तर सटीक
हे युग-निर्माता, युगाधार
आतंकित तुमसे पाप-पुंज
आलोकित तुमसे जग जहान!
दो चरणों वाले कोटि चरण
दो हाथों वाले कोटि हाथ
तुम युगनिर्माता, युगाधार
रच गये कई युग एक साथ।''[6]

भारत गांवों का देश है। भारत के लिये खाद्य की व्यवस्था करने वाले किसान और मजदूर गांव में ही रहते हैं। महात्मा गांधी ने चम्पारण (बिहार) और खेड़ा (गुजरात) में जो आन्दोलन किये थे, वे गांवों के किसानों की बदहाली में सुधार लाने के उद्देश्य से ही किये गये थे। उन्होंने गांवों के किसानों को उनकी समान समस्या के आधार पर विदेशी शोषक शाषकों के विरुद्ध एकता के सूत्र में बांध दिया था। गांव-जनों के बीच उनके नेतृत्व की अभूतपूर्व सफलता के आधार पर ही नागार्जुन ने उनको प्रस्तुत कविता के चौथे चरण में ग्रामात्मा लिखा है -

''तुम ग्रामात्मा, तुम ग्राम प्राण
तुम ग्राम हृदय, तुम ग्राम दृष्टि
तुम कठिन साधना के प्रतीक
तुमसे दीपित है सकल सृष्टि।''[7]

नागार्जुन ने ''बतला दो बापू, क्या थे तुम?'' शीर्षक कविता सन् 1969 ई.में लिखी। जब देश महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता के रूप में मान्यता दे चुका हो, तब कविता के माध्यम से उनसे अनका परिचय पूछना एक विडम्बना से कम नहीं है। महात्मा गांधी के सम्बन्ध में उत्पन्न इस विडम्बना के पीछे केवल और केवल लोगों द्वारा उनके प्रति झूठी श्रद्धा बरत कर उनके नाम का स्वार्थ हेतु प्रयोग करने का चलन है। यहां प्रस्तुत कविता की अग्रांकित पंक्तियां द्रष्टव्य हैं –

''मैं नाम तुम्हारा बेचूँगा
मारूँगा तुमको रोज-रोज
बापू! तुमको जो अप्रिय थे
वह काम करूँगा खोज-खोज।'' [8]

सन् 1969 ई. महात्मा गांधी का जन्म शताब्दी वर्ष था। इस वर्ष नागार्जुन ने महात्मा गांधी पर तीन कविताएँ लिखीं। दो कविताओं पर विचार किया जा चुका है। तीसरी कविता ''तीनों बन्दर बापू के'' है। अपने जीवन में महात्मा गांधी ने तीन बन्दरों की जिन तीन मुद्राओं के माध्यम से मानव-समाज को बेहतर बनाने का उपक्रम किया था, उनके बाद राजनैतिक भटकाव और जीवन-मूल्यों में गिरावट के कारण विपरीत जीवन-स्थितियां बनीं। कह सकते हैं कि महात्मा गांधी के जन्म शताब्दी वर्ष के आते-आते स्वतन्त्र भारत में उनके आदर्श ध्वस्त होने लगे थे। नागार्जुन ने इस कविता में महात्मा गांधी के आदर्शों के विपरीत लोगों के व्यवहार को उनके तीन बन्दरों के माधयम से शब्दबद्ध किया है। यथा –

''सेठों के हित साध रहे हैं तीनों बन्दर बापू के
युग पर प्रवचन लाद रहे हैं तीनों बन्दर बापू के
सत्य-अहिंसा ांक रहे हैं तीनों बन्दर बापू के
पूछों से छवि आंक रहे हैं तीनों बन्दर बापू के
दल से ऊपर, दल के नीचे तीनों बन्दर बापू के
मुस्काते हैं आंखें मीचे तीनों बन्दर बापू के!'' [9]

समय बीतता रहा है और महात्मा गांधी लोगों के जीवन-व्यवहार से बाहर होकर नारों और खादी के वस्त्रों के रूप में मात्र दिखावा होकर रह गये। स्थिति यहां तक विडम्बनापूर्ण बन गयी है कि महात्मा गांधी के जन्मदिन व पुण्यतिथि के समय उनके समाधि-स्थल और उनकी प्रतिमाओं पर विभिन्न दलों के राजनेता और उनके समर्थक भारी संख्या में उपस्थित होकर भजन-पूजन और नारेबाजी तो करते हैं, परन्तु उनके सिद्धान्तों से सरोकार नहीं रखते। कहने का तात्पर्य यह है कि अब केवल महात्मा गांधी के नाम की केवल हवा रह गयी है, व्यवहार नहीं है। महात्मा गांधी की इस स्थिति को नागार्जुन ने ''गांधी गांधी गांधी'' शीर्षक कविता में शब्द दिये हैं –

''गांधी गांधी गांधी गांधी
गांधी को घेरे हैं गांधी
गांधी को घेरे हैं आंधी।'' [10]

उपर्युक्तअ ध्ययनस ेज्ञ ातह ेताह ैि कन ागार्जुनन े अपने काव्य में महात्मा गांधी के महात्म्य से लेकर उनके प्रति राजनेताओं और सामान्य भारतीय नागरिकों के दिखावटी व्यवहार को शब्द दिये हैं। नागार्जुन का महात्मा गांधी केन्द्रित हिन्दी काव्य महात्मा गांधी विषयक वास्तविक वर्तमान स्थिति का बोध कराने के साथ हमें उनके प्रति कृतज्ञता बरतने की शिक्षा देता है।

सन्दर्भः

1. नागार्जुन रचनावली-1, सम्पादन-संयोजनः शोभाकान्त, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002, संस्करणः 2011, पृष्ठ - 45

2. उपर्युक्त, पृष्ठ - 69

3. उपर्युक्त, पृष्ठ - 332

4. उपर्युक्त, पृष्ठ - 429

5. नागार्जुन रचनावली-2, सम्पादन-संयोजनः शोभाकान्त, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002, संस्करणः 2011, पृष्ठ - 39

6. उपर्यक्त

7. उपर्युक्त

8. उपर्युक्त, पृष्ठ - 43

9. उपर्युक्त, पृष्ठ - 45

10. उपर्युक्त, पृष्ठ - 388

सम्पर्कः अध्यक्ष, भारतीय भाषा विभाग,
दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
गया - 824 236, बिहार

गांधी का चिंतन ही लोकतंत्र का सही पथ

गिरीश पंकज

महात्मा गांधी का पूरा जीवन अगर हम देखें, तो पाते हैं कि यह एक ऐसे शख्स की जीवन गाथा है जो साधारण से असाधारण व्यक्तित्व की यात्रा पूरी करता है। महात्मा गांधी का प्रारंभिक जीवन किसी भी सामान्य किशोर जैसा ही रहा । नाना कुसंगों में रहकर वे गलत गलत दिशाओं की ओर भी प्रवृत्त होते रहे लेकिन कहीं न कहीं मां के स्नेह संस्कार के कारण वे आत्ममंथन करके सही मार्ग पर चलने की भी कोशिश करते रहे। फिर चाहे वह छिपकर बीड़ी फूंकने की आदत हो या मांस भक्षण। अपनी हर गलतह रकतप रग ंधीक ोअ ात्मग्लानिह ुईअ ैरउ न्होंनेउ सेछ ोड़नेक । संकल्प कया,ि फरद ोबाराउ सअ ोरल ैटकरन हींद ेखा।स ाधारणल ोग अपने दुर्गुणों से प्रेम करते हुए जीवन भर उसी से चिपके रहते हैं, लेकिन जो लोग असाधारण होते हैं, वे समय रहते अपने दुर्गुणों को पहचान लेते हैं और उस से मुक्त होकर असाधारण व्यक्तित्व के स्वामी बन जाते हैं- जैसे गांधी।

महात्मा गांधी की आत्मकथा सत्य के प्रयोग को पढ़ते हुए कोई भी अभिभूत हो सकता है कि एक व्यक्ति अपने जीवन के तमाम दुर्गुणों के बारे मेंस बकोब ताद ेनाच ाहताह ैत ाकिभ ाावीप ीढ़ीउ ससेब चस के।ग ंधी अनेक दुर्गुणों से बच सके इसीलिए वे अपने जीवन को बेहतर ढंग से रच सके। गांधी जी का चिंतन बहुत कुछ उनका अपना मौलिक नहीं था । उन्होंने अपनी परंपरा से, अपने सनातनी संस्कारों से जो कुछ ग्रहण किया, उसे उन्होंने प्रस्तुत करने की कोशिश की। फिर चाहे वह सत्य हिंसा का मामला हो, ब्रह्मचर्य का हो, अस्तेय हो, स्वच्छता हो अथवा अपरिग्रह आदि। कहीं उन्होंने बुद्ध से प्रेरणा ली तो कहीं उन्होंने भगवान महावीर के चिंतन को आत्मसात किया। नरसी मेहता का भजन तो उनके जीवन का भजन उनके जीवन का स्थायी भजन बन गया, ''वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीड पराई जाने रे''।

चिंतन नहीं मंत्र

गांधी जी का चिंतन हमें एक मंत्र की तरह लगता है। उन्होंने जितनी भी बातें हमें बताई, उन पर अमल करके न केवल व्यक्ति वरन राष्ट्र भी सफलता के शिखर तक पहुंच सकता है। लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि ऐसा कुछ हो नहीं पाया। गांधी ने देश की आजादी की लड़ाई भर नहीं लड़ी, वह मनुष्य के नव निर्माण की लड़ाई भी लड़ रहे थे। उनके दिमाग में स्वतंत्र भारत का एक खाका विद्यमान था कि आजादी के बाद उनका देश कैसा होगा। गांधी अपने जीवन के प्रयोगों से भी अपनी बातें सिद्ध कर रहे थे।

आज पूरी दुनिया में गांधी के सत्याग्रह को आत्मसात करके लोग आंदोलन करते हैं। हालांकि वहां भी दमन चक्र चलता है लेकिन अपने देश में कुछ ज्यादा ही हिंसक तरीके से सत्याग्रह को कुचलने की कोशिशक ीज ातीह ैग ंधीन ेअपनी महान कृति 'हिंद स्वराज' में पाठक और संपादक की वार्तालाप शैली में जो विचार व्यक्त किए हैं वह एक सौ ग्यारह साल बाद भी तरोताजा बने हुए हैं।

फिर चाहे वह पत्रकारिता हो, ग्राम सुधार हो या सामाजिक आंदोलन। हर कहीं गांधी का गांधीपन दिखाई देता था। वे जब स्त्री मुक्ति की बात करते थे तो सिर्फ उनके लिए यह जुमला नहीं था, उन्होंने ऐसा करके दिखाया। उस दौर में जबकि स्त्रियों पर तरह–तरह के बंधन लगे रहते थे, तब गांधी जी की प्रेरणा से हजारो स्त्रियां अंग्रेजों के विरुद्ध सड़कों पर उतर कर संघर्ष कर रही थी। उनकी धर्मपत्नी कस्तूरबा गांधी भी धीरे–धीरे गांधीमय हो गई थी। उनके व्यक्तित्व के कारण भी अनेक महिलाएं घरों से निकलकर समाज सुधार की दिशा में काम करने लगी थी।

गांधी जी ने ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध निर्भय होकर आंदोलन किया और अहिंसा के शाश्वत सत्य को स्थापित करने की कोशिश की। यह कितनी बड़ी बात है कि गांधीजी के कहने पर लोग लाठियां झेलते रहे लेकिन किसीन`भ ीप लटक रह मलान हीं किया।य हक ायरता नहीं थी। यह निर्भीक व्यक्ति की अहिंसा का प्रमाण था, जिसके आगे आखिरकार गोरी सत्ता को झुकना पड़ा। गांधी ने अहिंसा, सत्य, आस्वाद, अस्तेय (चोरी न करना) अपरिग्रह (संचय न करना), ब्रह्मचर्य, अभय, अस्पृश्यता निवारण, जात–मेहनत, सर्वधर्म सद्भाव, और स्वदेशी जैसे अमर मंत्र हमें दिए। उस मंत्र को जीवन में आत्मसात करके कोई भी मानव महामानव बन सकता है। कोई भी साधारण व्यक्ति असाधारण व्यक्तित्व का धनी बन सकता है। जैसा महात्मा गांधी बने। अपने अस्तेय मंत्र को उन्होंने और व्याख्यायितक रकेस मझानेक ीक ोशिशक ीं कअ स्तेय का मतलब सिर्फ चोरी करना नहीं है। अगर मन में किसी चीज को पाने का भाव भी जाग्रत होता है, तो यह भी चोरी का एक प्रकार है । अपने मंत्र अभय में वे कहते हैं कि हमें भयमुक्त रहना है। लेकिन सिर्फ भय मुक्त नहीं रहना है। हमें दूसरों को भी निर्भीक बनाए रखना है। संक्षेप में कहें तो 'न डरो ना डराओ' की नीति पर चलना है। उनका जात–मेहनत का मंत्र भी मुझे क्या सब को प्रभावित करता है, जिसमेंव`क हतेह ैं कर ोटीक ें लएह मेंम`हनतक रनी चाहिए । मेहनत करके ही खाना चाहिए। फिर उन्होंने गीता का हवाला देते हुए कहा उस कथन को याद किया कि यज्ञ किए बिना जो खाता है वह चोरी है। गांधी ने यज्ञ की जगह जात– मेहनत को रखा।

ब्रह्मचर्य पर भी गांधीजी ने भरपूर जोर दिया । और सबसे अच्छी बात है कि उनकी धर्मपत्नी बा ने भी गांधी जी की भावना का सम्मान करते हुए ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया। गांधी कहते हैं कि तमाम विषय वासनाओं पर काबू प्राप्त करना ही ब्रह्मचर्य है । केवल इंद्रियों के विकारों पर और रोक ब्रह्मचर्य नहीं है। ब्रह्मचर्य का मतलब है, ब्रह्म अर्थात सत्य की खोज में चर्या करना। सिर्फ दैहिक वासना पर नियंत्रण नहीं, भौतिक वासनाओं पर भी काबू करना ब्रह्मचर्य कहलायेगा। भौतिक वासना के वशीभूत होकर ही साधरण लोग संग्रह करने की प्रवृत्ति से ग्रस्त हो जाते हैं इसलिए गांधी ने अपरिग्रह का मंत्र दिया। जितनी हमारी जरूरत है, उतना ही हम संचय करें। उससे अतिरिक्त कुछ भी नहीं। मगर आज यह व्यावहारिक रूप में संभव नहीं दिखता। संचय की लालसा व्यक्ति को तरह–तरह के आर्थिक अपराध करने पर विवश कर देती है।

गांधी ने जीवन में नम्रता को भी एक मंत्र कहा। वे कहते थे कि हमें परमार्थ करना है, खूब मेहनत करें और उसके कारण खूब धन वैभव भी आ जाय तो भी हम विनम्रता न छोड़ें। सदैव विनयशील बने रहें। गांधी ने यह महसूस किया था कि किंचित आर्थिक समृद्धि आने के कारण कुछ लोग समाज से कट जाते हैं । गुरूर में आ जाते हैं। पैसे की अकड़ आ जाती है। यही सब बुराई देखकर गांधी ने नम्रता का मंत्र दिया कि हमारे पास पुरुषार्थ तो हो मगर विनम्रता भी आ जाय तो वह मानव महामानव किस श्रेणी में रखा जा सकता है। यही कारण है कि गांधी की सोहबत में रहने वाले उस वक्त के कुछ अरबपति पूरी विनम्रता के साथ गांधीजी से मिलते थे और जी खोलकर गांधी आश्रम को और उनके विभिन्न प्रकल्पों को आर्थिक मदद भी किया करते थे। विश्वकवि गुरुदेव रवींद्रनाथ नाथ ठाकुर (टैगोर)को भी गांधी समय पर हजारों रुपये की मदद भेजा करते थे क्योंकि वे भी पश्चिम बंगाल में शांतिनिकेतन जैसा महान प्रकल्प तैयार कर रहे थे।

अहिंसा और सत्याग्रह

गांधीजी का सबसे सफल मंत्र साबित हुआ सत्याग्रह और अहिंसा। इसी रास्ते पर देश का लोकतांत्रिक समाज चल रहा है। यह और बात है कि हमारा तथाकथित सिस्टम गांधी के रास्ते से भटक गया है। वह पुलिस जो अंग्रेजों के समय प्रदर्शनकारियों पर अत्याचार करती थी, आज भी शांतिपूर्वक प्रदर्शन करने वाले नागरिकों पर अत्याचार करती है । प्रदर्शनकारी भीड़ को कुचलने के लिए आज भी डंडों और गोलियों का सहारा दिया जाता है। यह लोकतंत्र

की बहुत बड़ी विफलता है कि अपने ही जन को कुचलने के लिए लाठी और गन का सहारा लिया जाय। दमन की यह प्रवृत्ति, यह हरकत गांधी दर्शन का अपमान है। जिस राष्ट्र ने गांधी को राष्ट्रपिता कहा, महात्मा माना, उसी गांधी के वचनों पर यह देश नहीं चल पा रहा। आए दिन होने वाले विभिन्न आंदोलनों को कुचलने की शर्मनाक कोशिशें होती रहती है। आज अगर गांधी जीवित होते तो पुलिस के इस विद्रूप चेहरे को देखकर आमरण अनशन पर ही बैठ जाते। गांधी जी के बारे में अंतिम वायसराय माउंटबेटन ने कहा था कि 'गांधी का जीवन इस दुनिया को शांति और अहिंसा के माध्यम से अपना बचाव करने की राह दिखाता रहेगा'।

आज पूरी दुनिया में गांधी के सत्याग्रह को आत्मसात करके लोग आंदोलन करते हैं। हालांकि वहां भी दमन चक्र चलता है लेकिन अपने देश में कुछ ज्यादा ही हिंसक तरीके से सत्याग्रह को कुचलने की कोशिश की जाती है। गांधी ने अपनी महान कृति 'हिंद स्वराज' में पाठक और संपादक की वार्तालाप शैली में जो विचार व्यक्त किए हैं वह एक सौ ग्यारह साल बाद भी तरोताजा बने हुए हैं। इस पुस्तक में गांधी पाठक भी है और संपादक के रूप में सवालों के जवाब भी दे रहे हैं। एक जगह पाठक सवाल करता है, '' आप जो कहते हैं, उस पर से मुझे लगता है सत्याग्रह कमजोर आदमियों के लिए काफी काम का है। लेकिन जब वे बलवान बन जाएं, तब तो उन्हें तोप (हथियार) ही चलाना चाहिए ।'' इस पर संपादक बने गांधी खूबसूरत उत्तर देते हैं कि ''यह तो आपने बड़े अज्ञान की बात कही। सत्याग्रह सबसे बड़ा सर्वोपरि बल है। वह जब तोप बल से ज्यादा काम करता है, तो फिर कमजोरों का हथियार कैसे माना जाएगा ? सत्याग्रह के लिए जो हिम्मत और बहादुरी चाहिए, वह तोप का बल रखने वाले के पास हो ही नहीं सकती। क्या आप यह मानते हैं कि डरपोक और कमजोर आदमी नापसंद कानून को तोड़ सकेगा? 'एक्सट्रीमिस्ट' तपोबल पशु बल के हिमायती हैं। वे क्यों कानून को मानने की बात कर रहे हैं ? मैं उनका दोष नहीं निकालता। वे दूसरी कोई बात कर ही नहीं सकते। वे जब अंग्रेजों को मार कर र ाजक रेंगे,त बअ ापसेअ ैरह मसे(जबरन)क ानून बनवाना चाहेंगे । उनके तरीके के लिए यही कहना ठीक है। लेकिन सत्याग्रही तो कहेगा कि जो कानून उसे पसंद नहीं है उन्हें वह स्वीकार नहीं करेगा, फिर चाहे उसे तोप के मुंह पर बांधकर उसकी धज्जियां उड़ा दी जाएं''। तो गांधी सत्याग्रह को इस तरह से एक गरिमा प्रदान करते हैं। कोई भी सत्याग्रही सत्य के रास्ते पर चलेगा। सत्य के लिए जीएगा, सत्य के लिए मरेगा। आज भी जो आंदोलन होते हैं, वे सत्याग्रह की परंपरा के आंदोलन हैं, लेकिन उसे तोड़ने के लिए जब लाठी या गोली चलती है, तो यह दरअसल महात्मा गांधी के ही सीने को छलनी करती नजर आती है। इसलिए लोकतांत्रिक सरकारों का दायित्व है कि वह शांतिपूर्ण तरीके से होने वाले किसी भी आंदोलन का दमन न करें । मैं तो यह बात भी कहता हूं कि अगर प्रदर्शनकारी मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री या संसद भवन का घेराव करने भी जा रहे हैं, तो उन्हें दरवाजे तक जाने देना चाहिए । यही गांधीवाद है कि जो विरोध हो रहा है , उसका भी सम्मान किया जाए। लेकिन देखा यह गया है कि प्रदर्शनकारियों को बीच में ही कहीं रोक दिया जाता है । और जब भीड़ उत्तेजित होती है, तब यह कहा जाता है कि वह उत्तेजित हो गई थी इसलिए हमें मजबूरन लाठी चलानी पड़ी या गोली चलानी पड़ी। आखिर यह नौबत आती ही क्यों है? क्यों नहीं जन भावनाओं का सम्मान करके उन्हें आंदोलन करने दिया जाता है। आंदोलन करने वाले आकाश से उतरे हुए खलनायक नहीं होते। वे इसी लोक के निवासी होते हैं जिनके अपने कुछ मुद्दे होते हैं। और वे मुद्दे जेनुइन भी होते हैं। जब उनकी बात नहीं मानी जाती, तभी आंदोलन करने पर मजबूर होते हैं। लोकतंत्र चलाने की जिम्मेदारी जिन लोगों पर है, उनका दायित्व है कि वे जन भावनाओं का सम्मान करें और उनकी समस्याओं का तत्काल निराकरण करने की कोशिश करें ताकि आंदोलन ज्यादा न खिंचे। लेकिन देखा गया है कि लोग निरन्तर आंदोलन करते रहते हैं और व्यवस्था के कानों में जूं तक नहीं रहती। यही कारण है कि अंततः शांतिपूर्ण आंदोलन हिंसक हो जाते हैं। इसलिए मेरा अपना कहना है कि गांधी के हर आग्रह को हम मंत्र की तरह आत्मसात करें। अगर ऐसा कर सकें तो कानून व्यवस्था भी सुचारू ढंग से चलती रहेगी और जनता को मिले सत्याग्रह के बुनियादी अधिकार का आदर भी होगा। और यही है गांधी का सच्चा लोकतंत्र और रामराज्य भी, जिसमें अभिव्यक्ति की पूरी स्वतंत्रता है।

(सम्पादक सद्भावना दर्पण और महासचिव, हरिजन सेवक संघ, रायपुर।)

सम्पर्क : सेक्टर -3, एचआईजी 2/2,
दीनदयाल उपाध्याय नगर, रायपुर-492010
मो. : 8770969574

विमर्श

संघर्ष की नई इबारत

अखिलेश आर्येन्दु

भारत के कई इलाके आज भी ऐसे हैं जहाँ विकास की रौशनी आजादी के 75 सालों में पहुंची नहीं है। आम आदमी जीवन बसर पारंपरिक संसाधनों से करता हैं। ऐसा ही मध्य प्रदेश के टिटौरी जिले का इलाका है जहाँ गांवों में जिंदगी बसर करने का एक मात्र सहारा आसपास के जंगल हैं। ये जंगल महज जंगल नहीं हैं बल्कि गांवों की जीवन-रेखा हैं। और इसी जीवन-रेखा की रक्षा करने वाली उजियारी बाई हैं। पारंपरिक अनाज बीज बैंक की स्थापना करने वाली उजियारी बाई किसी परिचय की मोहताज नहीं है। कहते हैं जब पेट पर लात मारा जा रहा हो, जीवन धन पर जबरन कब्जा हो रहा हो और पारंपरिक जीविका के साधन छीने जा रहे हों तो, आम दिखने वाला आदमी भी बहादुर आदमियों की तरह अपने बचाव में जान हथेली पर रख जीवन धन की रक्षा के लिए उठ खड़ा होता है। उजियारी बाई की संघर्ष की कहानी जीवन धन सुरक्षा की जीवंत कहानी है।

मध्य प्रदेश का जिला टिटौरी में समनापुर आदिवासी बहुल गांव है। इस गांव के आसपास 1500 एकड़ॅ़ूभागम ेंप ैलाज ंगलह ैज ेइ लाकेक ेल ेगोंक े अन्न-पानी और रोजगार का एकमात्र सहारा है। जंगल में बेसकीमती 43 तरह की रानभाजी, 18 तरह के कंदमूल, 12 तरह के मशरूम और 42 तरह की वनस्पतियां पाई जाती हैं। यह दिखता तो आम जंगल जैसा ही है लेकिन यह कोईस ामान्यव न-क्षेत्रन हींह ै।ि पछड़ाइ लाकाह ेनेक ी वजह से सरकारी योजनाएं यहां पांव रखने के पहले दम तोड़ देती हैं जिसका फायदा माफिया और गुंडे उठाते रहते हैं। आए दिन आम आदमी को परेशान करने और उनकी जमीन-जायजाद पर कब्जा करना आम बात है। गौरतलब है इलाके में विकास की किरण न पहुंच पाने की वजह पर कोई गौर करने वाला भी नहीं। जिसका फायदा माफिया प्रशासन की मिली भगत कर जगंल पर जबरन कब्जा कर उठाते हैं और गरीबों और मजबूर किसानों की जमीन पर कब्जा कर उन्हें कई तरह से परेशान करते हैं।

सन् 2000 में माफियाओं ने गांव समनापुर के गरीब किसानों की जमीन जबरन छीन लिया और प्रशासन के साथ मिलकर उस पर कब्जा कर लिया। किसानों की सैकड़ों बीघे जमीन पर जगंल लगा था जो गांव की जीवन-रेखा जैसा था। जगंल पर कब्जा का मतलब जंगल से मिलने वाली 43 तरह की रानभाजी, 18 तरह के कंदमूल और 42 तरह की उन जंगली वनस्पतियों से महरुम हो जाना, जो पेट् भरने, रोजगार देने, घर बनाने और दवा-दारू में काम आने वाली चीजों में सुमार थीं। जंगल उजड़ रहा था और गांव वाले खून के आंसू रो रहे थे। लेकिन अंधेरा कितना क्यों न गहरा हो उसे छांटने वाला कोई न कोई आगे आता ही है, और उस अंधेरे को छांटने के लिए समनापुर गांव की बहादुर महिला उजियारी बाई ने जान हथेली पर रख आगे आने का फैसला किया।

दांवपेच से अनजान आदिवासी गांव के लोगों में माफियाओं से सामना करने की कूबत भले न थी लेकिन वे चुपचाप बैठ, हार मानने वाले भी नहीं थे। माफियाओं के लिए आदिवासियों की जमीन और जगंल पर कब्जा करना बेहद आसान बात थी। माफियाओं ने आदिवासियों को पहले बहला-फुसला कर उनकी जमीन और जंगल पर कब्जा जमाना चाहा लेकिन वे बहकावे में नहीं आए तो, प्रशासन की मदद से वे अपने मकसद में कामयाब हो गए। आदिवासियों को उनके जंगलों से बेदखल किया गया और

जंगल पर कब्जा कर पेड़ों की कटाई शुरू कर दी गई। जब गांवों में भुखमरी फैलने लगी और प्रशासन उनकी मदद को तैयार नहीं हुआ तो गांव वालों ने माफियाओं के खिलाफ आवाज उठानी शुरू कर दी। लेकिन उनकी आवाज नक्कारखाने में तूती की आवाज बन कर रह गई। पेट और विरासत पर डाका डाला जा रहा था। परिवार के परिवार भूख की भेंट चढ़ते जा रहे थे। आदिवासियों को यह बात समझ में आ गई थी कि जब तक किसी के नेतृत्व में गांवों के सभी लोगों के जरिए माफियाओं के खिलाफ उनके काले कारनामों को देश में चर्चा का विषय नहीं बनाया जाएगा, तब तक बात बनने वाली नहीं है।

और उजियारो बाई ने माफियाओं के खिलाफ आंदोलन का नेतृत्व संभाला और माफियाओं के खिलाफ आंदोलन शुरू कर दिया। कहा जाता है कितना भी घना अंधियारा हो यदि उसके खिलाफ इंसाफ की मसाल उठा ली जाए तो अंधियारे की रीढ़ तोड़ना नमुमकिन नहीं। उजियारो बाई ने सब को साथ ले माफियाओं के खिलाफ आंदोलन शुरू किया तो, संघर्ष बढ़ता गया और अंधियारे की कमर टूटने लगी। माफियाओं के खिलाफत की आवाज अब क्रांति की धधकती ज्वाला में बदल चुकी थी। उजियारो बाई का संघर्ष लोगों को हौसला देने और माफियाओं से जंगल मुक्त कराने में मील का पत्थर साबित होने लगा।

माफियाओं ने जंगल पर कब्जा करने के लिए सबसे पहले जंगल को आग के हवाले कर दिया। इससे लाखों वनस्पतियां जल कर राख हो गई। यह समनापुर गांव के लिए किसी प्रलय से कम नहीं था। लेकिन लोकतंत्र में बहुत वक्त तक अंधेरगर्दी किसी की नहीं चलती, उसके हाथ भले ही कितने बड़ें हों। उजियारो बाई के आंदोलन के मसाल की रौशनी दो दशकों के लम्बे संघर्ष के बाद मध्य प्रदेश से बाहर भी दिखाई पड़ने लगी। तब प्रशासन को उजियारो बाई की बात को तवज्जो देनी ही पड़ी। प्रशासन झुका तो जंगल भी मुक्त होने लगा। जो वनस्पतियां आग से जल चुकी थीं वहां फिर से हौसले की हरियाली ने चारों तरफए कख ुशनुमाम ाहौलप ैदाक र ि दया।ज ोज लस्रोत सूख चुके थे उन जल स्रोतों में फिर पानी की धाराएं बहने लगीं। उजियारो बाई के हार न मानने वाले संघर्ष और एकता के जादू से नमुमकिन दिखने वाला मकसद मुमकिन हो गया और पसरे अंधियारे की कमर तोड़ डाली गई।

संघर्ष और आंदोलन से कई तरह के अनुभव हुआ करतेह ैं।उ जियारोब ाईभ ालेप ढ़ी-लिखीन हींह ैल ेकिन हौसला जब बुलंद हो तो अशिक्षा मकसद की कामयाबी में आड़े नहीं आती। और 20 साल के लम्बे संघर्ष के बाद जगंल मुक्त कराने में उजियारो बाई को कामयाबी मिली। फिर शुरू किया गांव की गरीबी दूर करने के लिए एक नया उजियारा लाने का कार्य परंपरागत बीज बैंक की स्थापना का कार्य। मोटे अनाजों के जरिए बनाया गया बीज बैंक गांवों की गरीब जनता को खाने के लिए खाद्यान्न मुहैया कराया। इनमें कोदो-कुटकी, रागी, सायल, सिकिया, सलार, ज्वार और बाजरा शामिल है। महज दस महिलाओं से शुरू किया गया महिला समूह आज 52 गाँवों के 1500 महिलाओं का समूह बन चुका है। पारंपरिक बीजों से तैयार यह बैंक लाखों बेरोजगार महिलाओं के लिए रोजगार पाने और उनके लिए प्रेरणा देने का कार्य कर रहा है। जिस जिले और गांव की कोई खास अहमियत नहीं थी, वह एक महिला की बहादुरी और सूझबूझ से प्रदेश में ही नहीं बल्कि देशभर में चर्चा में ही नहीं आया बल्कि लाचार लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया है। कहते हैं नाम की सार्थकता जब व्यक्ति के काम से होने लगे तो वह नाम समाज के लिए आदर्श बन जाता है। उजियारो बाई आज महिलाओं के लिए ही नहीं प्रेरणा देने वाला नाम है बल्कि समाज का हर वर्ग इससे संघर्ष करना सीख रहा है। आज समाज में ऐसी तमाम उजियारो बाई की जरूरत है जो हर तरह की समस्याओं से डट कर मुकाबला कर पाएं और गरीवी व गर्दिश में समाज में उजियारा लाने का काम बहादुरी से कर लोगों के लिए मिसाल बन जाएं।

(लेखक साहित्यकार और स्वदेशी जन आंदोलनों से जुड़े सामाजिक कार्यकर्ता हैं)

सम्पर्क: A-11, त्यागी विहार नांगलोई,
दिल्ली - 110041
मो०- 9868235056

स्मरण

ठक्कर बापा: गुमनामी और लोकप्रियता के मध्य

विवेक कुमार राय

ठक्कर बापा एक ऐसे समाजसेवी थे जिन्होंने भारत के अनेक प्रान्तों में संगठित रूप से हाशिए पर रहने वाले समाज के लिए जीवनपर्यंत कार्य किया। उनका कार्य क्षेत्र इतना व्यापक था जो कि कई समुदायों से प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सम्बंधित रहा। अफसोस की बात ये है कि आजादी के 75 साल बाद उनके योगदान और विरासत को भुला दिया गया। जबकि उन्होंने अपने जीवन को सामाजिक कार्यों के लिए समर्पित कर दिया था लेकिन उनके प्रयासों के बारे में बहुत कम लिखा गया हैं। जबकि देश के विभिन्न भागों में पड़े अभिलेखीय दस्तावेज एक ऐसी दास्तां बयां कर रहे हैं कि ठक्कर बापा ने अपने जीवन काल में कई जातियों और समुदायों के लिए सराहनीय काम किया जिसमें ''भील'', ''डोम'' और ''मुसहर'' आदि हैं। उनके कार्यो की व्यापकता के मद्देनजर प्रस्तुत आलेख चार खण्डों में विभक्त किया गया हैं। आलेख के प्रथम खंड में ठक्कर बापा के आरंभिक जीवन को संक्षिप्त में रेखांकित किया गया हैं।

द्वितीय खंड में ठक्कर बापा के योगदान को आदिवासी समुदाय के संदर्भ में रेखांकित किया गया हैं। तृतीय खंड में पूना पैक्ट और उनकी पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला गया है जिसमें महात्मा गांधी, बाबा साहेब अंबेडकर, ठक्कर बापा और हरिजन सेवक संघ शामिल हैं। चतुर्थ खंड में ठक्कर बापा के योगदान को बिहार के संदर्भ में समझने की कोशिश की गई है जहां वो सामाजिक और नीतिगत फैसले में दलित समुदाय के लिए प्रयास करते दिख रहे हैं ।

आरंभिक जीवन

ठक्कर बापा का वास्तविक नाम अमृतलाल विट्ठलदास ठक्कर था। उनका जन्म सौराष्ट्र (गुजरात) में सन् 1869 में 29 नवंबर को हुआ था। उनके पिता जी का नाम विट्ठल दास ठक्कर और माता जी का नाम मुलीमा! पिता व्यवसाय करते थे। पूना से तकनीकी शिक्षा प्राप्त करके ए. वी. ठक्कर ने इंजीनियर के रूप में नौकरी की। उनको अफ्रीका भी जाने का मौका मिला जहां वो एक इंजीनियर के रूप में रेलवे में काम किये थे। उसके बाद ठक्कर बापा मुंबई में म्युनिसिपैलिटी में नौकरी किए। कालांतर में ए. वी. ठक्कर ने इस्तीफा दे दिया। उन्होंने बहुत रोचक तरीके से पत्र लिखते हुए

पूना से तकनीकी शिक्षा प्राप्त करके ए. वी. ठक्कर ने इंजीनियर के रूप में नौकरी की। उनको अफ्रीका भी जाने का मौका मिला जहां वो एक इंजीनियर के रूप में रेलवे में काम किये थे। उसके बाद ठक्कर बापा मुंबई में म्युनिसिपैलिटी में नौकरी किए। कालांतर में ए. वी. ठक्कर ने इस्तीफा दे दिया। उन्होंने बहुत रोचक तरीके से पत्र लिखते हुए अपने भाइयों को अवगत कराया की मैंने नौकरी छोड़ दिया हूं।

अपने भाइयों को अवगत कराया की मैंने नौकरी छोड़ दिया हूं। नौकरी से मोह भंग होने के बाद ए वी ठक्कर ने गोपाल कृष्ण गोखले के संगठन ''सर्वेंट ऑफ इंडिया सोसाइटी'' को 1914 में ज्वाइन कर लिया। इससे पहले की उनके आरंभिक कार्यों पर प्रकाश डाला जाये, ''सर्वेंट ऑफ इंडिया सोसाइटी'' के बारे में संक्षेप में जानना जरूरी है ।

उस दौर में सोसाइटी स्कॉलर और वर्कर्स की नर्सरी थी, (एस डी पी 1955)। ''सोसाइटी'' समाज से सरोकार रखने वाले मसलों पर अभियान चलाती थी जैसे शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित करना, सफाई रखना, मद्य निषेध, घरेलू हिंसा से महिलाओं को बचाना, अश्पृष्यता का विरोध करना। इस सोसाइटी की स्थापना 1905 में हुआ था जिसका गठन एक ''कुलीन'' राजनीतिक स्वयंसेवियों को ध्यान में रख के किया गया था, (श्रीवत्सन 2006)। गोखले और बी जी तिलक उस समय के बड़े नेताओं में शुमार करते थे। ए वी ठक्कर गोखले के सानिध्य में रहे । बॉम्बे म्युनिसिपैलिटी के नौकरी को छोड़ते हुए वो अपने भाइयों को लिखते हैं: मैंने नौकरी छोड़ते हुए किसी से सलाह-मशवरा नही लिया, ये उनका अंतरात्मा का आवाज हैं, जिसने इस्तीफा देने पर बाध्य किया। वो आगे लिखते हैं कि, भारत को समर्पित वर्कर की आवश्कता हैं न की अंशकालिक वर्कर्स की, (श्रीवत्सन 2006)। इस संस्थान के साथ काम करते हुए ठक्कर बापा समाज से सरोकार रखने वाले कार्यों में संलग्न रहे ।

ठक्कर बापा और आदिवासी समाजः

सन् 1922 में ठक्कर बापा ''भील सेवा मंडल'' की स्थापना करते हैं जिसका उद्देश्य भील समुदाय का उत्थान करना था। भारत सरकार ने भील समुदाय को अनुसूचित जन जाति के कैटेगरी में रखा हैं। औपनिवेशिक सत्ता ने इस समुदाय को ''क्रिमिनल ट्राइब्स'' घोषित किया था। उनके पास ''क्रिमिनल ट्राइब्स'' घोषित करने के अपने मापदंड होते थे जैसे उस समुदाय के लोगों के आवागमन को रोकना या नियंत्रित करना, थाना और चौकीदारों की सहायता से पूरे समुदाय को सर्विलांस करना। जिससे समुदाय को बहुत अत्याचार सहना पड़ा था। विजय कोरा लिखते हैं कि समूहों में मुख्यता घूमने वाले और भूमि रहित समुदाय थे जिनका जीविका भी घूमने पर निर्भर करता था, (कोरा 2017) । समाज में ऐसे समुदाय पहले से ही गरीबी और सामाजिक बहिष्कारक ेद ंशझ ेलर हेथ ो।' 'क्रीमिनलट ्राइब''श ाब्द एक ''कोलोनियल कंस्ट्रक्ट'' हैं जो किसी भी समुदाय के योगदान की तौहीन करता हैं। कालांतर में सत्ताशीन शक्तियां ऐसे समुदायों का नामकरण करती रही जिसमें उन समुदायों से कभी मशवरा नहीं किया गया कि उनका क्या विचार हैं। हाल ही में प्रकाशित अपने शोधपत्र में, रमाशंकर सिंह लिखते है कि ''नोमेडिक'' समुदाय का शोषण स्वतंत्रताक ेप हलेअ ैरब ादम ेध ीच लतार हा।अ ैरय ेसमुदाय अभी भी भारतीय लोकतंत्र में अपनी भागदारी सुनिश्चित नहीं कर पाए हैं ।

रामचंद्र गुहा लिखते हैं की ''भील सेवा मंडल की स्थापना'' 1923 में किया गया था जो मुख्य रूप से विद्यालय और अस्पताल का संचालन किया। इसके साथ साथ ठक्कर बापा ने सूदखोरों और संबध अधिकारियों को चुनौती दिया जो भील समुदाय का शोषण कर रहे थे। वाई के अलघ लिखते हैं कि ''भील सेवा मंडल'' ने कई स्वैच्छिक संस्थाओं को सामाजिक कार्यों को करने के लिए प्रेरित किया, आदिवासी समाज के लिए एक कमेटी बनाई गई जिसकी अध्यक्षता ठक्कर बापा ने 1927 में किया जिसकेस दस्यछ गनज ेशी,न रहरीप ारेखज ैसेल ेगथ ो। ठक्कर बापा ये बताने की कोशिश करते थे कि समाज के सशक्त लोगो ने क्या गलत किया हैं आदिवासी समाज के परिप्रेक्ष में।

बैरियर एल्विन के नोट का हवाला देते हुए, रामचंद्र गुहा लिखते हैं कि एक बार गांधी से पूछा गया कि आप आदिवासी समाज पर इतना कम ध्यान क्यों देते हैं?

गांधी ने उत्तर दिया, ''मैं इसका सारा काम ए. वी. ठक्कर को सौंपता हूँ''। रामचंद्र गुहा लिखते हैं कि ठक्कर बापा निःसंदेह एक सत्यनिष्ठ, साहसी और प्रतिबद्ध इंसान थे; ये ठक्कर बापा ही थे जो बैरियरएल्विन को प्रेरित किए की वो गोंड समुदाय के लिए कार्य करे, (गुहा 1996)। रामचंद्र गुहा आगे लिखते हैं कि ''गोंड सेवा मंडल'' पहले गांधीवादी विचार से प्रभावित था जिसमे खादी वस्त्र, शिक्षा और मद्यनिषेध पर ज्यादा जोर था। एल्विन बापा से मशविरा लेते रहते थे। कालांतर में बैरियर एल्विन और ठक्कर बापा में आदिवासी समाज के उत्थान के तरीकों को लेकर

मतभेद उभर कर सामने आया जिसमें एल्विन ''आइसोलेशन'' की बाते करते थे और ठक्कर बापा ''एसिमिलेशन'' की। ठक्कर बापा आजादी के बाद कई सरकारी समितियों से संबध रहे।

पूना पैक्ट, हरिजन सेवक संघ और ठक्कर बापा:

भागीदारी और पहचान की राजनीति को समझने के लिए 1930 का दशक बहुत महत्वपूर्ण हैं, मुख्य रूप से ''डिप्रेस्ड कास्ट्स'' के संदर्भ में जिसमें पूना पैक्ट एक निर्णायक मोड़ हैं, (जोधका 2021)। जैसा कि हम सब जानते है ''डिप्रेस्ड कास्ट्स '' के राजनीतिक भागीदारी के सवाल पर गांधी और अंबेडकर के मध्य द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में मतभेद उभर के सामने आ गए थे। अंबेडकर ''डिप्रेस्ड कास्ट्स'' के लिए अलग चुनाव क्षेत्र (separate electorate) का बात कर रहे थे और गांधी इसका विरोध क्योंकि गांधी इन समुदायों को हिंदू धर्म का अभिन्न अंग मानतेथ ो(बासु2 001;ग ुरु2 017),ज बकिय ेस मुदाय छुआछूत और विभिन्न प्रकार के अत्याचारों से जूझ रहे थे, इस पृष्ठभूमि में गांधी ने पूना (पुणे) में आमरण अनशन शुरूक र दियाअ ैरउ सकेब ादए कस हमतिब नीद ेनों नेताओं के बीच जिसको पूना पैक्ट के नाम से जानते हैं।

पूना पैक्ट के बाद ही गांधी ने ऑल इंडिया एंटी अनटचौबिल्टी लीग की स्थापना 30 सितंबर 1932 को अश्पृष्यता निवारण के लिए किया, कालांतर में इसका नाम बदल दिया और ये ''हरिजन सेवक संघ'' बन गया जिसका मुख्यालय दिल्ली में किंगस्वे कैंप में स्थित हैं। संघ के प्रथम प्रेसिडेंट घनश्याम दास बिड़ला थे तथा ए. वी. ठक्कर को प्रथम सेक्रेटरी मनोनीत किया गया । गांधी जी इस संगठन से व्यक्तिगत रूप से जुड़े हुए थे। इस पृष्ठभूमि में अभिलेखीय साक्ष्य ये बताते हैं कि गांधी के अष्पृष्यता निवारणप्र यास' 'हरिजनस ेवकस ंघ''क ाप्र मुखए जेंडा बन गया। जिसका देश के आजादी से सरोकार था। धीरे धीरे ''हरिजन सेवक संघ'' स्वतंत्रता आंदोलन का अभिन्न अंग बन गया, स्वतन्त्रता सेनानियों के लेख, भाषण, यात्रवृतांत् ''हरिजन सेवक संघ'' के मुख पत्र, ''हरिजनसेवा'',में प्रकाशित होने लगा। इस पत्रिका को पढ़ने पर ऐसा आभास होता हैं कि ठक्कर बापा गांधी के विचारों को और सारगर्भित तरीके से प्रकाशित और प्रेषित करते थे ।

''हरिजन सेवक संघ'' ठक्कर बापा के नेतृत्व में और गांधी जी के संरक्षण में एक राष्ट्रीय स्वरूप ले लिया, संगठन ने सरकारों का ध्यानाकर्ष किया समय समय पर, ये मसले वंचित समाज के मंदिर में प्रवेश से लेकर उनके शिक्षा और छुआछूत से जुड़े हुए थे। हरिजन सेवक संघ दिल्ली से शुरू होकर कई प्रदेश में अपने स्थानीय शाखाएं खोली जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, तमिलनाडु। ''हरिजन सेवा'' को पढ़ने से यह प्रतीत होता है की इन प्रांतों में दलित समुदाय के मसले काफी अलग - अलग और चिंताजनक थे। ये स्थानीय केंद्र, मुख्यालय से जुड़ा रहता था, एक संपर्क बना रहता था, जब कोई मुख्यालय से, सेक्रेटरी या प्रेसिडेंट, किसी राज्य का दौरा करते तो उनके क्रियाकलापों को संक्षेप में प्रकाशित किया जाता था।

बिहार में ठक्कर बापा:

आजादी के बाद बिहार सरकार ने ''बिहार हरिजन इंक्वायरी कमिटी'' का गठन 1951 में किया जिसमें ठक्कर बापा को चेयरमैन बनाया गया। कमेटी की रिपोर्ट को विधानसभा में रखा गया। जगलाल चौधरी उस समय बिहार सरकार के कल्याण मंत्री थे। बिहार में जगलाल चौधरी कांग्रेस के बड़े नेता थे जो स्वाधीनता आन्दोलन में अभूतपूर्व योगदान दिए थे, और उनका ठक्कर बापा से घनिष्ठ संबंध था। अंतरिम रिपोर्ट उस समय में दलित समुदाय के स्थिति को रेखांकित करती हैं। रिपोर्ट के अनुसार ''मुसहर'', ''डोम'' और ''मेहतर'' जातियों को स्थिति संपूर्ण अनुसूचित जाति समूह में सबसे चिंताजनक हैं, इन जातियों के बच्चों और बच्चियों को वरियता मिलना चाहिए मुख्य रूप से शिक्षा में, कमजोर वर्ग के बच्चों के लिए वजीफा का भी प्रावधान होना चाहिए, इन समुदाय के बच्चों को मुख्य रूप से आवासीय विद्यालय बनाना चाहिए, (बिहार हरिजन इंक्वायरी कमिटी रिपोर्ट)। ठक्कर बापा के अध्यक्षता वाली कमेटी ये प्रस्तावित करती हैं कि अनुसूचित जाति के बच्चों के लिए रोजगारपरक शिक्षा होना चाहिए ।

इस पृष्ठभूमि में मैं एक प्रसंग का जिक्र करना चाहता हूँ जिसमें ए. वी. ठक्कर राजेंद्र प्रसाद को एक पत्र

लिखते हैं (26 जुलाई 1937 को किंग्सवे कैंप स्थित हरिजन सेवक संघ से) जिसमे ठक्कर बापा बिहार में मुख्य रूप से डोम समुदाय के विकट स्थिति पर प्रकाश डालते हैं। वह इंदु लाल याग्निक का हवाला देते हुए कहते हैं कि इस समुदाय की स्थिति विशेषकर सफाई कर्मचारियों कि स्थिति बहुत दयनीय हैं और वो राजेंद्र प्रसाद से उम्मीद करते हैं इसपे त्वरित करवाई करें, (Dr Rajendra Prasad: Correspondence and Select Documents] Vol 1)

पत्रम ेंठ क्करब ापाड ोमस मुदायक ों 'क्रिमिनल ट्राइब''घ ोषितक रनेप रस ख्तअ ापत्तिक रतेह ैं,ए .व ी. ठक्कर लिखते हैं की याग्निक ने पत्र के माध्यम से ये बताया है कि सफाई कर्मचारियों को प्रतिदिन थाने में उपस्थिति दर्ज करनी होती हैं क्योंकि सरकार ये मानती हैं कि ये छिटपुट चोरियों में शामिल होते हैं।

ठक्कर बापा अपने अनुभव को साझा करते हुए इस पत्रम ेंि लखतेह ैंि कक योंड ोमस मुदायक ेस दस्योंक ो क्रिमिनल घोषित किया गया हैं, और सरकार उन्हें क्रिमिनल की तरह व्यवहार करती हैं, उन्हें हर रात थाने में उपस्थिति दर्ज करनी होती हैं, ठक्कर बापा कांग्रेस की सरकार से उम्मीद करते हैं कि वो इन लोगों को इन लोगों को रिलैक्सेशन दे और उदारता से पेश आए।

बिनाव क्तज ायाक रतेह ुए,र ाजेंद्रप्र सादस दाकत आश्रम (बिहार कांग्रेस का मुख्यालय) से लिखते हैं कि ये समुदाय दो भागों में बटा हैं जिसमें एक वर्ग छिटपुट चोरी में लिप्त हैं ये (क्रिमिनल ट्राइब) में आता है जबकि दूसरा वर्ग म्युनिसिपैलिटी में सफाई कर्मचारी का काम करता हैं। पत्र के अंतिम भाग में राजेंद्र प्रसाद ठक्कर बापा को आश्वस्त करते हैं किये पत्र श्री कृष्ण सिंह को अग्रसित किया जाएगा जो कि बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री हैं।

राजेंद्र प्रसाद को लिखे एक दूसरे पत्र में ठक्कर बापा कहतेह ैंि कअ ापम ंदिरप्र वेशव ार्ले बलप रख ुदरु चि लीजिए क्योंकि ये मसला दलित जातियों से जुड़ा हुआ हैं। ये पत्र वो 6 फरवरी 1939 को लिखते हैं। इस पृष्ठभूमि में यह बताना प्रासंगिक हैं कि मंदिर प्रवेश मूवमेंट कई प्रांतों में चलर हाथ ााअ ैरि बहाराइ ससेअ छूतान हींप रज ातिगत भेदभाव अत्यंत स्पष्ट था जिसमें समाज भिन्न-भिन्न जातियों में बटा हुआ था।

उम्र बढ़ने के बाद भी ठक्कर बापा यात्रा बहुत करते थे, उनके यात्रा के वर्णन ''हरिजन सेवा'' में मिलता हैं। जिससे विभिन्न समुदायों के आर्थिक और सामाजिक स्थति से अवगत होया जा सकता हैं। ठक्कर बापा का महात्मा गांधी से घनिष्ठ सम्बन्ध थे लेकिन उनके अपनी व्यक्तिगत विचार होते थे विभिन्न मसलों पर। ''हरिजन सेवक संघ'' के पत्रिकाएं तथा ठक्कर बापा के पत्र काफी कुछ बताते हैं। ए. वी. ठक्कर सबको प्रेरित करते रहते थे ताकि अश्पृष्यता और गरीबी जैसे सवाल को चुनौती दिया जाए। अंत में प्रेरित करते हुवे ठक्कर बापा 20 जनवरी 1941 को विदा हो गए स ऐसा प्रतीत होता हैं कि ठक्कर बापा जैसे महानुभाव आज के भारत में गुमनामी और लोकप्रियता के मध्य हिचकोले खा रहे हैं ।

संदर्भः

Alagh, Y- K-(1998)- Rehabilitation and Relocation Analysis: Comments from an Indian Perspective] Sociological Bulletin, Vol- 47, Issue No- 2

Basu, S- (2001)- The Poona Pact and the issue of Dalit representation, Proceedings of the Indian History Congress, 2000 & 2001, Vol- 61, Part One: Millennium (2000 & 2001)

Choudhary, V-(1985)- Dr Rajendra Prasad: Correspondence and Select Documents, Vol- 1, Allied Publisher Private Limited

Government of Bihar: The Report of the Bihar Harijan Enquiry 1951

Guha, R- (1996)- Savaging the civilised: Verrier Elwin and the tribal questions in late colonial India, Economic and Political Weekly, Vol- 31, Issue No- 35&37

Guru] G- (2017)- Ethics in Ambedkar*s critique of Gandhi] Economic and Political Weekly, Vol- LII, Issue No- 15

Jodhaka, S-S-(2021)- Kanshi Ram and the making of Dalit political agency: Leadership legacies and the politics of Hissedari, Economic and Political Weekly, Vol- LVI, No- 3

Korra, V- (2017)- Status of Denotified Tribes: Empirical Evidence from Undivided Andhra Pradesh, Economic and Political Weekly, Vol- 52, Issue No- 36

SDP (1955)- Economic Weekly

Singh, R- S- (2021)- Criminalisation of political mobilisation of nomadic tribes in Uttar Pradesh, Economic and Political Weekly, Vol- 56, Issue No- 36

https://vskbharat-com/thakkar&bapa/\lang¾en

संपर्कः- प्रथम तल, 126,

ब्लॉक-बी सेक्टर-22,

नियर-नोएडा-201301

बातचीत

निशिकांत कोलगे से मनोज मोहन की बातचीत

हमारे समाज में नायकों की कोई कमी नहीं है, गांधी, अम्बेडकर, भगत सिंह और कई अन्य नेताओं की यादें हमारे समाज में जीवित हैं।

प्रश्न: गांधी को परंपरा और आधुनिकता के आलोक में देखें तो मौजूदा समय-संदर्भ में उनकी क्या प्रासंगिकता दिखाई देती है?

उत्तर: यह क्रांति है कि गांधी ने आधुनिकता को बनाए रखने वाली हर चीज को खारिज कर दिया और पारंपरिक जीवन शैली को अपनाया। यह एक तथ्य है कि गांधी मानते थे कि आधुनिकता मानव समाज की हर समस्या का रामबाण इलाज नहीं है। गांधी यह भी मानते थे कि केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी को थोपने से किसी व्यक्ति या समाज के विवेक में मूलभूत परिवर्तन नहीं होंगे। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि गांधी ने आधुनिकता की हर चीज की निंदा की। उन्होंने बहुत स्पष्ट रूप से कहा: ''एक पल के लिए भी यह मत समझो कि मैं उस सब की निंदा करता हूं जो पश्चिमी है। फिलहाल मैं आधुनिक सभ्यताक ेप्र मुखच रित्र',य ानी' पृथ्वीक ेक मजोरज ातियोंक ेश ोषण'स े नपटर हाह ूँ''।इ सका मतलब यह भी नहीं है कि वह परंपराओं, विशेष रूप से हिंदू परंपराओं की दमनकारी प्रवृत्ति से अच्छी तरह वाकिफ नहीं थे, और वर्चस्व और दमन के पारंपरिक तरीकों के भी कम विरोधी नहीं थे। भीखूपारेख कहते हैं: ''सदियों से हिंदू अस्पृश्यता की कुप्रथा के साथ जीते थे उसने उस पर युद्ध की घोषणा की और उसकी नैतिक जड़ें हिला दीं।'' पारेख आगे कहते हैं: ''परंपरागत रूप से महिलाओं का भारत में निम्न स्थान था; वह न केवल उनमें से एक बड़ी संख्या को सार्वजनिक जीवन में लाए, जो न तो लेनिन और न ही माओ कर सके, और पुरुषों के साथ उनकी समानता स्थापित की''। इसलिए, गांधी की आधुनिक सभ्यता की आलोचना, चाहे कितनी भी गंभीर क्यों न हो, को न तो आधुनिक या पश्चिमी सभ्यता के नाम से जाने वाली हर चीज की पूर्ण अस्वीकृति के रूप में देखा जाना चाहिए, और न ही भारत के प्राचीन अतीत के महिमामंडन के रूप में देखा जाना चाहिए। और इसलिए, यदि हम गांधी को आधुनिकता और परंपरा के नजरिए से देखें, तो उनका विचार बहुत प्रासंगिक प्रतीत होता है क्योंकि वह गांधी ही थे जो यह देख सके कि परंपरा और आधुनिकता विपरीत श्रेणियाँ नहीं हैं जो एक दूसरे को नकारती हैं और दोनों मानव का शोषण और मुक्ति संभव है जीवन के इन्हीं दोनों तरीकों में।

प्रश्न: वर्तमान समय में हम आस्था के एक गहरे संकट से गुजर रहे हैं। गांधी का तत्कालीन बौद्धिक-वैज्ञानिक-सांस्कृतिक हलकों पर गहरा प्रभाव था। आज सार्वजनिक जीवन में कोई व्यक्तित्व ऐसा दिखाई नहीं पड़ता जो समय और समाज के आचरण को सकारात्मक दिशा दे सके। आप इस स्थिति को किस तरह देखते हैं?

उत्तर: यह सच है कि इस समय हम आस्था के गहरे संकट से गुजर रहे हैं और सार्वजनिक जीवन में कोई भी व्यक्तित्व नहीं है जो हमारे समाज के आचरण को सकारात्मक दिशा दे सके। यह वास्तव में चिंता का एक वास्तविक कारण है और गंभीर सोच का विषय है। लेकिन यह मुझे परेशान नहीं करता है।

हमारे समाज में नायकों की कोई कमी नहीं है, गांधी, अम्बेडकर, भगत सिंह और कई अन्य नेताओं की यादें हमारे समाज में जीवित हैं। मेरे लिए चिंता का विषय यह है कि हम अपने नायकों की ऐतिहासिक यादों को उनके अनुयायियों की गैर-आलोचनात्मक आराधना और रूढ़िवादी ताकतों द्वारा अनुचित समायोजन से कैसे बचा सकते हैं। क्योंकि पहला हमें उनके विचारों के साथ आलोचनात्मक जुड़ाव से हतोत्साहित करता है। यह उन्हें ऐतिहासिकता से वंचित करता है, और उन्हें एक कालातीत व्यक्ति में बदल देता है, जिसके विचारों को प्रासंगिक बनाने और/या बदलती ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुकूल होने की आवश्यकता नहीं है। और दूसरा रूढ़िवादी ताकतों को केवल उनका नाम लेने मात्र से उनकी विचारधारा के लिए कुछ हद तक स्वीकार्यता प्रदान करने में मदद करता है। मेरा मानना है कि यह हमारे बीच गांधी जैसे अनुकरणीय नेता की अनुपस्थिति से कहीं अधिक गंभीर संकट है।

प्रश्न: गांधी हिंदू होते हुए भी दूसरे धर्मानुयायियों का आत्मिक स्तर पर सम्मान करते थे। उनका हिंदू होना दूसरे के स्वीकार में बाधक नहीं था। उनके इस गुण से आज क्या सीखा जा सकता है?

उत्तर: धर्म गांधी के निजी जीवन और उनकी राजनीति के केंद्र में था। वे मूल रूप से हिंदू थे लेकिन धर्मिक सहिष्णुता में विश्वास रखते थे। सवाल यह नहीं है कि हम गांधी के इस गुण से क्या सीख सकते हैं, सवाल यह है कि क्या हम यह समझ सकते हैं और क्या हम उस प्रक्रिया का अनुकरण करने के लिए तैयार हैं जो गांधी को मूल रूप से हिंदू लेकिन धर्मिक सहिष्णुता में विश्वास करने वाला बनाती है। गांधी का धार्मिक विश्वास उनके स्वयं के कठिन परिश्रम और अनुभवों का परिणाम था बजाय किसी प्राचीन ग्रंथों या धर्मगुरु से प्राप्त। अपने पूरे जीवन में उन्होंने हमेशा नए तरीकों से अपने विश्वास और प्रथाओं को परिभाषित और संशोधित किया। वह समझते थे कि अनुष्ठान और धार्मिक प्रथाएं नहीं, बल्कि प्रत्येक जीवित प्राणी के लिए सम्मान और प्रेम, और जीवन में अनुशासन के लिए शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धता बनाए रखना धर्म के मुख्य घटक है। यह उन्हें धर्म के नाम पर किए जाने वाले तर्कहीन और अनैतिक प्रथाओं की आलोचना करने और हर धर्म में मौजूद नैतिक और तर्कसंगत प्रथाओं को स्वीकार करने का साहस देता है। सामान्य रूप से धर्म और विशेष रूप से हिंदू धर्म के बारे में उनकी इस तरह की समझ को रूढ़िवादियों ने खारिज कर दिया था, लेकिन वे आलोचनाओं से कभी हिलते नहीं थे और हमेशा अकेले चलने के लिए तैयार रहते थे। आज हम गांधी से सीख सकते हैं कि धार्मिक सहिष्णुता कोई पृथक गुण नहीं है, हम तार्किक, नैतिक और निडर बनकर ही धार्मिक सहिष्णु बन सकते हैं।

प्रश्न: आज जिस भारतीय सभ्यता को आदर्श मान लिए जाने का हिंसक आग्रह किया जा रहा है, उसे निष्प्रभावी करने में गांधी किस प्रकार हमारी मदद कर सकते हैं ?

उत्तर: यह सच है कि आज भारतीय सभ्यता को एक आदर्श के रूप में लेने के लिए हिंसक आग्रह किए जा रहे हैं और कभी-कभी इस तरह के आग्रह को सही ठहराने के लिए गांधी का नाम भी लिया जाता है। इस तरह के आग्रह को सही ठहराने के लिए गांधी का नाम लेने का कारण है। गांधी ने भारतीय सभ्यता में सुधार के लिए अपने आंदोलन को एक पुनरुत्थानवादी आंदोलन के रूप में पेश किया- 'मूल भारतीय सभ्यता मूल्यों' को बचाने का आंदोलन ना कि एक क्रांतिकारी आंदोलन के रूप में जिसका उद्देश्यन एय ाअ ाधुनिकम ूल्योंक ोअ पनाकरप ुरानीप रंपराओंक ोन ष्टक रनाथ ाा।अ बय हह मारी जिम्मेदारी है कि हम इस बात को उजागर करें कि गांधी ने रणनीतिक कारणों से ऐसा किया। क्योंकि गांधी इस तथ्य से अच्छी तरह वाकिफ थे कि इस तरह के हिंसक आग्रहों का प्रभावी रूप से विरोध केवल भारतीय समाज में आधुनिक विज्ञान और आधुनिक तकनीक को पेश करने से नहीं किया जा

सकता है। और वे यह भी जानते थे कि भारतीय सभ्यता की रक्षा के लिए इस तरह के हिंसक आग्रह भारतीय समाज के आधुनिकीकरण की ऐसी प्रक्रिया के खिलाफ ही किए जा रहे हैं। अब हमें लोगों को यह बताने की जरूरत है कि हालांकि गांधी भारतीय सभ्यता को महत्व देते थे, लेकिन अंतिम विश्लेषण में वे ऐसे किसी भी आंदोलन के खिलाफ थे जो भारतीय सभ्यता को या किसी भी सभ्यता को एक आदर्श के रूप में पेश करता हो। अपने तरीके से, वह न केवल भारतीय सभ्यता की रूढ़िवादी हिंदू अवधारणा और भारतीय सभ्यता को एक आदर्श के रूप में पेश करने के सभी हिंसक आग्रहों को चुनौती दे रहे थे, बल्कि इसे अपने स्वयं के वैकल्पिक दृष्टिकोण से बदलने की भी मांग कर रहे थे। यह हमारा कर्तव्य है कि हम सभी को बताएं कि गांधी की सभ्यता या समाज का वर्गीकरण भूगोल (अर्थात पश्चिमी, पूर्वी या भारतीय सभ्यता) या समय (अर्थात आधुनिक या प्राचीन सभ्यता) के आधार पर नहीं था। उनकी श्रेणियाँ नैतिक थीं और वे 'सच्ची सभ्यता' बनाम 'झूठी सभ्यता' या 'अच्छी सभ्यता' बनाम 'बुरी सभ्यता' के संदर्भ में बोल रहे थे। अधिक विशेष रूप से, वह इस संदर्भ में बोल रहे थे कि एक सभ्यता क्या होनी चाहिए। इसलिए, इन हिंसक आग्रहों का प्रभावी ढंग से विरोध करने के लिए, हमें इस बात पर जोर देने की जरूरत है कि गांधी भारतीय सभ्यता की रूढ़िवादी हिंदू अवधारणा के लिए नहीं बल्कि विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यतागत मूल्यों के संश्लेषण के लिए खड़े थे। उन्होंने कहा, ''मैं नहीं चाहता कि मेरा घर चारों तरफ से दीवारों से घिरा हो और मेरी खिड़कियाँ बंद हों। मैं चाहता हूँ कि मेरे घर के चारों ओर सभी देशों की संस्कृतियों को यथासंभव स्वतंत्र रूप से प्रसारित किया जाए।''

प्रश्न: गांधी-विचार को हम समग्र दृष्टिसंपन्न मान लें तो वर्तमान की उहापोह से निकलकर हम कैसे भारत की ओर बढ़ेंगे...

उत्तर: गांधी के विचारों को मानव समाज के लिए समग्र दृष्टिसंपन्न के रूप में स्वीकार करना गैर-गांधीवादी होगा और यह केवल समृद्ध गांधीवादी विचारों को अस्पष्ट करने का काम करेगा। गांधी जो 'प्रयोगात्मक जीवन' जीते थे और जिन्होंने अपनी आत्मकथा को ''सत्य के साथ मेरा प्रयोग'' कहा था, उनके विचार कुछ हद तक हिंदू धर्म के समान हैं और अगर हम अधिक स्पष्ट रूप से कहे तो बौद्ध धर्म के और भी करीब हैं जो रूढ़िवादिता नहीं सिखाता। अगर हम गांधीवादी विचारों की बात करना चाहते हैं, तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह एक विशिष्ट राजनीतिक और सामाजिक पंथ के बजाय राजनीति और समाज के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण है। यह निश्चित सूत्र या निश्चित प्रणाली के बजाय विशेष नैतिक दृष्टिकोण है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि गांधी के विचार हमें आधुनिक जीवन की वर्तमान उहापोह से दूर होने और एक आदर्श भारत की कल्पना करने के लिए हमारा मार्गदर्शन नहीं कर सकते। यदि हम आधुनिक जीवन की वर्तमान उहापोह से बाहर निकलकर गांधी के भारत में प्रवेश करते हैं, तो हमें ऐसा भारत मिलेगा जहां हर नागरिक साक्षर हो और जहां शांति और सद्भाव हो। ऐसा भारत हिंसा, आतंकवाद, भूख, जातिवाद और पीड़ा से मुक्त होगा। यह करूणा, शांति और खुशी से भरा होगा। गांधी के भारत में हर प्रकार के काम का सम्मान किया जाएगा और स्वच्छता और स्वच्छता के उच्चतम मानकों को बनाए रखा जाएगा। गांधी के भारत में कोई भी सच बोलने से नहीं डरेगा और जहाँ भ्रष्टाचार नहीं होगा। यह एक ऐसा देश होगा जहाँ महिलाओं का सम्मान होगा और सभी धर्मों के लोग सह-अस्तित्व में होंगे।

प्रश्न: गांधी पर एक संदेह यह किया जाता है कि उन्होंने अपने अपने समय के पूँजीपतियों का सहयोग लिया था। आजादी के बाद एक समूह के तौर पर यही लोग देश के विकास की दिशा तय करने लगे। गांधी और पूँजीपतियों के इस संबंध और उसके फलितार्थों पर आपका क्या कहना है।

उत्तर: इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि गांधी को अपने समय के पूँजीपति वर्ग से मदद मिली थी। इस प्रश्न का एक मानक उत्तर यह है कि यह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की मजबूरी थी जिसके निर्विवाद नेता गांधी थे जिसने उन्हें भारतीय पूँजीपति वर्ग से धन स्वीकार करने के लिए मजबूर किया। इस बात से भी कोई इंकार नहीं कर सकता है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, किसी भी चीज से ऊपर, राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए एक आंदोलन था। इसे विभिन्न समूहों और हितों को लामबंद करना था। विवादास्पद मुद्दों से बचना आवश्यक था जो लोगों को विभाजित कर सकते थे। यह भी जोड़ा जा सकता है कि हालांकि यह सच है कि गांधी को भारतीय पूँजीपति वर्ग के धन जरूरत थी और उन्होंने भारतीय पूँजीपति वर्ग से धन स्वीकार किया, इस बात का कोई सबूत नहीं है कि इन पूँजीपति वर्ग ने किसी भी तरह से गांधी की राजनीति और दर्शन को प्रभावित किया। यद्यपि यह सही व्याख्या है, यह इस प्रश्न का पूर्ण उत्तर नहीं है। गांधी ने अपने संघर्ष में कई भारतीय पूँजीपतियों को इसलिए भी शामिल किया क्योंकि वह जीवन की एकता में दृढ़ विश्वास रखते थे (वर्ग सहयोग, न कि वर्ग संघर्ष उनका उद्देश्य था) और वह भारतीय पूँजीपतियों का दृष्टिकोण श्रमिक वर्ग के प्रति बदलने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन हमें यह भी स्वीकार करने की आवश्यकता है कि गांधी अपने प्रयास में सफल नहीं हुये और गांधी और भारत के पूँजीपति वर्ग के बीच संबंधों के समकालीन निहितार्थ बहुत वांछनीय नहीं हैं।

प्रश्न: आज विज्ञान और टेक्नोलॉजी के बल पर हम जहाँ पहुँचे हैं क्या वहाँ से गाँधी के हिंद स्वराज की ओर लौटना एक विचलन माना जाएगा?

उत्तर: यह भी गलत धारणा है कि गांधी विज्ञान और प्रौद्योगिकी के खिलाफ थे और उनका हिंद स्वराज अतीत में वापस जाने की दलील थी। हिंद स्वराज के बारे में 1939 में गांधी ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा, ''उस अविश्वसनीय रूप से सरल पुस्तिका को समझने की कुंजी यह महसूस करना है कि यह तथाकथित अज्ञानी अंधकार युग में वापस जाने का प्रयास नहीं है।'' विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रति गांधी का रवैया, हालांकि आलोचनात्मक है, पूरी तरह से नकारात्मक नहीं है। अपनी आलोचना में, गांधी ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर एक व्यापक अभियोग लगाया कि वे मूल रूप से भौतिक सुख-सुविधाओं और लाभों के प्रदाता हैं जो भारी और अक्सर छिपी भयानक लागत के साथ आते हैं। वह चाहते थे कि हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी की सफलताओं का आकलन मानव जीवन पर इसके समग्र रूप से पढ़ने वाले प्रभाव के आधार पर करें । वह नहीं मानते थे कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी केवल आकस्मिक ऐतिहासिक स्थिति है। उन्होंने उन्हें मानव समाज की एक स्थायी या अपरिहार्य विशेषता के रूप में स्वीकार किया और वे जानते थे कि वे यहाँ रहने के लिए हैं। लेकिन वह हमें चेतावनी देते हैं कि हमें केवल भौतिक सुख-सुविधाओं और विज्ञान और प्रौद्योगिकी से मिलने वाले लाभों को ही इसकी सफलताओं को आंकने का आधार नहीं बनाना चाहिए। उन्होंने हमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी की सफलता को मानव जीवन के हर पहलू पर इसके प्रभावों से आंकने और मानव जीवन के हर पहलू में इसके हस्तक्षेप पर एक सचेत और विवेकपूर्ण जाँच करने के लिए कहा। इस दृष्टि से गांधी के हिंद स्वराज की ओर लौटने केअ ाहवानक ेउ सस् थानस ेि वचलनन हींम ानाज ास कताज हाँअ ाजह मप हुँचेह ैि वज्ञानअ ैर प्रौद्योगिकी के बल पर, परन्तु इसे हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण और बहुत जरूरी हस्तक्षेप के रूप में देखा जाना चाहिए।

जयशंकर प्रसाद कविताएँ

आह ! वेदना मिली विदाई

आह ! वेदना मिली विदाई
मैंने भ्रमवश जीवन संचित,
मधुकरियों की भीख लुटाई

छलछल थे संध्या के श्रमकण
आँसू-से गिरते थे प्रतिक्षण
मेरी यात्रा पर लेती थी
नीरवता अनंत अँगड़ाई

श्रमित स्वप्न की मधुमाया में
गहन-विपिन की तरु छाया में
पथिक उनींदी श्रुति में किसने
यह विहाग की तान उठाई

लगी सतृष्ण दीठ थी सबकी
रही बचाए फिरती कब की
मेरी आशा आह ! बावली
तूने खो दी सकल कमाई

चढ़कर मेरे जीवन-रथ पर
प्रलय चल रहा अपने पथ पर
मैंने निज दुर्बल पद-बल पर
उससे हारी-होड़ लगाई

लौटा लो यह अपनी थाती
मेरी करुणा हा-हा खाती
विश्व! न सँभलेगी यह मुझसे
इसने मन की लाज गँवाई

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ हैं - बढ़े चलो बढ़े चलो
असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के रुको न शूर साहसी
अराति सैन्य सिंधु में, सुबाड़वाग्नि से जलो
प्रवीर हो जयी बनो - बढ़े चलो बढ़े चलो

कामायनी चिंता सर्ग
भाग -1

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर,
बैठ शिला की शीतल छाँह
एक पुरुष, भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह ।

नीचे जल था ऊपर हिम था,
एक तरल था एक सघन,
एक तत्व की ही प्रधानता
कहो उसे जड़ या चेतन ।

दूर दूर तक विस्तृत था हिम
स्तब्धा उसी के हृदय समान,
नीरवता-सी शिला-चरण से
टकराता फिरता पवमान ।

तरूण तपस्वी-सा वह बैठा
साधन करता सुर-श्मशान,
नीचे प्रलय सिंधु लहरों का
होता था सकरूण अवसान।

उसी तपस्वी-से लंबे थे
उसी तपस्वी-से लंबे थे
देवदारू दो चार खड़े,
हुए हिम-धावल, जैसे पत्थर
बनकर ठिठुरे रहे अड़े।

अवयव की दृढ मांस-पेशियाँ,
ऊर्जस्वित था वीर्य्य अपार,
स्फीत शिरायें, स्वस्थ रक्त का
होता था जिनमें संचार।

चिंता-कातर वदन हो रहा
पौरूष जिसमें ओत-प्रोत,
उधार उपेक्षामय यौवन का
बहता भीतर मधुमय स्रोत ।

बँधी महावट से नौका थी
सूखे में अब पड़ी रही,
उतर चला था वह जल-प्लावन,
और निकलने लगी मही।

निकल रही थी मर्म वेदना
करूणा विकल कहानी सी,
वहाँ अकेली प्रकृति सुन रही,
हँसती-सी पहचानी-सी।

ओ चिंता की पहली रेखा,
अरी विश्व-वन की व्याली,
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण
प्रथम कंप-सी मतवाली।

ते यभान की चाल बालिते
री ललाट की खलखेला
हरी-भरी-सी दौड़-धूप,
ओ जल-माया की चल-रेखा।

अब अक्सर चुप-चुप से रहे हैं

फिराक गोरखपुरी

अब अक्सर चुप-चुप से रहे हैं
यूँ ही कभी लब खोले हैं
पहले ''फिराक़'' को देखा होता
अब तो बहुत कम बोले हैं
दिन में हम को देखने वालो
अपने-अपने हैं औक़ात
जाओ न तुम इन खुश्क आँखों
पर हम रातों को रो ले हैं
फितरत मेरी इश्क़-ओ-मोहब्बत
क़िस्मत मेरी तन्हाई
कहने की नौबत ही न आई
हम भी किसू के हो ले हैं
बाग में वो ख़्वाब-आवर आलम
मौज-ए-सबा के इशारों पर
डाली डाली नौरस पत्ते
सहस सहज जब डोले हैं
ऊ वो लबों पर मौज-ए-तबस्सुम
जैसे करवटें लें कौंदें
हाय वो आलमे जुम्बिश-ए-मिजगाँ
जब फिल्ने पर तोले हैं
उन रातों को हरीम-ए-नाज का
इक आलम होये है नदीम
ख़ल्वत में वो नर्म उँगलियाँ
बंद-ए-क़बा जब खोले हैं
गम का फसाना सुनने वालो
आख़िर-ए-शब आराम करो
कल ये कहानी फिर छेड़ेंगे
हम भी जरा अब सो ले हैं
हम लोग अब तो अजनबी से हैं
कुछ तो बताओ
हाल-ए-''फिराक़'' अब तो
तुम्हीं को प्यार करे हैं
अब तो तुम्हीं से बोले हैं

हिदी बोलें पढ़ें, लिखें सब हिंदी को अपनाएँ

डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा 'गुणशेखर'

संस्कृत है वटवृक्ष राष्ट्र की फैली सरल जटाएँ
असमी, उड़िया, गुजराती औ मलयालम भाषाएँ
तमिल, तेलगू, कन्नड़, बांग्ला सुंदर-सी शाखाएँ
सब में मधु घोला है सारी अमृत ही बरसाएँ
इनको छोड़ पराई माई कैसे गले लगाएँ,
अपनी भाषा पढ़े, लिखे और उसको ही सरसाएँ।।

जहाँ किसी ने अपनी माँ का आदर नहीं किया है
कहो कहाँ पर गरल अयश का उसने नहीं पिया है
गौरव मिलता उसी वीर को जिसने माँ का मान किया
माँ की खातिर खुद को जिसने हँस-हँस के कुर्बान किया
अपनी माँ ठुकराकर कैसे गीत और के गाएँ?
हिंदी बोलें पढ़ें, लिखें सब हिंदी को अपनाएँ।।

अपनी आजादी की खातिर अपनी ही भाषाएँ
लड़ने वाले वीरों के हित करती रहीं दुआएँ
और बाँचती रहीं सदा ही उनकी अमर कथाएँ
अंग्रेजी ने कब आँकी हैं जन-मन की पीड़ाएँ
फिर क्यों इतनी ममता उससे, क्यों कर मोह दिखाएँ?
हिदी बोलें पढ़ें, लिखें सब हिंदी को अपनाएँ।।

अपनी सरिता का जल पीते, अपना अन्न उगाते
अपनी धरती का हर कोना फसलों से लहराते
अपनी भाषाएँ हैं अपनी परम पुनीत ऋचाएँ
अपनेपन की हो सकती हैं इनसे ही आशाएँ
अब तो और नहीं इंग्लिश की फैलें जटिल लताएँ।
हिंदी बोलें पढ़ें-लिखें सब हिंदी को अपनाएँ।।

संपर्क- ई-504, शृंगाल होम्स, डी मार्ट के सामने वी॰आई॰पी॰ रोड, अलथान सूरत

फोटो में गांधी

चित्रकारी

श्रीनिका
वर्गः सात (ए)
स्कूलः होली इनोसेंस पब्लिक स्कूल, विकास पुरी, दिल्ली

वसुधा चक्रवर्ती
तीनसुकिया, आसाम

मैं हूँ आज का गांधी

अशोक 'अंजुम'

पात्र– गांधी जी, नवयुवक (उम्र लगभग 16–17 वर्ष), दफ्तर का बाबू, बूढ़ा आदमी, डॉक्टर, नर्स, दो युवक; (एक्सीडेंट वाले), 5 तमाशबीन, एक्सीडेंट वाले युवक के पिता, मां, तथा अन्य भीड़भाड़ वाले लोग निर्देशक की सूझबूझ के अनुसार।

मंच पर अँधेरा है। शयनकक्ष का दृश्य। एक युवक सो रहा है। अचानक रोशनी के साथ गांधी जी प्रकट होते हैं।

गांधी जी – बच्चे! ऐ बच्चे! (युवक आंखें मलते हुए जागता है)

युवक – (आश्चर्य से) अरे बापू!! आप यहां... इस समय...!?

गांधी जी – हां बेटे! मैं गांधी... मोहनदास करमचद गांधी....

युवक – लेकिन बापू...आप... आप तो मर गए थे... आपको तो आपके किसी विरोधी ने गोली मार दी थी!

गांधी जी – हां बेटे! उस समय मेरा शरीर नष्ट हो गया था... लेकिन मुझे लगता है, मेरे विचार अभी तक जीवित हैं।

युवक – लेकिन बापू... इतने समय बाद आप यहां... मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा!

गांधी जी – हां बेटे! देश स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा है। तब मैंने ईश्वर से विशेष अनुरोध किया कि मैं अपने सपनों का भारत देखना चाहता हूँ।... प्रभु, मैं देखना चाहता हूँ कि मेरे रामराज की जो परिकल्पना थी, वह कहां तक पहुँची।... तब ईश्वर ने मुझे कुछ समय के लिए धरती पर मेरे प्यारे भारत को देखने के लिए भेज दिया है।

युवक – तो क्या बापू... आप इतने वर्ष तक वहीं स्वर्ग–लोक में ही थे!?

गांधी जी – हां बेटे, ईश्वर ने मुझे वहां अनेक कार्य सौंप रखे थे... उन कार्यों के कारण पता ही नहीं चला कि कब इतने साल बीत गए!

युवक – तब आपका मेरे पास ही आने का क्या कारण रहा बापू?

गांधी जी – बेटे! तुम नेक बच्चे हो... ईमानदार हो... कभी झूठ नहीं बोलते... अपने सभी काम स्वयं करते हो... परिश्रमी हो...! ... ईश्वर ने भारत भेजते समय यही कहा था कि ऐसा ही नवयुवक तुम्हें तुम्हारे भारत का दर्शन करा सकता है, जो तुम्हारे आदर्शों पर चलता हो।

युवक – (खुश होकर) सच बापू!? क्या आप...आप... मेरे साथ भारत–दर्शन करेंगे!!...वाह!! तब तो बहुत आनंद आएगा!

देश स्वतंत्रता का अमृत महोत्सवम नार हाह ै।त बम ैंने ईश्वर से विशेष अनुरोध किया कि मैं अपने सपनों का भारत देखना चाहता हूँ।... प्रभु, मैं देखना चाहता हूँ कि मेरे रामराज की जो परिकल्पना थी, वह कहां तक पहुँची।... तब ईश्वर ने मुझे कुछ समय के लिए धरती पर मेरे प्यारे भारत को देखने के लिए भेज दिया है।

गांधी जी – जी बेटे!...और हां, हमें कोई देख नहीं सकेगा...जबकिह मप लकझ पकतेह ेक हींभ् ीअ ा–जा सकेंगे!

युवक – अरे वाह! सचमुच बापू!!?

गांधी जी – हां बेटे! हां,...तो फिर चलें बेटे?

युवक – जी बापू! (बहुत खुश होते हुए ताली बजाता है।)

(मंच पर सन्नाटा... धीरे–धीरे अँधेरा...)

मंच पर रोशनी होते ही शोरगुल के बीच गांधी जी और युवक मंच पर प्रकट होते हैं।

गांधी जी – हे राम!... इतनी भीड़!!... इतनी भागम भाग!!...ब ेटे,य ेत ुमम ुझेक हांल ेअ ाएह ो?...ह ालांकि जगह तो कुछ–कुछ जानी–पहचानी लग रही है!

युवक – ये देश की राजधानी दिल्ली है बापू! मैंने सोचा, सबसे पहले आपको दिल्ली के ही दर्शन करा दूँ।

गांधी जी –(आश्चर्यस ेf दल्ली!!...इ सकात ो एकदम रंग–रूप ही बदल गया है!

युवक – इसका ही नहीं बापू , देश के हर शहर का लगभग ऐसा ही हाल है।

गांधी जी – (आश्चर्य से) अच्छा!!

युवक – आइए बापू! कहीं और चलते हैं।

(अँधेरा/दृश्य–परिवर्तन)

(मंच पर एक तरफ मुसलमानों का समूह तो दूसरी ओर हिंदुओं का समूह... लगता है दोनों तरफ एक–दूसरे से लड़ने की तैयारी चल रही है।)

गांधी जी – अरे बेटे! ये क्या हो रहा है!!?.. ऐसा लग रहा है जैसे ये दोनों एक दूसरे को मरने–मारने पर उतारू हैं!?

युवक – अरे बापू, ये दोनों कौम तो जैसे एक–दूसरे पर कीचड़ उछालने और लड़ने–झगड़ने के लिए ही बनी हैं।

गांधी जी – ओह!! (दु:खी होकर) मेरा पूरा जीवन इन दोनों को समझाते–समझाते निकल गया... कितना समझाया कि हम सब एक ही ईश्वर की संतान हैं। मेरा तो प्रार्थना गीत ही था– ईश्वर अल्लाह तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान।

(नेपथ्य से राम–धुन बजती है।)

युवक – इनको समझ मिल नहीं पायी बापू!... वैसे.. .इस लड़ाई–झगड़े को आम हिंदू और मुसलमान बिल्कुल नहीं चाहते लेकिन इन दोनों कौम के नेता, इनके अंदर जहर भर–भरकर...इन्हें आपस में लड़ा–लड़ाकर अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं।

गांधी जी – अरे, तुम तो बहुत होशियार हो! बहुत बड़ी–बड़ी बातें कर लेते हो... शाबाश!!... सच कहा तुमने.. इन तथाकथित धार्मिक नेताओं के आगे मेरे प्रयास भी बेकार चले गए थे, और न चाहते हुए भी देश का बँटवारा हो गया था।

(तभी धुएँ का बादल–सा उठता है। ट्रैफिक और मशीनों का शोर सुनाई देता है। गांधीजी तथा बच्चे की खांसते–खांसते सांस घुटने लगती है।)

गांधी जी – (घुटी–घुटी आवाज में) ये कैसा धुआं है बेटे!!?

युवक – हम इंडस्ट्रियल एरिया में आ गए हैं बापू। ये चिमनियों से उठने वाला धुआं है... कारखानों से मशीनों की आवाज आ रही है...साथ ही साथ ट्रैफिक की आवाज और धुआं भी है!

गांधी जी – ओह!... मैं समझ रहा था कि बादल छा रहे हैं, शायद बरसात होने वाली है।...लेकिन ये...ये चिमनियांत ेज हरउ गलर हीह ैंस ड़कोंप रव ाहनोंक ा इतना भारी शोर–शराबा...धुआं!!

युवक – बापू,.. इन फैक्ट्रियों और ट्रैफिक के धुएँ ने ऐसा कहर ढाया है कि शहरों में तो सांस लेने वाली हवा ही विषैली हो गई है। भारत में ही प्रतिवर्ष लाखों लोग इस धुएँ के ि शकारह ोकरप ेफड़ोंअ ादिक ीत मामब ीमारियोंक े कारण असमय मर जाते हैं।

गांधी जी – हे राम!...ये तो बहुत भयावह स्थिति है.. .इन्हीं सब कारणों से देश की आजादी के समय मैं चाहता थाि कक ुटीरउ द्योग–धंधोंक ेब ढ़ावाि मले...ग ांवोंक ा विकास हो... वहां खुशहाली आए... हमारा पर्यावरण सुरक्षित रहे!

युवक – बापू! आजादी के बाद से गांव के लोग खुद

शहरों की ओर भाग रहे हैं... नई पीढ़ी गांव से पलायन कर रही है।

गांधीज ी- अरे, इससे तो देश की सूरत बिल्कुल ही बिगड़ जाएगी! मेरा प्यारा ग्राम प्रधान देश.. .कृषि प्रधान देश...ऐसे तो इसका नक्शा ही बदल जाएगा ...।

युवक - बदल नहीं जाएगा बापू... बदल गया है!... गांव के युवक पढ़-लिखकर शहर में नौकरी की तलाश में निकल पड़ते हैं... खेती कोई नहीं करना चाहता!

गांधी जी - ओह नौकरी!... अर्थात् दूसरों की गुलामी!!... जबकि मैं चाहता था सभी स्वावलंबी बनें... स्वयं अपने पैरों पर खड़े हो सकें!

युवक - आजादी के बाद हमारेद`शक ीस बसेब ड़ीस मस्या क्या है बापू... पता है आपको !?

गांधी जी - क्या!?... मैं कैसे जानूँगा..? तुम ही बताओ!

युवक - नहीं बापू...मैं बताऊँगा नहीं...आपको उसके एक-दो नमूने दिखाऊँगा!... देखेंगे!?

गांधी जी - हां-हां... दिखाओ!

युवक - देख भी पाओगे बापू...!?

गांधी जी - जब इतना सब देख लिया, तो फिर वह भी देख ही लूँगा!

युवक - अच्छा!!... चलो फिर!

(अँधेरा/दृश्य परिवर्तन)

(सरकारी दफ्तर का दृश्य)

बूढ़ा आदमी- (गिड़गिड़ाते हुए) बाबूजी... मैं कई महीना ते चक्कर लगाय रह्यो हूँ... मेरौ गामहु इहां ते दस-ग्यारह कोस दूर होयगो... भौत परेसानी होतै साब!!

बाबू - तो.... (मुँह में गुटखा लगा हुआ है।)

बूढ़ा आदमी -.... मेरी पिनसन कौ काम है जातो... तौ बड़ी मेहरबानी होती बाबूजी... भूखन मरिबे की नौबत आय गई है...

बाबू – देखो रामप्रसाद! मैं तुम्हें पहले भी कह चुका हूँ कि ये सरकारी काम है... इसमें टाइम लगता है... एक-एक कागज पर दस-दस अधिकारियों के साइन होते हैं...

बूढ़ा आदमी – कैसेऊ करिके जे काम करा देओ साब... जीते जी आपकौ अहसान नाय भूलूंगौ...

बाबू – (धीमे स्वर में) देखो भाई, आजकल बिना लिए-दिए कुछ काम नहीं होता... तुमसे पहले भी कहा था... इशारा भी किया था....लेकिन तुम्हारी समझ में ही नहीं आया!

बूढ़ा आदमी – (रोआंसा होकर) ठीक है साब... जैसौ तुम सही समझौ... बस पिनसन कौ काम कराय देऊ...

अब जे हाथ-पांय थक गए हैं...इनते कछू होत नाय अब....

बाबू – तो ठीक है फिर...कल अपनी दो बीघा जमीन के कागज लेते आना...

बूढ़ा आदमी – (उदास स्वर में) जी साब... बड़ी म्हैरबानी...

(अँधेरा...)

मंच पर युवक व गांधी जी प्रकट होते हैं

युवक – कुछ समझे बापू....!?

गांधी जी – तु..तुम ही बताओ जरा!

युवक – यह जो बूढ़ा आदमी है न, ये सरकारी पेंशन के लिए एक साल से इस सरकारी दफ्तर के चक्कर लगा रहा है। ... इसके पास दो बीघा जमीन है लेकिन बुढ़ापे के कारण अब इस पर खेती का काम नहीं हो पाता... इसका बेटा शहर में रिक्शा चलाकर अपना गुजारा करता है। उस जमीन को ये पेंशन बाबू हड़पना चाहता है, इसलिए जान-बूझकर इस बेचारे बूढ़े आदमी की पेंशन की फायल दबा रखी है...।

गांधी जी – (आश्चर्य और दुख से) दफ्तर के बड़े अधिकारी कुछ नहीं देखते, कहते?

युवक – सब मिले रहते हैं बापू... और ऐसा हाल इस दफ्तर का नहीं बल्कि, लगभग सभी सरकारी दफ्तरों का है...।

जनता के अधिकार को जनता तक पहुँचने के बीच में भ्रष्टाचार की बहुत बड़ी नदी बह रही है बापू...जिसे सब

को तैरकर पार करना पड़ता है... तमाम लोग बीच में ही डूब जाते हैं... चलो कुछ और दिखाता हूँ आपको...

(गांधीजी मूर्तिवत कुछ सोच में डूबे हुए हैं।)

युवक – बापू... बापू... (पकड़कर हिलाता है उन्हें। गांधीजी जैसे नींद से जागते हैं।)

गांधी जी – हां... हां... चलो...!

(मंच पर अँधेरा।)

(एक अन्य लघु दृश्य)

मंच पर विपरीत दिशा से आते हुए दो बाइक सवारों का एक्सीडेंट.... दोनों गिरकर तड़पने लगते हैं ....भीड़ जुट जाती है... शोर-शराबा होने लगता है...

पहला व्यक्ति – अरे कैसे भी इन्हें जल्दी अस्पताल पहुँचाओ! (कहते हुए मोबाइल निकालकर वीडियो बनाने लगता है।)

दूसरा व्यक्ति – (वीडियो बनाते हुए)... बहुत खून बह रहा है....अगर जल्दी अस्पताल नहीं पहुँचे तो ये बच नहीं पाएँगे.

तीसरा व्यक्ति – (वीडियो बनाते हुए) किसी भले घर के लड़के लगते हैं....

चौथा व्यक्ति – (वीडियो बनाते हुए) ये नये लड़के गाड़ी चलाते भी अंधाधुंध हैं....

पांचवा व्यक्ति – (वीडियो बनाते हुए) एक ने तो हेलमेट भी नहीं पहना है... सिर से बहुत खून निकल रहा है...

(तभी एंबुलेंस की आवाज आती है...!)

मंच पर अँधेरा

(अस्पताल का दृश्य)

डॉक्टर – (घबराए और सिसकते हुए मां-बाप से) देखिए खून बहुत बह चुका है...हालत गंभीर है...आप फौरन पांच लाख कैश काउंटर पर जमा कराइए... हेड

इंजरी है... ऑपरेशन करना पड़ेगा..।

पिता – (सिसकते हुए) कंपाउंडर के बताने पर बड़ा बेटा पैसों का इंतजाम करने गया है... आप आपरेशन की तैयारी कीजिए डॉक्टर साहब...।

डॉक्टर – ठीक है... तब तक हम तैयारी शुरू करते हैं... लेकिन आप जल्दी से जल्दी पैसों का इंतजाम कर लें!

पिता – जी.. जी...

(सिसकता हुआ बाहर की तरफ तेजी से लड़खड़ाता हुआ-सा निकल जाता है । मां एक तरफ रोते-रोते लुढ़क जाती है।... तभी हड़बड़ाती हुई नर्स आती है और डॉक्टर को एक तरफ ले जाकर धीमे से फुसफुसाती है।)

नर्स – डॉक्टर साहब, वह एक्सीडेंट वाले केस का लड़का....

डॉक्टर – (धीमे से...) हां, क्या हुआ उसे..

नर्स – ही इज नो मोर.. मर चुका है वह...

डॉक्टर – (फुसफुसाते हुए) धीरे से बोलो... उसके साथ वाले लोगों को पता नहीं चलना चाहिए.. पैसे जमा हो जाएँ तो....

नर्स – जी... जी....समझ गई डॉक्टर साहब!

(मंच पर अँधेरा....!)

(गांधी जी और युवक मंच पर प्रकट होते हैं। गांधीजी बहुत दुखी नजर आते हैं।)

गांधी जी – ये आज के इंसान को हो क्या गया है... ये डॉक्टर... जिन्हें धरती का भगवान कहा जाता है... ये लाशों का व्यापार करने लगे हैं...।

युवक – क्या नेता, क्या अधिकारी, क्या डॉक्टर, क्या शिक्षक, क्या इंजीनियर, क्या ठेकेदार, क्या पुलिस विभाग के लोग.... किस-किस का नाम लूँ बापू... पूरा देश पैसों की अंधी दौड़ में लगा हुआ है बापू... हमारी गौरवमयी संस्कृति आज छिन्न-भिन्न हो रही है...।

गांधी जी – (बेहद दुख के साथ) क्या यही है... यही है मेरे सपनों का भारत... नहीं... ये.. ये.. मैं कहीं और आ गया हूं... ये मेरा भारत नहीं... नहीं है ये मेरा भारत... (यह कहते हुए धम्म से बैठ जाते हैं।)

युवक– (उठाते हुए) उठिए... उठिए बापू..

गांधी जी – नहीं बेटे... मैं अब मरती हुई मानवता के पुनर्जीवन के लिए आमरण अनशन पर बैठ रहा हूं!

युवक – अरे बापू.. ये..ये... क्या बापू.. !

गांधी जी – तुम घर लौट जाओ बेटे! मैं.. मैं... अब यहीं आमरण अनशन करूँगा!

अँधेरा...

तभी तीन गोलियों की आवाज...

गांधी जी की 'हे राम!' की आवाज...

युवक नींद से हड़बड़ा कर जागता है।

युवक – (स्वगत कथन) ओह! कैसा सपना था... कितना अजीब सपना... लेकिन... कितना सच.. यथार्थ... वाकई,

गांधीजी के रामराज के सपने देश की आजादी के बाद रोज-रोज ही टूटे हैं.. निरंतर टूट रहे हैं... लेकिन अब

बस!!... मेरे जैसी नई पीढ़ी को...आज के भारत की युवा शक्ति को...संकल्प लेना ही होगा... नये भारत के निर्माण का... गांधी जी के सपनों के भारत का... जिसमें सभी सुखी हों.. कोई भूखा-नंगा न हो ... हर बीमार को बेहतर इलाज मिले... हर बेरोजगार को उचित काम मिले... मैं...मैंब नूँगाइ सन एभ ारतक ेभ ाविष्यक ा नर्माता...म ै इसके गौरव को वापस लाऊँगा... मैं... हां मैं... मैं हूँ आज का गांधी!!

एक बार फिर नेपथ्य से रामधुन बजती है...

रघुपति राघव राजा राम

पतित पावन सीताराम

ईश्वर अल्लाह तेरो नाम

सबको सन्मति दे भगवान

समाप्त

सम्पर्कः

संपादक अभिनव प्रयास (त्रैमा॰)

स्ट्री-2, चंद्र विहार कॉलनी (नगला डालचंद)

कारसी बाईपास, अलीगढ़ (उ॰प्र॰)-202002

मो॰ - 9258779744

रघु की विश

प्रगति त्रिपाठी

दादाजी अपना सामान पैक कर रहे थे। तभी रघु खेलते - खेलते वहाँ आ पहुँचा। उनको सामान पैक करते हुए देखकर वह बहुत दुखी हो गया।

''क्याह ुआर घु?' 'द ादाजीउ सकीम न:ि स्थतिस मझ गए।

''आप चले जाएंगे?''

''हां बेटा! कल मेरी वापसी की टिकट है।'' दादाजी बोले।

''आप मत जाइए ना! मैं फिर से अकेला हो जाऊंगा।''

''अरे बेटा! ऐसा क्यों कह रहे हो। मम्मी - पापा है ना!''

''मम्मी - पापा तो ऑफिस चले जाते हैं। रश्मि आंटी मेरे साथ नहीं खेलती, वो बस मोबाइल पर बातें करती रहती है।''

''अच्छा...चलो अब गणपति विसर्जन करने का समय हो गया है। पूजा करते हैं और फिर गणपति जी से अपनी विश मांगते हैं।''

''गन्नु जी से हम जो मांगेंगे, वो हमें मिल जाएगा दादाजी?''

''हां बेटे! भगवान बच्चों की विश जल्दी पूरी करते हैं।''

रघु की आंखें चमक उठी।

आंगन में रखे ड्रम में विधि - विधान से गणपति जी का विसर्जन किया गया। सभी ने उनके कान में अपनी विशेज कही।

तभी पापा के मोबाइल पर नोटीफिकेशन आया। जिस ट्रेन से दादाजी की वापसी थी वो कुछ कारणों से कैंसिल हो गई।

पापा के इतना कहते ही, रघु खुशी से चिल्ला उठा। मेरी विश पूरी हो गई।

सम्पर्क : बी-222, जी॰ आर॰सी॰ सुबिक्षा
एम॰ जी॰ रोड, बैंगलोर - 560099
मो॰-9902188600

एहसास जिम्मेदारी का

यातुषी इंदुरत्न

एक था कामू। वह अपने नाम के विपरीत कोई काम नहीं करता था। उसकी मां इस बात से परेशान रहती थी कि कामू कोई काम नहीं करता है। दिन भर निठल्ला पूरे गांव में घूमते रहता है। मां जब काम के लिए कहती तो हंस कर टाल देता। कहता ''अभी तो मेरे खेलने-खाने के दिन हैं। जब जिम्मेदारी आएगी तो काम कर लूंगा।''

पढ़ाई करने जाता तो स्कूल छोड़कर छोटे-छोटे बच्चों के साथ गिल्ली-डंडा, छुपा-छुपाई खेलने लगता, कभी पेड़ पर चढ़कर आम-अमरूद तोड़ता रहता।

मां जब डांटती तो कहता ''तुम चिंता मत करो सब ठीक हो जाएगा।''

मगर मां को यह चिंता सताती कि 'अभी इसे नहीं सुधारा तो यह कभी नहीं सुधरेगा। आखिर पिता की संपत्ति से कब तक उसकी जीविका चलेगी? मेरे बाद उसका क्या होगा?' सोच-सोचकर परेशान होती रहती।

धीरे-धीरे कामू बड़ा होने लगा। मगर अभी भी उसमें जिम्मेदारी नामक चीज नहीं आई थी। उसकी मां ने सोचा अगर उसकी शादी हो जाए, तो शायद वह अपनी पत्नी के लिए कमाने लगेगा और जिम्मेदार बन जाएगा।

सुशीला नामक सुशील कन्या से उसकी शादी हो गई। परंतु कोई फायदा नहीं हुआ। अभी भी वह गैर जिम्मेदार ही था। वह कोई काम नहीं करता, इधर-उधर घूमता रहता और घर आकर खाना खाता और सो जाता।

मां जब भी कामू को खाना परोसती कहती ''लो ठंडी रोटी खा लो।''

कामू को यह बात समझ में नहीं आती कि मां ऐसा क्यों कहती है?

एक दिन मां दूसरे गांव जा रही थी। उसने सुशीला से कहा-''मैं किसी काम से दूसरे गांव जा रही हूं। आने में अगर देर हो जाए तो तुम कामू को खाना खिला देना। और हां! खाना परोसते वक्त यह कहना मत भूलना 'ठंडी रोटी खा लो'।''

शाम को जब सुशीला ने कामू को खाना दिया तो मां के कहने के अनुसार ही किया और कहा - ''ठंडी रोटी खा लो।''

यह सुनकर कामू गुस्से में बोला -''जाओ मैं खाना नहीं खाऊंगा। रोटियां तो गरमा-गरम हैं फिर तुम कह रही हो 'ठंडी रोटी खा लो'। जब तक तुम नहीं बताओगी मैं खाना नहीं खाऊंगा।''

तब सुशीला ने कहा - ''मुझे नहीं मालूम इसका क्या मतलब होता है। ऐसा कहने के लिए मां ने ही कहा था। इसका मतलब मांजी ही बता सकती हैं।आप खाना खा लीजिए। मां जब आएंगी उनसे पूछ लीजिएगा।''

कामू बोला- ''जब तक मैं इसका अर्थ नहीं जान लूंगा, तब तक खाना नहीं खाऊंगा।''

दूसरे दिन सुबह जब मां घर आई तो उसने आते ही सुशीला से पूछा-''कामू को खाना खिला दिया था।''

सुशीला बोली -''उन्होंने खाना खाने से मना कर दिया। जैसे ही मैंने उन्हें कहा ठंडी रोटी खा लो, वैसे ही वे आग-बबूला हो गए। उन्होंने गुस्साते हुए कहा 'पहले प्रतिदिन मां ऐसा कहा करती थी और अब तुम भी यही सब कहने लगी'।''

मां ने कामू से पूछा–''बेटा तुमने खाना क्यों नहीं खाया? आखिर कब तक भूखे रहोगे...?''

''खाना नहीं खाने से तुम्हारा स्वास्थ्य खराब हो जाएगा, तुम बीमार पड़ जाओगे। चलो मैं तुम्हें अपने हाथों से ठंडी रोटी खिलाती हूं..।''

कामू ने मुंह बिजकाते हूए कहा–''मां पहले तो तुम ही मुझसे कहती थी कि

'ठंडी रोटी खा लो', अब सुशीला को भी सिखा दिया है। उसने भी कहना शुरू कर दिया है कि 'ठंडी रोटी खा लो'। जब तक तुम मुझे नहीं बताओगी कि तुम ऐसा क्यों कहती हो तब तक मैं खाना नहीं खाऊंगा। आज मैं इस रहस्य से पर्दाउ ठाक रह ीर हूंगा'।त ुमम ुझे बतलाओ तुम ऐसा क्यों कहती हो? क्या यह मैं नहीं जानता कि ठंडी रोटी का मतलब बासी रोटी होता है। सुबह की रोटी रात और रात की रोटी सुबह खाना।''

मां यह बातें सुनकर खिलखिला कर हंस पड़ी और उसे गले लगाते हुए बोली–''यही तो मैं तुम्हें समझाना चाहती हूं कि तुम जो खानाख ातेह ेव हत ुम्हारें पताद्व राक माएग एध नस` आता है। जिस दिन तुम अपने द्वारा कमाए गए पैसे लाओगे तब वह तुम्हारी कमाई की रोटी और ताजी रोटी होगी।''

कामू को बात समझ में आ गई। उसने कहा–''आज के बाद मैं मेहनत कर अपने द्वारा कमाए हुए पैसों की रोटी खाऊंगा और आप सबको खिलाऊंगा'। मैं खूब मेहनती बनूंगा और एक दिन अपने परिवार का नाम रौशन करूंगा।''

मां ने उसे गले लगाते हुए कहा – 'शाबाश! बेटा मैं भी तो यही चाहती थी कि तुम अपनी जिम्मेदारी को समझो औरअ पनीग ैर जिम्मेदारानाह रकतब ंदक रद ो।म ैंब हुत खुश हूं कि तुम्हें अपनी जिम्मेदारी का एहसास हो गया और मैं अपने मकसद में कामयाब हुई।''

(छात्र – वर्ग बारहवीं, बाल विद्या निकेतन स्कूल, पटना)

सम्पर्कः संजय गांधी नगर रोड,
हनुमान नगर, पटना–800026
मो॰– 8210781949

भूमि बैंक

आशा शर्मा

चिन्नी गिलहरी यूं तो बहुत होशियार है लेकिन इस बार जो हुआ उसे उसका तेज दिमाग भी पकड़ नहीं पा रहा। पिछले दिनों उसके बहुत मेहनत से जमा किए हुए मूंगफली के दाने जो उसने नीम के नीचे छिपाए थे, वे अचानक गायब हो गए।

चिन्नी ने बहुत तलाश किया लेकिन उसे दाने तो क्या दानों के छिलके तक नहीं मिले। चिन्नी बहुत उदास हो गई। बारिशें शुरू होने वाली हैं और उसका जमा भोजन चोरी हो गया। नया जमा करने में तो बहुत समय लग जायेगा और भोजन के बिना बरसात का मौसम कैसे निकलेगा?

''चोर को क्या मालूम कि अनाज मंडी में खड़े बड़े-बड़े ट्रकों के टायर और मनुष्यों के पैरों से बचते बचाते किस मुश्किल से थोड़े से दाने जमा कर पाई थी।'' याद करती चिन्नी बहुत दुखी हो रही थी लेकिन कोई उपाय न देखकर वह फिर से भोजन की तलाश में निकल गई।

चिन्नी जिस पेड़ पर रहती है वह एक अनाज मंडी कीद ीवारक ेप ासल गाह ुआन ीमक ि वशालप ेड़ह ै। दीवार के दूसरी तरफ एक आवासीय कॉलोनी बनी हुई है जिसके एक बंगले के पिछवाड़े यह पेड़ लगा हुआ है। नीम की कुछ डालियां दीवार के पार अनाज मंडी की तरफ भी झुकी हुई हैं। चिन्नी इन्हीं डालियों के सहारे दीवार फांद कर अनाज मंडी में जाती है और वहां से मूंगफलियों के दाने बटोर कर लाती है। कभी-कभी दूसरे अन्य अनाज के दाने भी। कुछ दाने वह खा लेती है और शेष नीम के नीचे मिट्टी में दबा देती है ताकि बरसात के दिनों में खा सके।

यह बंगला कई महीनों से खाली पड़ा था लेकिन इन दिनों यहां चहल पहल दिखाई दे रही है। शायद कोई परिवार यहां रखने के लिए आया है। कुछ दिन पहले चिन्नी ने यहां एक छोटे बच्चे को देखा था जो अपने दोस्तों के साथ नीम के नीचे खेल रहा था।

''जरूर इन्हीं लोगों ने मेरे दाने चुराए हैं। शैतान कहीं के।''चिन्नी ने एक दिन वहां मूंगफली के छिलके देखे तो उसे शक हुआ। अब चिन्नी बच्चों पर नजर रखने लगी।

कुछ दिन बाद उसने देखा कि बच्चों ने थोड़ी सी जमीन को साफ करके उसमें क्यारियां सी बना ली। शायद उनमें बीज भी रोप दिए थे क्योंकि सप्ताह भर बाद उन क्यारियों में छोटे-छोटे अंकुर दिखाई दे रहे थे और महीने भर में तो वे क्यारियां एकदम हरीभरी होकर हवा के साथ झूमने लगी थी।

इधर बारिशे भी शुरू हो गई इसलिए चिन्नी पेड़ से नीचे कम ही उतरती। वह ऊपर से ही नीचे की गतिविधियां देखती रहती।

बच्चे अब चिन्नी को अच्छे लगने लगे थे क्योंकि आजकल वे पेड़ के नीचे जरा पक्की सी जमीन पर अनाज के दाने बिखरने लगे थे जिससे बहुत से पक्षी वहां जमा होने लगे थे। एक पानी से भरा बर्तन भी उन्होंने पेड़ पर लटका दिया था। बच्चों की इस व्यवस्था को देखकर चिन्नी जैसे कई पक्षियों और जंतुओं का बरसात का मौसम बड़े मजे में बीत रहा था। अब तो चिन्नी अपने चुराए दाने भी भूल गई।

बारिश का मौसम बीत गया। चिन्नी मौज से वापस इधर-उधर फुदकने लगी। उसने देखा कि बच्चों की लगाई हुई क्यारी में पौधों के पत्ते पीले पड़ने लगे थे।

''ये क्या? न फूल लगे ना फल और सूखने भी लगी। ये कैसी फसल थी?'' चिन्नी ने सोचा। उसे बच्चों की मेहनत बर्बाद होते देखकर अच्छा नहीं लग रहा था।

एक छुट्टी वाले दिन की सुबह बच्चे अपने हाथों में

घास खोदने वाली छोटी-छोटी खुरपियां लेकर क्यारियों के पास आए। चिन्नी भी पास जाकर उत्सुकता से उन्हें देखने लगी। अब उसे इंसानों से भय नहीं लगता। वे उसके दोस्त जो बन गए थे।

बच्चे बहुत सावधानी के साथ उन क्यारियों को खोदने लगे। अब चिन्नी ने जो देखा वह उसकी कल्पना से बाहर था। बच्चों ने जमीन खोदकर ढेर सारे मूंगफली के दाने निकाल लिए थे। तभी वहां बच्चे की मम्मी आ गई। वे भी बच्चों की मेहनत और उसके फल से बहुत खुश दिखाई दे रही थी।

''देखा तुम लोगों ने? किस तरह एक बीज से अनेक बीज बन जाते हैं।'' मम्मी ने उन्हें शाबाशी देते हुए कहा। चिन्नी भी तो यही देखकर आश्चर्यचकित थी।

''जैसे बैंक में जमा करवाने पर हमारी बचत बढ़ जाती हैं, वैसे ही ना मां?'' बच्चे ने पूछा। मां ने हंस कर हामी भरी।

''हाँ बच्चों, यह भूमि भी तो एक बैंक ही है जो हमारे डाले बीजों को कई गुणा करके हमें वापस लौटाती है।'' माँ ने उन्हें समझाया।

''हम इन मूंगफलियों का क्या करेंगे?'' एक दोस्त ने पूछा।

''हम ये सारी मूंगफलियां गिलहरियों और पक्षियों को खिला देंगे।'' बच्चे ने खुश होकर कहा तो चिन्नी पूंछ उठाकर उसे धन्यवाद देने लगी। बच्चे ने उसकी बचत को भूमि बैंक में जमा करवा कर उसे इतना लाभ जो पहुंचाया था।

सम्पर्क: इंजी. आशा शर्मा
A-123, करणी नगर (लालगढ़)
बीकानेर 334001
मो. 9413369571

गतिविधियाँ

संविधान दिवस समारोह

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा संविधान दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। गांधी दर्शन में आयोजित एक समारोह में निदेशक डॉ ज्वाला प्रसाद ने गांधी दर्शन राजघाट में स्टाफ सदस्यों को संकल्प दिलाया। इस अवसर पर हंसराज कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के डॉ खेम चंद अरोड़ा सम्मानित अतिथि थे।

गांधी स्मृति में शोध अधिकारी डॉ सौरव कुमार राय ने कर्मचारियों को संविधान का पालन करने का संकल्प दिलाया।

बाद में इस अवसर पर स्वच्छता अभियान भी आयोजित किया गया। समिति के सभी कर्मचारियों ने हिस्सा लिया।

टेकिंग गांधी टू स्कूल

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा बच्चों और युवा पीढ़ी को गांधीजी के जीवन मूल्यों से परिचित करवाने हेतु 'टेकिंग गांधी टू स्कूल' और 'टेकिंग गांधी तो यूथ' कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसके तहत दिल्ली और एनसीआर के विद्यार्थियों को गांधी दर्शन और गांधी स्मृति के संग्रहालयों का दौरा करवाया जा रहा है।

इसी कड़ी में डीएवी पब्लिक स्कूल, पुष्पांजलि एन्क्लेव के 91 बच्चों ने नौ शिक्षकों के साथ 1 दिसंबर, 2023 को गांधी स्मृति का दौरा किया और उन्हें गांधी स्मृति संग्रहालय का निर्देशित दौरा कराया गया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के शहीद भगत सिंह कॉलेज (मॉर्निंग) की अर्थशास्त्र सोसायटी के 60 छात्रों ने 29 नवंबर, 2023 को गांधी स्मृति का दौरा किया और गांधी स्मृतिस ंग्रहालयद ेखा।इ सय ात्राक ेद ौरानउ न्होंनेस मूह चर्चा भी की। दिल्ली विश्वविद्यालय के पीजीडीएवी कॉलेज इवनिंग के 40 छात्रों ने गांधी स्मृति का दौरा किया और उन्हें गांधी स्मृति संग्रहालय का निर्देशित दौरा कराया गया। छात्रों ने अपनी यात्रा के दौरान शहीद स्तंभ पर श्रद्धांजलि भी अर्पित की।

डीएवी पब्लिक स्कूल फरीदाबाद के सात शिक्षकों के साथ 188 बच्चों ने 28 नवंबर, 2023 को गांधी स्मृति का दौरा किया। उन्हें गांधी स्मृति संग्रहालय का अवलोकन स्थानीय गाइड द्वारा करवाया गया। उत्साहित बच्चों ने मल्टी मीडिया म्यूजियम का भी दौरा किया।

जैन साध्वी ने किये 'गांधी दर्शन'

गांधी दर्शन, राजघाट में 1 दिसंबर, 2023 को पूज्यनीय साध्वी अणिमाश्री जी पंहुची। उनके आगमन पर समिति के निदेशक डॉ ज्वाला प्रसाद ने अभिनन्दन किया। पूज्यनीय साध्वी अणिमाश्री जी ने गांधी दर्शन में विभिन्न प्रदर्शनी हॉलों का भी दौरा किया। इस यात्रा के दौरान उन्होंने राजघाट पर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि भी अर्पित की। साध्वी जी ने जैन धर्म में शांति और अहिंसा के विचारों पर केन्द्रित एक आध्यात्मिक सत्र को भी सम्बोधित किया।

विश्व दिव्यांग दिवस समारोह आयोजित

विश्व दिव्यांग दिवस के अवसर पर, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने सक्षम इंद्रप्रस्थ के सहयोग से समावेशी समाज पर कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में करीब 60 लोगों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर 'समावेशी समाज का मेरा दृष्टिकोण' विषय पर एक भाषण प्रतियोगिता और 'समावेशी समाज' विषय पर एक कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की विशिष्टता नौ वर्ष से लेकर पीएचडी कर रहे छात्रों तक की भागीदारी थी, जिनमें से सभी ने एक ऐसे समावेशी समाज के बारे में अपना दृष्टिकोण साझा किया जहां विकलांग व्यक्तियों और अन्य दोनों के लिए समान अवसर हों। सनवैली इंटरनेशनल स्कूल, वैशाली, गाजियाबाद की अहाना सिंह भाषण प्रतियोगिता में प्रथम रहीं, जबकि हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के विकास चौधरी कविता प्रतियोगिता के विजेता बने।

गाँधी विचार सभा आयोजित

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के माननीय उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल ने 4 दिसंबर, 2023 को गांधी स्मृति में रुमीडिया बिरादरी के साथ एक गांधी विचार सभा का आयोजन किया, जिसमें लगभग 130 लोगों ने संवाद सत्र में भाग लिया।

इस अवसर पर श्री गोयल ने कहा कि गाँधी स्मृति एक ऐतिहासिक स्थान है, जिसमें बने म्यूजियम का अधिक से अधिक लोगों को अवलोकन करना चाहिए।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

हमारे आकर्षण

गांधी स्मृति म्यूजियम (तीस जनवरी मार्ग)

* गांधी स्मृति म्यूजियम
* डॉल म्यूजियम
* शहीद स्तंभ
* मल्टीमीडिया प्रदर्शनी
* महात्मा गांधी के पदचिन्ह
* महात्मा गांधी का कक्ष
* महात्मा गांधी की प्रतिमा
* वर्ल्ड पीस गॉंग

गांधी दर्शन (राजघाट)

* गांधी दर्शन म्यूजियम
* चरखे मॉडल प्रदर्शनी
* गेस्ट हाउस और डॉरमेट्री (200 लोगों के लिये)
* सेमीनार हॉल (150 लोगों के लिये)
* कॉन्फ्रेंस हॉल (300 लोगों के लिये)
* प्रशिक्षण हॉल : (80 लोगों के लिये)
* ओपन थियेटर
* राष्ट्रीय स्वच्छता केन्द्र
* गेस्ट हाउस और डॉरमेट्री

(डॉ. ज्वाला प्रसाद)
निदेशक

प्रवेश निःशुल्क (प्रातः 10 बजे से सायः 6.30 बजे तक), सोमवार अवकाश
हॉल व कमरों की बुकिंग के लिये संपर्क करें– ईमेलः 2010gsds@gmail.com, 011-23392796

gdsnewdelhi www.gandhismriti.gov.in

RNI NO. DELHIN/2018/76242

''आप मुझे जो सजा देना चाहते हैं, उसे
कम कराने की भावना से मैं यह बयान नहीं
दे रहा हूँ। मुझे तो यही जता देना है कि
आज्ञा का अनादर करने में मेरा उद्देश्य कानून
द्वारा स्थापित सरकार का अपमान करना
नहीं है, बल्कि मेरा हृदय जिस अधिक बड़े
कानून से-अर्थात अन्तरात्मा की आवाज को
स्वीकार करता है, उसका अनुसरण करना ही
मेरा उद्देश्य है।''

(मोहनदास करमचंद गांधी)

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली
(एक स्वायत्त निकाय, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

प्रकाशक - मुद्रक : स्वामी गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के लिए पोहोजा प्रिंट सोल्यूशंस प्रा. लि., दिल्ली - 110092
से मुद्रित तथा गांधी दर्शन, राजघाट, नई दिल्ली-110092 से प्रकाशित।